सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

भारतीय प्रबंध संस्थान इन्दौर

ज्ञान शिखर

ग्यारहवाँ अंक – वर्ष 2026

EQUIS ACCREDITED

AACSB ACCREDITED

ASSOCIATION OF MBAS ACCREDITED

आईआईएम इन्दौर : एक झलक

उच्च गुणवत्ता वाली प्रबंधन शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने भारतीय प्रबंध संस्थान इन्दौर को उत्कृष्ट संस्थान के रूप में स्थापित किया है। ये संस्थान शिक्षण, अनुसंधान और उद्योगों के साथ संवाद के मामले में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों के समकक्ष, प्रमुख प्रबंधन संस्थानों के रूप में मान्यता प्राप्त है।

1996 में स्थापित, भारतीय प्रबंधन संस्थान इन्दौर (आईआईएम इन्दौर) प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है और उद्योग, सरकार और सार्वजनिक उपक्रमों के साथ समन्वय स्थापित करता रहा है। यह भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रवर्तित और पोषित है और भारतीय प्रबंधन संस्थान अधिनियम 2017 के अंतर्गत राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है।

एक मनोरम पहाड़ी के ऊपर स्थित, आईआईएम इन्दौर का 193 एकड़ का परिसर मननशील अध्ययन के लिए एक आदर्श परिवेश प्रदान करता है। आईआईएम इन्दौर में नवीनतम शिक्षण सामग्री, अध्ययन के समृद्ध संसाधन एक सुदृढ़ सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र, अत्याधुनिक खेल संकुल एवं छात्रावास के साथ–साथ समकालीन आधारभूत सुविधाएं भी हैं।

मिशन

आईआईएम इन्दौर सामाजिक रूप से जागरूक प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने वाले विश्व स्तरीय शैक्षिक मानकों के साथ एक प्रासंगिक बिजनेस स्कूल होना चाहता है। आईआईएम इन्दौर निम्न के लिए प्रतिबद्ध है:–

❖ प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता, अनुसंधान और प्रशिक्षण

❖ समकालीन भागीदार–केंद्रित शिक्षण और शिक्षण विधियों का प्रयोग

❖ प्रबंध शिक्षा के उभरते क्षेत्रों में उपस्थिति

लोगो

सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

संस्कृत शब्द सिद्धि मूलम् प्रबन्धनम् में, यह विश्वास निहित है कि, "सभी उपलब्धियों के मूल में प्रबंधन है"। यह चार खंडों में एक चक्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। सामूहिक रूप से ये एकल भाग दर्शाते हैं कि, प्रबंधन बहु–आयामी है एवं एकीकृत पूर्णता की रचना करता है। नीले रंग में खंड, वृत्त के तीन चतुर्थांश बनाते हैं जबकि बाहर खुला हुआ चौथा खंड, परिवर्तनीय परिवेश के लिए ग्रहणशीलता को दर्शाता है।

सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर

ग्यारहवाँ अंक वर्ष 2026–27

संरक्षक
प्रोफ़ेसर हिमांशु राय, निदेशक

मार्गदर्शक
कर्नल (डॉ.) गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (सेवानिवृत्त)
मुख्य अधिकारी प्रशासन

संपादक
जयनाथ यादव, हिंदी अधिकारी

सह–संपादक
राजेश कुमार श्रीवास्तव

पत्राचार का पता
संपादक
ज्ञान शिखर, राजभाषा अनुभाग
प्रबंध शिखर, भारतीय प्रबंध संस्थान इन्दौर
राऊ–पीथमपुर रोड, इन्दौर 453556 (म.प्र.)
दूरभाष 0731–2439629

EQUIS ACCREDITED   AACSB ACCREDITED   ASSOCIATION OF MBAS ACCREDITED

ज्ञान शिखर–2026

(ग्यारहवाँ संस्करण)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का शीर्षक	लेखक / लेखिका (सर्व श्री, श्रीमती, कुमारी, सुश्री)
1	टीन के डिब्बे का खजाना	राजेश श्रीवास्तव
2	जब वह मेरी राह चली	निशा राठौड़
3	भाषा सभ्यता की आत्मा	कर्नल (डॉ.) गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (पूर्व सैनिक)
4	भारतीय प्रबंध संस्थान इन्दौरः ज्ञान का शिखर	अभिषेक कोष्टी
5	2026 : संघर्ष मेरा...	आयुषी जैन
6	ऊँची उड़ान	अक्षिता श्रीवास्तव
7	बेटियों की उड़ान	काजल
8	हिंदी हमारी पहचान	दीपिका विश्वकर्मा
9	हिंदी भाषा और संस्कृति...	प्रभात रंजन पात्र
10	युद्ध की कीमत	आयुषी जैन
11	यदि तेज जाना है...	अनुष हातोदिया
12	क्या पैसा ही सब कुछ है?	अफसीन चोबदार
13	जीवन में वित्तीय प्रबंधन	अवनीश कुमार
14	मोर	श्रीमती कीर्ति श्रीवास
15	मेरा आँगन	संजय कुमार दाश
16	पर्यावरण संरक्षण...	गिरिजा कुमार
17	जलवायु परिवर्तन..	हेमंत सेठी
18	आउटसोर्सिंग : अवसर, सम्मान, शोषण	डॉ. कंचन विश्वकर्मा
19	बूंदें हैं अमृत समान	आरुषि चौधरी
20	ऐसे ही नहीं माँ कहलाती है	निर्मला सिसोदिया
21	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के परिणाम...	अनिल कौशल
22	लोक एवं जनजातीय कला...	सोनिया चौहान
23	फोमो : कुछ छूट जाने का डर	योगेश प्यासे
24	अद्वैत में द्वैत	प्रवाह शुक्ला
25	जीवन की यात्रा में निर्णयों का प्रभाव	अभिनव बर्वे
26	भारत में चीते की वापसी...	रुद्रांश सिंह परिहार
27	समाज का आईना : भारतीय फिल्में	प्रिंस भावे

28	परिवर्तन है अनमोल	श्याम राव
29	कृत्रिम बुद्धिमत्ता...	रिया जैन
30	प्रेम	पूजा शुक्ला
31	टाल–मटोल : एक बुरी आदत	मोहित रायकवार
32	असफलता : एक नई शुरुआत	रूपेश साहू
33	कृत्रिम बुद्धिमत्ता और समय प्रबंधन	चंचल अग्रवाल
34	भारतीय अर्थव्यवस्था में युद्ध की भूमिका	मानस परिहार
35	बेटी	अजय सिंह राठौड़
36	बोध कथा : संघर्ष बदले...	सतराम भाटिया
37	हॉकी : हमारा राष्ट्रीय खेल	शिवाजी खाडके
38	आधुनिकता के भँवर में हिंदी	सार्थक खोड़े
39	आयकर का नया कानून...	कमलेश भाटिया
40	कार्य–जीवन संतुलन..	चाँदनी जैन
41	शहर मुझे आज भी याद है	भूपेंद्र पांडेय
42	डगर–ए–जिंदगी	पंकज चौहान
43	कृत्रिम बुद्धिमत्ता...	भूपेंद्र कुमार चौहान
44	मन की बातें	विनिमय जैन
45	अभियुक्तः लेखक	डॉ. अनन्या मिश्र
46	प्लेनेट आई : ज्ञान और नेतृत्व का केंद्र	पियूष त्रिवेदी

अस्वीकरण

'ज्ञान शिखर–2026' के ग्यारहवें संस्करण में प्रकाशित लेख, रचनाएँ, विचार एवं अभिमत संबंधित लेखकों/रचनाकारों के निजी विचार एवं अभिव्यक्तियाँ हैं। इनसे संपादकीय मंडल, प्रकाशन संस्था अथवा संस्थान के विचारों की अनिवार्यतः सहमति व्यक्त नहीं होती। प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचारों, तथ्यों, आंकड़ों, उद्धरणों एवं संदर्भों की प्रामाणिकता एवं उत्तरदायित्व संबंधित लेखक/रचनाकार का है। संपादकीय मंडल ने रचनाओं को यथासंभव संपादित एवं व्यवस्थित करने का प्रयास किया है, तथापि किसी अनजाने तथ्यात्मक अथवा मुद्रण संबंधी त्रुटि के लिए प्रकाशन पक्ष को उत्तरदायी नहीं माना जाएगा।

निदेशक की कलम से.......

हमारी हिंदी पत्रिका **'ज्ञान शिखर'** के ग्यारहवें संस्करण के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

''ज्ञान शिखर'' का यह नवीन अंक केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि भारतीय प्रबंध संस्थान इन्दौर की उस सतत् विकास–यात्रा का सजीव दस्तावेज है, जहाँ परंपरा और प्रगतिशीलता, भारतीयता और वैश्विक दृष्टिकोण, ज्ञान और मूल्यों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

आईआईएम इन्दौर आज विश्व के उन चुनिंदा प्रबंधन संस्थानों में सम्मिलित है जिन्हें प्रतिष्ठित 'ट्रिपल क्राउन' AACSB, AMBA एवं EQUIS` की मान्यता प्राप्त है। यह उपलब्धि हमारी शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान की गुणवत्ता, वैश्विक दृष्टि और निरंतर नवाचार के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर NIRF तथा Financial Times जैसी प्रतिष्ठित रैंकिंग में संस्थान की उल्लेखनीय उपस्थिति इस उत्कृष्टता को और अधिक सुदृढ़ करती है।

वर्तमान में संस्थान के परिसर की आधारभूत संरचना के व्यापक विस्तार का कार्य प्रगति पर है। इसके साथ ही विद्यमान अवसंरचना का आधुनिकीकरण, शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं का निरंतर उन्नयन तथा वैश्विक मानकों के अनुरूप शैक्षणिक वातावरण का विकास भी समान गति से किया जा रहा है। हमारा परिसर केवल शिक्षा प्राप्त करने का स्थान नहीं, बल्कि ऐसा जीवंत ज्ञान–केंद्र है जहाँ विचारों को प्रोत्साहन मिलता है, सपनों को संकल्प का आधार मिलता है, संकल्प ज्ञान में रूपांतरित होता है जो व्यक्तित्व तथा नेतृत्व का निर्माण करता है।

वास्तविक प्रगति केवल भौतिक विकास से नहीं, बल्कि विचारों और जीवन–मूल्यों के परिष्कार से भी मापी जाती है। हम सभी 3 R Reduce (न्यून करना), Reuse (पुनः उपयोग) और Recycle (पुनर्चक्रण) की अवधारणा से परिचित हैं। मैं इसके साथ एक चौथे Refuse (अनावश्यक का त्याग या इनकार) को भी जोड़ना चाहूँगा। अनावश्यक उपभोग से सजगतापूर्वक इनकार करना केवल पर्यावरण संरक्षण का उपाय नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का भी प्रतीक है। जब हम अपनी आवश्यकता से अधिक का त्याग करते हैं, तब वही संसाधन अनेक जरूरतमंद लोगों के जीवन में आशा और सम्मान का आधार बन सकते हैं।

आईआईएम इन्दौर का उद्देश्य केवल सक्षम प्रबंधकों का निर्माण करना ही नहीं, बल्कि ऐसे उत्तरदायी, संवेदनशील और मूल्यनिष्ठ नागरिक तैयार करना है जो समाज और राष्ट्र के समग्र विकास में सार्थक योगदान दे सकें। इसी भावना से हम अपने प्रतिभागियों के साथ–साथ संकाय सदस्यों और कर्मचारियों के बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए समान रूप से प्रतिबद्ध हैं। योग, पर्वतारोहण, साहित्य, चिंतन और भारतीय ज्ञान–परंपरा से जुड़े विविध आयाम हमारे शैक्षिक वातावरण के अभिन्न अंग हैं, क्योंकि हमारा विश्वास है कि प्रभावी नेतृत्व की शुरुआत स्वयं पर विजय प्राप्त करने से होती है। सच्ची समृद्धि संसाधनों के असीम उपभोग में नहीं, बल्कि संयम, संतुलन और आत्मानुशासन में निहित है। यही दृष्टि हमें पर्यावरण, समाज और स्वयं के प्रति अधिक जागरूक एवं उत्तरदायी बनाती है।

हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, संवेदनशीलता और आत्मा की भाषा है। **''ज्ञान शिखर''** के माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहते हुए वैश्विक समुदाय से सार्थक संवाद स्थापित करते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक पाठकों को नए विचार, नई प्रेरणा और नई दृष्टि प्रदान करेगा तथा उत्कृष्टता की ओर निरंतर अग्रसर रहने के हमारे सामूहिक संकल्प को और अधिक सुदृढ़ बनाएगा।

आइए, हम ज्ञान के साथ विवेक, सफलता के साथ संतोष, उत्कृष्टता के साथ विनम्रता और महत्वाकांक्षा के साथ करुणा को भी अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ। यही जीवन–दृष्टि भारतीय प्रबंध संस्थान इन्दौर की संस्कृति, मूल्यों और पहचान का आधार है।

शुभकामनाओं सहित,

प्रो. हिमांशु राय

मुख्य अधिकारी प्रशासन की कलम से...

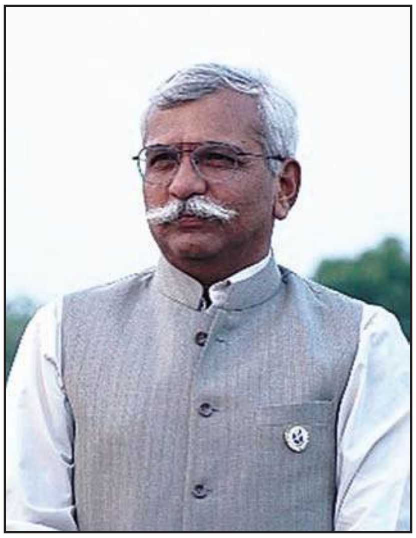

''भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपराओं, मूल्यों और सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है।'' यह हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हुए समाज में संवाद, सहयोग और आत्मीयता का सेतु बनाती है। इसी उद्देश्य से हमने संस्थान की वार्षिक हिंदी पत्रिका **"ज्ञान शिखर"** की शुरुआत की थी, और इस वर्ष मैं पुनः ज्ञान शिखर के एक और सफल अंक के प्रकाशन पर मैं सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

भारत की भाषाई विविधता हमारी सबसे बड़ी सांस्कृतिक शक्तियों में से एक है और प्रत्येक भारतीय भाषा इस विरासत को समृद्ध करती है। हिन्दी देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने तथा राष्ट्रीय एकात्मता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

''ज्ञान शिखर'' इसी भावना को साकार करने का एक सराहनीय प्रयास है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के संवर्धन के साथ–साथ कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति, ज्ञान–साझाकरण और साहित्यिक अभिरुचि को भी सशक्त मंच प्रदान करती है।

इस अंक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से योगदान देने वाले सभी साथियों के प्रति मैं अपनी हार्दिक सराहना व्यक्त करता हूँ। विशेष रूप से राजभाषा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके समर्पण, परिश्रम और प्रतिबद्धता के लिए बधाई देता हूँ, जिनके प्रयासों से यह उत्कृष्ट अंक प्रकाशित हो सका है।

''मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में भी हिन्दी के संवर्धन और ज्ञान–विमर्श की इस सार्थक परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाती रहेगी।''

कर्नल डॉ. गुरुराज गोपीनाथ पामिडि, (पूर्व सैनिक)

संपादकीय

जब हम **''ज्ञान शिखर''** के ग्यारहवें संस्करण को आपके हाथों में सौंप रहे हैं, तो मन में गर्व के साथ–साथ एक गहरी कृतज्ञता का भाव भी है। ग्यारह वर्ष... यह केवल एक संख्या नहीं है, यह एक सतत् साधना, एक अटूट विश्वास और प्रगति की ओर बढ़ते हुए अनगिनत कदमों की यात्रा है।

हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ ज्ञान की परिभाषा हर दिन बदल रही है। आज शिक्षा का अर्थ केवल अंकों की दौड़ या कक्षा की चार दीवारों तक सीमित नहीं रहा। आज की शिक्षा का अर्थ है – जिज्ञासु बनना, प्रश्न पूछने का साहस रखना, तकनीक को विवेक के साथ अपनाना और सबसे बढ़कर एक अच्छा मनुष्य बनना।

जहाँ एक ओर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल क्रांति दरवाजे पर खड़ी है, वहीं दूसरी ओर हमें अपने मन में मानवीय मूल्यों, करुणा और संस्कारों का दीपक भी जलाए रखना है। **''ज्ञान शिखर''** इसी संतुलन का प्रतीक है – जहाँ परम्परा और प्रगतिशीलता एक साथ चलती हैं।

इस अंक में आप कल्पनाओं और सृजनात्मकता की झलक देखेंगे। यह समुदाय सदस्यों की मेहनत, उनके आत्मविश्वास और उनकी उड़ान का दस्तावेज है। इस शिखर तक पहुँचना अकेले संभव नहीं था।

मैं हृदय की गहराइयों से हमारे समुदाय का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम, समर्पण और स्नेह के बिना यह प्रकाशन संभव नहीं था।

मैं आदरणीय निदेशक महोदय के प्रति विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ, जिनकी दूरदर्शी सोच और निरंतर प्रेरणा हमें सदैव बड़े लक्ष्य देखने का साहस देती है।

अंत में, मैं आदरणीय मुख्य अधिकारी प्रशासन महोदय का भी आभारी हूँ, जिनके कुशल मार्गदर्शन, संरक्षण ने हमें हर चुनौती को अवसर में बदलना सिखाया है।

मैं संस्थान के समुदाय सदस्यों के साथ ही पत्रिका के सह संपादक श्री राजेश श्रीवास्तव जी का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रशासन एवं इसकी उत्कृष्टता को बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान एवं सहयोग प्रदान किया है। आशा है यह संस्करण आपको प्रेरित करेगा और आपके मन में ज्ञान की एक नई लौ प्रज्वलित करेगा। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

जयनाथ यादव, हिंदी अधिकारी

"टीन के डिब्बे का खजाना"

राजेश श्रीवास्तव
राजभाषा विभाग

शहर की एक तंग गली में किराये की छोटी–सी कोठरी थी। उसमें सांस लेती थी दो बूढ़ी धड़कनें – रामधन काका और उनकी अर्धांगिनी सावित्री अम्मा। काका नब्बे पार, अम्मा अठासी की दहलीज पर। न कोई औलाद, न कोई छाँव। दुनिया की निगाह में बस "गरीब बुड्ढा–बुढ़िया" मगर स्वावलंबी होने की जीती जागती मिसाल। पर उन दोनों की दुनिया अलग थी।

काका हर सुबह फटी दरी बिछाकर सड़क किनारे बैठ जाते। काँपती उंगलियों से सुई में धागा पिरोते और लोगों के फटे कपड़ों पर उम्मीद के टाँके लगाते। होंठों पर भजन, मन में अटूट संतोष।

अम्मा पौ फटते ही मंदिर की सीढ़ियाँ थाम लेतीं। टोकरी में गेंदा, चमेली, तुलसी की मालाएँ सजाकर हर राहगीर से कहतीं – "ले जा बेटा, माता आशीष देंगी।" उनकी मुस्कान में मंदिर की घंटियों–सी मिठास थी।

दो वक्त की रोटी ही कमा पाते थे, मगर आँखों में कभी शिकन नहीं। शाम ढले काका चाय ले आते, अम्मा दो रोटियाँ सेंक देतीं। खाट पर बैठकर पुराने दिन टटोलते। काका कहते – "बुढ़िया, तू है तो मैं राजा हूँ।" अम्मा पल्लू की कोर भिगो लेतीं – "तुम साथ हो तो मुझे काशी–प्रयाग क्या करना?"

जिंदगी यूँ ही बह रही थी – सादगी की नदी–सी निर्मल, संतोष के तटों के बीच।

फिर एक भोर आई जो साँझ बनकर लौटी। मकान–मालिक सेठ गिरधारी ने देखा – काका की कोठरी का दरवाजा अब तक बंद है। आवाज दी, सन्नाटा टकराकर लौट आया। कलेजा धक से हुआ। धक्का देकर भीतर झाँका तो साँस थम गई।

खाट पर रामधन काका गहरी, चिरनिद्रा में लीन थे। चेहरे पर वही भोलापन, जैसे कोई थका–बूढ़ा बच्चा सो गया हो।

और खाट के पास, जमीन पर, सावित्री अम्मा बैठी थीं – माथा काका के पाँवों पर टिका, एक हथेली उनके तलवों पर। जैसे कह रही हों – "स्वामी, जहाँ तुम, वहीं मैं।"

डॉक्टर ने बताया – दोनों की विदाई के बीच बस कुछ घंटों का अंतर था। साथ जिए, साथ ही चले गए।

मोहल्ले के लोगों ने मिलकर अर्थी सजाई। जब कोठरी खाली कर रहे थे, खाट के नीचे से जंग–खाया टीन का डिब्बा निकला। खोला तो भीतर चिट्ठियों का पुलिंदा, मुड़ी–तुड़ी रसीदें और एक सूखा गेंदा – जैसे उनकी पूरी जिंदगी सिमटकर रख दी गई हो।

चिट्ठियाँ पढ़ते ही आँखें सावन हो गईं। काका ने लिखा था–

"सावित्री, कोख का दीया तो न जला, पर ऊपरवाले ने सैकड़ों बच्चों की किलकारी हमारी झोली में डाल दी। डर मत, हम साथ जिए हैं, साथ ही जाएँगे।"

अम्मा का जवाब था–

"नाथ, तुम सुई चलाते हो, मैं फूल बेचती हूँ। जो दो पैसा बचता है, वो उनके नाम जो भूखे सोते हैं, जिनकी कॉपी फटी है। हम तो दो दिन के पंछी हैं, उड़ जाएँगे।"

रसीदें बोल रही थीं – "सेवा आश्रम अनाथालय – 50 रुपये – रामधन", "नगरपालिका स्कूल – 12 बच्चों की फीस – सावित्री देवी", "धर्मार्थ अस्पताल – दवाई हेतु 100 रुपये – एक गुमनाम"। बरसों की रसीदें। कहीं नाम, कहीं सिर्फ "एक गरीब की ओर से"।

खबर जंगल की आग–सी फैली। तेरहवीं पर गली में गाड़ियों की कतार लग गई।

खाकी में इंस्पेक्टर अर्जुन आया, गला रुंधा था – "काका ने मेरी फॉर्म फीस भरी थी। आज वर्दी इन्हीं की दी है।"

डॉ. मीरा हाथ में डिग्री, आँख में आँसू – "अम्मा हर सोमवार किताबों के पैसे दे जाती थीं।"

कलेक्टर राघव ने माइक थामा – "मैं यतीम था। इन दोनों ने मुझे अक्षर दिए, आकाश दिया। मैं इनका बेटा हूँ।"

भीड़ में नर्स थी, मास्टर था, फौजी था, वकील था। सबकी जुबान पर एक ही नारा – "हम इनके बच्चे हैं।"

सेठ गिरधारी ने हाथ जोड़कर ऐलान किया – "ये कोठरी अब 'रामधन–सावित्री सेवा कुटीर' कहलाएगी। यहाँ कोई बच्चा भूखा नहीं सोएगा, कोई बस्ता खाली नहीं रहेगा।"

वो टीन का डिब्बा आज शहर के संग्रहालय में रखा है। शीशे पर सुनहरे अक्षरों में लिखा है –

"सबसे धनवान वो, जिसकी जेब खाली हो पर दिल में दुनिया बसती हो।"

लोग आज भी कहते हैं – काका–अम्मा तन से गए, पर सैकड़ों आँखों में उजाला बनकर रह गए। गरीबी उनकी देहरी पर थी, पर ममता के महल में उनसे बड़ा सिकंदर कोई न था।

सीखः रिश्ते रगों से नहीं, त्याग से जन्म लेते हैं। और सच्चा प्रेम वो दीया है जो बुझने के बाद भी युगों तक रास्ता दिखाता है।

*****

जब वो मेरी राह चली...

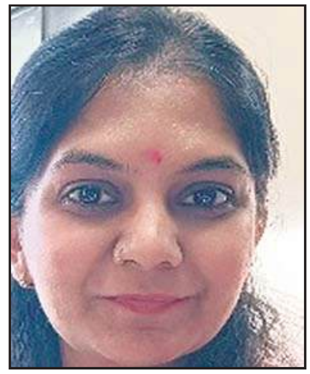

निशा राठौड़,
ईए, एचआर ऑफिस

उस दिन मैंने जाना,
कि वो परछाई ही मेरी है,
उसकी हर पसंद, ना पसंद में,
बस मेरी ही छवि है।
जब कभी मैं मन से उदास हूँ,
जब कभी मैं अंदर से हताश हूँ,
तब मैंने ये समझा कि,
मुस्कान से उस दिन
वह भी खिली नहीं,
उस दिन उसकी चहचहाहट
में भी कुछ कमी रही।
जिस जिस दिन मैंने उसे गले लगाया,
वो एक कली थी जो खिल गई,
जब जब मैंने नाराजगी जताई,
वो पत्तों सी मुरझाई।
उस दिन मैंने जाना कि,
वो तो परछाई ही मेरी है,
मेरे पैरों के निशान पर चलकर,
उसने राह मेरी ही चली।
मैंने उस दिन से सिर्फ खुशी को चुन लिया,
जिस दिन मैंने जान लिया कि मेरी
राह ही उसके कदमों की चाह है।...

*****

भाषाः सभ्यता की आत्मा

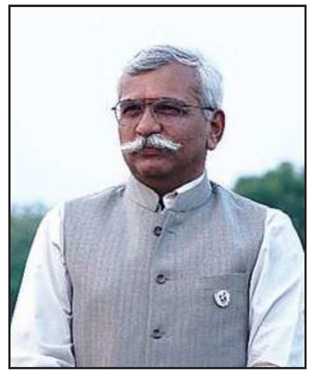

कर्नल (डॉ.) गुरुराज गोपीनाथ पामिडि
(पूर्व सैनिक) मुख्य अधिकारी प्रशासन,
आईआईएम इन्दौर

भाषा को प्रायः विचार–विनिमय का माध्यम कहा जाता है, और यह कथन कुछ सीमा तक सत्य है, किन्तु भाषा का महत्व इससे कहीं अधिक व्यापक है। भाषा केवल शब्दों, वाक्यों और व्याकरण का समूह मात्र नहीं है, अपितु वह किसी जनसमुदाय के अतीत, सभ्यता, परम्पराओं, लोककथाओं, तत्त्वचिन्तन तथा सामूहिक स्मृतियों की अमूल्य धरोहर भी है। यदि सभ्यता की आत्मा उसकी संस्कृति है, तो भाषा उसकी वाणी है।

भारतीय चिन्तन–परम्परा में भाषा को अत्यन्त उच्च स्थान प्राप्त है। ऋग्वेद में 'वाक्' को ज्ञान और वाणी की अधिष्ठात्री देवी के रूप में वर्णित किया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि वाणी केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं, अपितु सृष्टि, ज्ञान और व्यवस्था का आधार भी है। महान दार्शनिक भर्तृहरि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ' वाक्यपदीय' में "शब्द–ब्रह्म" की अवधारणा प्रतिपादित की। उनके अनुसार भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, बल्कि विचार और भाषा एक–दूसरे से अभिन्न हैं। भारतीय दर्शन हमें यह बोध कराता है कि भाषा केवल विचार–विनिमय का उपकरण नहीं, अपितु चेतना का भी आधार है।

प्रत्येक भाषा अपने साथ असंख्य पीढ़ियों के अनुभव, ज्ञान और जीवन–दृष्टि को संजोए रहती है। उसके मुहावरों में लोकजीवन की गहन समझ निहित होती है, लोकोक्तियों में जनबुद्धि का सार सुरक्षित रहता है, काव्य में जनमानस की भावनाएँ प्रतिबिम्बित होती हैं तथा लोककथाओं में अतीत की ऐसी स्मृतियाँ संरक्षित रहती हैं, जो अनेक बार ग्रन्थों में भी उपलब्ध नहीं होतीं। अतः जब कोई भाषा लुप्त होती है, तब केवल शब्द ही नहीं विलुप्त होते, बल्कि सम्पूर्ण जीवन–दृष्टि और ज्ञान–परम्परा भी नष्ट हो जाती है।

प्रत्येक भाषा उसे जानने वाले लोगों को परस्पर जोड़ने का एक अत्यन्त सशक्त सेतु है। सम्भवतः कोई अन्य शक्ति इस कार्य को इतनी सहजता और आत्मीयता से संपन्न नहीं कर सकती। जब कोई व्यक्ति अपने गृह प्रदेश से दूर किसी अपरिचित स्थान पर अपनी मातृभाषा सुनता है, तब उसके मन में आत्मीयता और अपनत्व का भाव स्वतः जागृत हो उठता है। भाषा एक ऐसा अदृश्य सूत्र है, जो मनुष्यों को भौगोलिक दूरियों, सामाजिक भिन्नताओं तथा पीढ़ियों के अन्तराल के पार भी एक–दूसरे से सम्बद्ध रखता है।

इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जहाँ समान भाषा ने लोगों को एक–दूसरे के निकट लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजनैतिक सीमाएँ परिवर्तित हो सकती हैं, किन्तु भाषा लोगों के मध्य सांस्कृतिक सम्बन्धों को अक्षुण्ण बनाए रखती है। यही कारण है कि जब किसी भाषा पर संकट आता है, तब उसके बोलने वाले उसके संरक्षण हेतु स्वयं आगे आते हैं। वे भली–भाँति जानते हैं कि भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं, अपितु उनकी अस्मिता का आधार–स्तम्भ है।

भारत विश्व के सर्वाधिक भाषिक वैभव से सम्पन्न देशों में अग्रगण्य है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ तथा हजारों बोलियाँ प्रचलित हैं। हमारे यहाँ एक प्राचीन लोकोक्ति हैः

"कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।"

वस्तुतः यही भारत की विशिष्टता है। जैसे–जैसे हम एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर अग्रसर होते हैं, वैसे–वैसे उच्चारण, शब्दावली और बोलने की शैली में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक प्रदेश की भाषा उसके अतीत, भौगोलिक परिस्थितियों तथा सांस्कृतिक विकास की सजीव कथा कहती है।

भारतीय संविधान ने 22 भाषाओं को अनुसूचित भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान की है, किन्तु भारत की भाषिक सम्पदा इससे कहीं अधिक व्यापक है। देश की अनेक जनजातीय भाषाएँ तथा स्थानीय बोलियाँ आज भी प्रकृति, औषधीय ज्ञान, लोक परम्पराओं तथा मौखिक इतिहास का अमूल्य भण्डार अपने भीतर संजोए हुए हैं। इनका संरक्षण केवल भाषाओं का संरक्षण नहीं, अपितु भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का भी महत्त्वपूर्ण कार्य है।

भारत की सबसे बड़ी शक्तियों में से एक उसकी बहुभाषिकता है। अधिकांश भारतीय स्वाभाविक रूप से दो, तीन अथवा उससे अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं। गृह में एक भाषा, जनजीवन में दूसरी तथा शिक्षा अथवा कार्यस्थल पर तीसरी भाषा का प्रयोग हमारे लिए सामान्य बात है। यही बहुभाषिकता हमें विविध संस्कृतियों को समझने, परस्पर सम्मान की भावना विकसित करने तथा विविधता में एकता के आदर्श को और अधिक सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

महात्मा गांधी का मत था कि बालकों की प्रारम्भिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में ही होनी चाहिए। उनका विश्वास था कि अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाला बालक विषयों का अधिक गहन बोध करता है तथा उसका आत्मविश्वास भी दृढ़ होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने भी इसी विचार का समर्थन किया है तथा जहाँ तक संभव हो, प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में प्रदान करने पर बल दिया है।

आज भारत की अनेक भाषाएँ और बोलियाँ अस्तित्व–संकट का सामना कर रही हैं। नगरीकरण, पलायन, वैश्वीकरण तथा अंग्रेजी एवं कुछ प्रमुख भाषाओं के बढ़ते प्रभाव के कारण अनेक भाषाएँ धीरे–धीरे लुप्तप्राय होती जा रही हैं। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने भी चेतावनी दी है कि भारत की अनेक भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं। जब कोई भाषा लुप्त होती है, तब उसके साथ लोक गीत, लोक कथाएँ, पारम्परिक ज्ञान तथा शताब्दियों का अनुभव भी सदा के लिए नष्ट हो जाता है।

इसका यह अभिप्राय नहीं है कि हमें अंग्रेजी जैसी वैश्विक भाषा का विरोध करना चाहिए। आज अंग्रेजी उच्च शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अन्तरराष्ट्रीय वाणिज्य तथा वैश्विक विचार–विनिमय की एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। आवश्यकता किसी एक भाषा को अपनाने की नहीं, अपितु सभी भाषाओं को समान आदर देने की है। हम अंग्रेजी को अपनाते हुए अपनी मातृभाषाओं का संरक्षण भी कर सकते हैं। दोनों परस्पर पूरक हैं, प्रतिस्पर्धी नहीं।

हमारी भाषाओं को जीवित बनाए रखने का उत्तरदायित्व केवल शासन या शिक्षण–संस्थाओं का ही नहीं, प्रत्येक परिवार का भी है। जब दादा–दादी अथवा नाना–नानी बालकों को अपनी मातृभाषा में कथाएँ सुनाते हैं, जब माता–पिता गृह में मातृभाषा में वार्तालाप करते हैं, जब लोक गीत गाए जाते हैं तथा उत्सव स्थानीय भाषा में मनाए जाते हैं, तब हमारी भाषाएँ सजीव बनी रहती हैं। साहित्य, रंगमंच, चलचित्र, डिजिटल माध्यम तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी नवीन प्रौद्योगिकियों को भी भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देना होगा।

भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं है। वह हमारी स्मृतियों की वाणी, हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की अभिव्यक्ति तथा हमारी सभ्यता की आत्मा है। भारत की विविध भाषाएँ हमें परस्पर जोड़ती हैं, हमारी एकात्मता, बन्धुत्व तथा राष्ट्रीय अखण्डता को सुदृढ़ करती हैं। वे हमें एक–दूसरे के रहन–सहन, जीवन–मूल्यों,

परम्पराओं और सांस्कृतिक वैभव को समझने का अवसर प्रदान करती हैं। वे हमारे मध्य सेतु का कार्य करती हैं, हमें समृद्ध बनाती हैं तथा यह शिक्षा देती हैं कि एकता का अर्थ एकरूपता नहीं, अपितु विविधता का सम्मान है। वस्तुतः विविधता ही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है।

जब भारत वर्ष 2047 तक ''विकसित भारत'' के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, तब आर्थिक उन्नति और प्रौद्योगिकीय प्रगति के साथ–साथ अपनी भाषिक विरासत का संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है। क्योंकि जब हम अपनी भाषाओं का संरक्षण करते हैं, तब हम केवल शब्दों को सुरक्षित नहीं रखते, बल्कि भारत की आत्मा, उसकी सांस्कृतिक चेतना तथा उसकी अनन्त ज्ञान–परम्परा को भी अक्षुण्ण बनाए रखते हैं।

*****

भारतीय प्रबंध संस्थान ..... ज्ञान का शिखर

अभिषेक कोष्टी
सामान्य कर्तव्य सहायक

ज्ञान का शिखर है ये, ज्ञान वृक्ष है बड़ा,
इसके पावन सान्निध्य में, हर मनुष्य है खड़ा।

जड़ों में हैं संस्कार बसे, तनों में दृढ़ विश्वास,
शाखाओं पर सपने खिलते, पत्तों में उल्लास।

गुरुजन इसके माली बनकर, करते सतत प्रयास,
सींच–सींच कर ज्ञान सुधा से, भरते नव प्रकाश।

पुस्तक इसकी पत्तियाँ हैं, प्रबंध इसके फूल,
मेहनत इसके फल बन जाते, जीवन हो अनुकूल।

अज्ञानता का तम हर लेता, देता नई उड़ान,
इसके नीचे बैठ सीखता मानव का सम्मान।

ज्ञान, कला और संस्कृति का यह अनुपम विस्तार,
इसके बल पर खुलते हैं नई प्रगति के द्वार।

जो इसकी छाया अपनाए, वह नई ऊँचाइयाँ पाए,
संघर्षों के पथ पर चलकर सफलता को अपनाए।

आओ मिलकर प्रण यह लें, ज्ञान ज्योति फैलाएँ,
इस पावन ज्ञान–वृक्ष को हम और हरा–भरा बनाएँ।

ज्ञान का शिखर है ये, ज्ञान वृक्ष है बड़ा,
इसके पावन सान्निध्य में हर जीवन है खड़ा।

2026 "संघर्ष मेरा, कहानी मेरी"

आयुषी जैन
जूनियर ऑफिस
एसोसिएट (लाइब्रेरी)

पढ़ाई से शुरू हुआ ये सपना मेरा,
छोटा सा लक्ष्य, पर हौसला था गहरा।
किताबों में ढूंढती रही मैं अपना नाम,
हर पन्ना कहता–"तू बस शुरू तो कर अपना काम।"

घर से दूर जब कदम बढ़ाए,
तब असली संघर्ष ने रंग दिखाए।
जब खाने में स्वाद भी साथ न दे,
फिर भी दिल कहे– "चल, आगे बढ़ते हैं रे।"

जब अपनी ही दुनिया खुद सजानी पड़े,
हर छोटी खुशी भी खुद कमानी पड़े।
जब सुबह की शुरुआत अलार्म से हो,
और सारा दिन काम से फुर्सत ही न हो।

दिन यूँ ही गुजरते हैं संघर्ष के साथ,
पर हर कदम लिखता है नई सी बात।
धीरे–धीरे आसान बनता है हर रास्ता,
जब खुद पर हो विश्वास–यही है सच्ची आस्था।

ताकि जिंदगी को एक सुकून सा मोड़ दे पाऊँ,
अपने हर ख्वाब को हकीकत में बदल पाऊँ।
ये संघर्ष ही मेरी असली पहचान है,
इसी में छुपा मेरा पूरा आसमान है।

बस एक ही जिद और एक ही आस,
मंजिल मिले मुझे मेरे हर प्रयास के पास।
जो बनना है मुझे, वो बनकर दिखाऊँ,
अपने कर्तव्य की सीढ़ी पर चढ़ते जाऊँ।

*****

ऊँची उड़ानें

अक्षिता श्रीवास्तव

तू क्यों खामोश है, क्यों है परेशान?
क्यों समझ नहीं पा रही अपना मुकाम
क्यों इस नादान सी जिंदगी को उलझा कर बैठी है
क्यों एक सुलझे से जीवन को पहेली बना बैठी है।

थोड़ा ठहर, थोड़ी सी साँस भी ले,
कर सकती है कुछ भी, ये मान ले,
थोड़ा ठहर, खुद पर कर यकीन,
जिंदगी तेरे पास है, और कहीं नहीं।

कि कोशिश तो कर, अपना हाथ बढ़ा,
कि मेहनत तो कर, तू अपनी हदों को बढ़ा,
कि बस थम नहीं, तू आसमान को छुएगी,
कि एक कर सर जमीन, तू उड़ानें भरेगी।

कि तू तो एक हीरा है, जिसे खुद तराशे
कि तू तो एक दिया है, जो अंधेरों को रोशन कर दे
कि एक उम्मीद की किरण है तू, हौसले बनाए रख
कितू एक पूरा जीवन है, चंद लम्हों में मत सिमट

हाँ खामोश तो तू हो सकती है,
मन करे तो जरा–सा रो सकती है,
चल ठीक है, थोड़ा सा दुनिया से छुप जा, पर याद से,
अगली सूर्य–किरण के साथ, उठ भी जा।

कि उठेगी नहीं तो चलेगी कैसे,
चलेगी नहीं, तो आगे बढ़ेगी कैसे,
हाँ थोड़ा धीमी कर लेना अपनी चाल
पर रुकना नहीं, वो है एक अंधेर मायाजाल

कहाँ उसकी माया में तू उलझेगी,
रुकेगी जरा सा, फिर ऊँची उड़ानें लगाएगी,
फिर ऊँची उड़ानें लगाएगी, फिर ऊँची उड़ानें लगाएगी।

*****

बेटियों की उडान

काजल
प्रशिक्षु पुस्तकालय पेशेवर

बेटियाँ हैं–दीवारों की नहीं, आसमान की हकदार,
इन्हें किताबें दो, बन जाएँगी ये खुद एक संसार।
कैद में रखोगे तो खामोशियाँ ही मिलेंगी,
उन्हें पढ़ाओगे तो नई कहानियाँ मिलेंगी।
मत रोको उनकी उड़ान को रिवाजों के नाम पर,
कल वही लिखेंगी इतिहास अपने ही नाम पर।

जिस घर में बेटी पढ़ती है, उजाला वहीं बसता है,
एक नहीं, कई पीढ़ियों का नसीब वहीं बदलता है।
ताले नहीं, तालीम दो–ये ही सबसे बड़ा सहारा है,
बेटी को पढ़ाना ही असली जग में उजियारा है।

ज्ञान की रोशनी से जब आँखें उनकी चमकेंगी,
हर मुश्किल राह में मंजिलें खुद बिखरेंगी।
कलम की ताकत से वो दुनिया बदल देंगी,
अपने सपनों को हकीकत में ढाल देंगी।

बेटी सिर्फ घर की शान नहीं होती,
वो हर समाज की पहचान होती।
उसे अवसर दो, विश्वास दो, सम्मान दो,
वो हर बंद दरवाजे को नई उड़ान दो।

जहाँ बेटियाँ मुस्कुराकर आगे बढ़ती हैं,
वहीं तरक्की की राहें खुद सजती हैं।
आओ मिलकर ये प्रण हम आज उठाएँ,
हर बेटी को शिक्षा का अधिकार दिलाएँ।

*****

हिंदी हमारी पहचान

दीपिका विश्वकर्मा
पुस्तकालय प्रशिक्षु

हिंदी है हमारी शान,
हिंदी है हमारी पहचान,
शब्द–शब्द में बसी हुई,
भारत की ये है मुस्कान।

माँ की ममता जैसी प्यारी,
दिल की भाषा सी है न्यारी,
हर भावना को छू लेती,
सरल, मधुर और है दुलारी।

कभी कविता, कभी कहानी,
कभी बन जाती है जुबानी,
हर दिल में बसती हिंदी,
जैसे हो कोई मीठी रवानी।

यह जोड़ती दिल से दिल को,
यह देती अपनी पहचान,
हिंदी से ही हम सबका,
बढ़ता है देश का सम्मान।

आओ मिलकर वचन करें,
हिंदी का हम मान करें,
हर दिन इसका गौरव बढ़ाएँ,
और दिल से करें इसका सम्मान।

*****

हिंदी भाषा और संस्कृति : विविधता में एकता का सशक्त आधार

प्रभात रंजन पात्र
पुस्तकालय पेशेवर सहायक

प्रस्तावना

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अनेक धर्म, संस्कृतियाँ, परंपराएँ और जीवन शैलियाँ देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार भारत में 2200 से भी अधिक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। देश के हर क्षेत्र की अपनी अलग भाषा, उच्चारण और सांस्कृतिक पहचान है। इतनी भाषाई विविधता होने के बावजूद भारत एक सूत्र में बंधा हुआ है। इस एकता को मजबूत करने में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि लोगों के बीच भावनात्मक जुड़ाव और राष्ट्रीय एकता की पहचान भी है।

विविधता में एकता का माध्यम

भारत के किसी भी कोने में चले जाएँ, वहाँ की भाषा और बोली अलग मिलती है। फिर भी हिंदी एक ऐसी भाषा है जो विभिन्न राज्यों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ती है। जब अलग–अलग भाषाएँ बोलने वाले लोग मिलते हैं, तब हिंदी उनके बीच संवाद का पुल बन जाती है। यह भाषा लोगों को अपनी पहचान साझा करने और संबंध स्थापित करने का अवसर देती है। हिंदी हमें यह एहसास कराती है कि भले ही हमारी भाषाएँ अलग हों, लेकिन हमारी भावनाएँ और हमारी भारतीय पहचान एक है।

राष्ट्र निर्माण में हिंदी की भूमिका

स्वतंत्रता संग्राम के समय हिंदी ने लोगों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी के माध्यम से देशभक्ति और एकता का संदेश जन–जन तक पहुँचाया। स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला, जिससे प्रशासन, शिक्षा और जनसंचार में इसका महत्व और बढ़ गया। आज भी हिंदी राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को मजबूत करने का कार्य कर रही है।

संस्कृति और सामाजिक जुड़ाव

हिंदी भारतीय संस्कृति, परंपराओं और साहित्य को संजोकर रखने का कार्य करती है। लोककथाएँ, कविताएँ, कहानियाँ और साहित्यिक रचनाएँ हमारी सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ियों तक पहुँचाती हैं। हिंदी भाषा में भारतीय सभ्यता, आदर्शों और मानवीय मूल्यों की झलक दिखाई देती है। यह भाषा लोगों के बीच प्रेम, सम्मान और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देती है।

आधुनिक युग में हिंदी का महत्व

आज के डिजिटल और वैश्विक युग में हिंदी का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। सोशल मीडिया, सिनेमा, समाचार, शिक्षा और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से हिंदी विश्वभर में अपनी पहचान बना रही है। विदेशों में रहने वाले भारतीय भी हिंदी के माध्यम से अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़े हुए हैं। हिंदी अब केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति की पहचान बन चुकी है।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा भारत की एकता, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह भाषा हमें आपस में जोड़ने के साथ–साथ हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी जीवित रखती है। भारत की भाषाई विविधता हमारी शक्ति है, और हिंदी इस विविधता को एकता में बदलने का कार्य करती है। इसलिए हमें हिंदी भाषा का सम्मान करना चाहिए और इसे आने वाली पीढ़ियों तक गर्व के साथ पहुँचाना चाहिए।

*****

"युद्ध की कीमत"

आयुषी जैन
ऑफिस एसोसिएट, वित्त एवं लेखा विभाग

धुआँ–धुआँ सा आसमान है, धरती रोती हर इंसान है,
किसके लिए ये युद्ध लड़ा हर दिल में बस यही सवाल है।

टूटे घर और सूनी गलियाँ, खामोश पड़ी हैं अब कलियाँ,
बमों की गूंज में दब गई, बच्चों की प्यारी हँसीयाँ।

किसी का सपना बिखर गया, किसी का अपना बिछड़ गया,
जो कल तक साथ था हँसता, आज यादों में सिमट गया।

महँगी रोटी, खाली थाली, आँखों में चिंता की लाली,
मेहनत करके भी जो न पाए, ऐसी हो गई हर घर की कहानी।

पेट्रोल, गैस के बढ़ते दाम, जिंदगी हो गई मुश्किल काम,
जो युद्ध में नहीं गए कभी, वो भी झेल रहे उसका भयानक अंजाम।

सीमाओं पर लड़ी जाती लड़ाई, पर असर घर–घर तक आई,
आम आदमी हर दर्द सहता, कहानी वही हर जगह दोहराई।

फिर भी उम्मीद का दीप जले, कभी तो ये अंधेरा ढले,
इंसानियत जीते अंत में और शांति के फूल खिले।

क्यों रक्त पिपासु बने हम क्यों भेद दे धारा का सीना?
प्यार के फूल जो खिल जाए, महक उठे हर एक नगीना।

नफरत की आंधी थम जाए, प्रेम का सावन बरसा दे।
विश्व के हर कोने में दाता, ममता का दीप जला दे।

*****

"यदि तेज जाना है तो अकेले चलो, यदि दूर तक जाना है तो साथ चलो"

अनुष हातोदिया

एक पुरानी अफ्रीकी कहावत है – "यदि तेज जाना है तो अकेले चलो, यदि दूर तक जाना है तो साथ चलो।" पहली नजर में यह एक साधारण वाक्य लगता है, परंतु इसके भीतर जीवन, समाज और मानव संबंधों की गहरी समझ छिपी हुई है।

कल्पना कीजिए कि दो यात्री एक लंबी यात्रा पर निकलते हैं। एक है आकाश में उड़ता हुआ बाज, जो तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है। दूसरा है ऊँटों का एक काफिला, जो रेगिस्तान की कठिन राहों पर धीरे–धीरे आगे बढ़ता है। बाज को किसी का इंतजार नहीं करना पड़ता। वह तुरंत निर्णय ले सकता है और तेजी से आगे बढ़ सकता है। दूसरी ओर, काफिले की गति धीमी होती है, लेकिन उसमें साथ, सुरक्षा, सहयोग और धैर्य होता है।

बाज उस व्यक्ति का प्रतीक है जो आत्मनिर्भरता, व्यक्तिगत क्षमता और त्वरित सफलता में विश्वास रखता है। वहीं ऊँटों का काफिला सामूहिक शक्ति, सहयोग, साझेदारी और दीर्घकालिक सफलता का प्रतीक है। जीवन में दोनों की आवश्यकता होती है। कुछ परिस्थितियों में अकेले आगे बढ़ना उचित होता है, जबकि कुछ मंजिलें केवल साथ चलकर ही प्राप्त की जा सकती हैं।

आज के समय में, जब दुनिया पहले से अधिक जुड़ी हुई है, यह कहावत और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है। परिवार, समाज, व्यापार, राजनीति या वैश्विक चुनौतियाँ – हर क्षेत्र में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि हमें कब अकेले चलना चाहिए और कब साथ मिलकर।

व्यक्तिगत प्रयास की शक्ति

जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जब अकेले काम करना आवश्यक हो जाता है। अकेला व्यक्ति बिना किसी चर्चा या अनुमति के तुरंत निर्णय ले सकता है। स्वतंत्र सोच अक्सर नए विचारों, रचनात्मकता और साहस को जन्म देती है।

इतिहास ऐसे अनेक व्यक्तियों से भरा पड़ा है जिन्होंने अपने अकेले प्रयासों से समाज को बदल दिया। विनोवा भावे ने भूदान आंदोलन की शुरुआत अकेले की थी। वे गाँव–गाँव जाकर लोगों से भूमिहीनों के लिए जमीन दान करने की अपील करते थे। इसी प्रकार लेखक, वैज्ञानिक और कलाकार भी अक्सर एकांत में रहकर महान रचनाएँ करते हैं।

भारतीय संविधान के निर्माण में बी. आर. अम्बेड़कर की भूमिका इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। उनके ज्ञान, दूरदृष्टि और अथक परिश्रम ने भारत को एक ऐसा संविधान दिया जो दुनिया के सबसे व्यापक संविधानों में गिना जाता है।

आज भी विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी अकेले करते हैं, खिलाड़ी घंटों अभ्यास करते हैं, और उद्यमी अपने विचारों को वास्तविकता में बदलने के लिए व्यक्तिगत संघर्ष करते हैं। अकेले काम करना आत्मविश्वास, अनुशासन और आत्मनिर्भरता को बढ़ाता है।

लेकिन अकेले चलने की भी सीमाएँ होती हैं। अकेला व्यक्ति जल्दी थक सकता है, मानसिक दबाव का शिकार हो सकता है, और सीमित दृष्टिकोण के कारण कई अवसरों से वंचित रह सकता है।

हेलेन केलर ने सही कहा था – "अकेले हम बहुत कम कर सकते हैं, साथ मिलकर हम बहुत कुछ कर सकते हैं।"

सामूहिक प्रयास का महत्व

व्यक्ति तेज चल सकता है, लेकिन समाज हमेशा साथ मिलकर आगे बढ़ता है। मानव सभ्यता का निर्माण सामूहिक प्रयासों से हुआ है। सड़कें, विद्यालय, अस्पताल, वैज्ञानिक खोजें और लोकतांत्रिक संस्थाएँ – ये सब मिलकर काम करने का परिणाम हैं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। अलग–अलग धर्मों, भाषाओं और समुदायों के लोग एकजुट होकर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध खड़े हुए। महात्मा गाँधी ने समझ लिया था कि स्वतंत्रता केवल कुछ व्यक्तियों के प्रयासों से नहीं मिल सकती। इसके लिए पूरे राष्ट्र को साथ आना होगा।

भारत के संविधान की प्रस्तावना भी इसी भावना को व्यक्त करती है। इसकी शुरुआत "हम भारत के लोग" शब्दों से होती है। यह केवल किसी एक व्यक्ति की आवाज नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की सामूहिक आकांक्षा है।

कोविड–19 महामारी के दौरान भी दुनिया ने सामूहिक प्रयास की शक्ति को देखा। कोई भी देश अकेले इस संकट का सामना नहीं कर सकता था। वैज्ञानिकों ने शोध साझा किए, डॉक्टरों ने दिन–रात काम किया, और लोगों ने एक–दूसरे की मदद की। भारत में भी नागरिकों, स्वयंसेवी संस्थाओं और उद्योगों ने मिलकर भोजन, दवाइयाँ और ऑक्सीजन उपलब्ध कराई।

इसी प्रकार जलवायु परिवर्तन, गरीबी और आतंकवाद जैसी वैश्विक समस्याओं का समाधान अकेले संभव नहीं है। इसके लिए देशों के बीच सहयोग और साझेदारी आवश्यक है।

विविधता में एकता की शक्ति

साथ मिलकर चलने का अर्थ केवल एक जगह इकट्ठा होना नहीं है। सच्चा सहयोग तब होता है जब विभिन्न विचारों, अनुभवों और क्षमताओं का सम्मान किया जाए।

भारत "विविधता में एकता" का सबसे बड़ा उदाहरण है। यहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म, संस्कृतियाँ और परंपराएँ हैं, फिर भी देश एकजुट है। इसका कारण है संविधान द्वारा दिए गए समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे मूल्य।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने "बंधुत्व" को लोकतंत्र की आत्मा माना था। यदि समाज में भाईचारा नहीं होगा, तो समानता और स्वतंत्रता लंबे समय तक टिक नहीं सकती।

विविधता निर्णय लेने की क्षमता को भी बेहतर बनाती है। अलग–अलग दृष्टिकोण मिलकर अधिक संतुलित और समावेशी समाधान प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि विविध टीमों वाले संगठन अधिक सफल और नवाचारी माने जाते हैं।

प्राकृतिक आपदाओं के समय भी यह भावना दिखाई देती है। बाढ़, भूकंप या चक्रवात के दौरान लोग जाति, धर्म और भाषा से ऊपर उठकर एक–दूसरे की मदद करते हैं। यही सामूहिक संवेदना समाज को मजबूत बनाती है।

संतुलन की आवश्यकता

हालाँकि सामूहिक प्रयास महत्वपूर्ण हैं, लेकिन हर परिस्थिति में केवल समूह पर निर्भर रहना भी उचित नहीं है। समूह में निर्णय लेने की प्रक्रिया धीमी हो सकती है क्योंकि उसमें चर्चा, सहमति और समन्वय की आवश्यकता होती है।

उदाहरण के लिए, कोई व्यवसायी अकेले निर्णय लेकर तुरंत लाभ कमा सकता है, लेकिन एक टीम द्वारा लिया गया निर्णय अधिक संतुलित और दीर्घकालिक हो सकता है। इसी प्रकार लोकतंत्र की प्रक्रिया धीमी होती है, परंतु यह अधिक न्यायपूर्ण और टिकाऊ परिणाम देती है।

इसलिए इस कहावत का वास्तविक अर्थ किसी एक मार्ग को श्रेष्ठ बताना नहीं है। इसका उद्देश्य यह समझाना है कि परिस्थितियों के अनुसार सही मार्ग चुनना आवश्यक है।

कुछ अवसर ऐसे होते हैं जहाँ त्वरित व्यक्तिगत निर्णय आवश्यक होते हैं, जबकि कुछ समस्याएँ केवल सामूहिक प्रयासों से ही हल हो सकती हैं।

जीवन केवल तेज दौड़ने का नाम नहीं है। यह धैर्य, संबंधों और स्थायी प्रभाव का भी नाम है।

आधुनिक समाज के लिए सीख

आज का समाज व्यक्तिगत सफलता को बहुत अधिक महत्व देता है। सोशल मीडिया और प्रतिस्पर्धा की संस्कृति ने लोगों को अधिक आत्मकेंद्रित बना दिया है। महत्वाकांक्षा आवश्यक है, लेकिन अत्यधिक व्यक्तिवाद समाज को कमजोर कर सकता है।

आज मानसिक तनाव, अकेलापन और सामाजिक विभाजन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऐसे समय में लोगों को सहयोग, सहानुभूति और समुदाय की आवश्यकता पहले से अधिक है।

शिक्षा व्यवस्था को भी ऐसा होना चाहिए जो छात्रों को केवल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि सहयोग का महत्व भी सिखाए। समूह कार्य, सामुदायिक सेवा और संवाद जैसी गतिविधियाँ सहानुभूति और नेतृत्व विकसित करती हैं।

कार्यालयों और संस्थानों में भी व्यक्तिगत रचनात्मकता और टीमवर्क के बीच संतुलन आवश्यक है। जब लोगों को सम्मान और सहयोग मिलता है, तब वे बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

राष्ट्र निर्माण में भी सामूहिक भागीदारी आवश्यक है। स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण, मतदान और सामाजिक कल्याण जैसे कार्य तभी सफल होंगे जब नागरिक मिलकर योगदान देंगे।

महात्मा गांधी ने कहा था – "स्वयं को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है, स्वयं को दूसरों की सेवा में खो देना।"

निष्कर्ष

"यदि तेज जाना है तो अकेले चलो, यदि दूर तक जाना है तो साथ चलो" – यह कहावत जीवन का गहरा सत्य सिखाती है। अकेला बाज साहस, महत्वाकांक्षा और त्वरित निर्णय का प्रतीक है, जबकि ऊँटों का काफिला धैर्य, सहयोग और सामूहिक शक्ति का प्रतीक है।

जीवन में दोनों की आवश्यकता होती है। व्यक्तिगत प्रयास प्रगति की शुरुआत करते हैं, जबकि सामूहिक प्रयास उसे स्थायी बनाते हैं।

सच्ची समझ इस बात में है कि हमें कब अकेले उड़ना है और कब सबके साथ चलना है।

आज के परस्पर जुड़े हुए संसार में हमें यह समझना होगा कि वास्तविक सफलता केवल जल्दी मंजिल तक पहुँचने में नहीं, बल्कि दूसरों को साथ लेकर आगे बढ़ने में है। प्रतियोगिता से समाज सक्षम बन सकता है, लेकिन सहयोग से समाज संवेदनशील, मजबूत और स्थायी बनता है।

अंततः, मनुष्य सबसे दूर तक अकेले नहीं, बल्कि साथ मिलकर ही पहुँच सकता है।

*****

क्या पैसा ही सब कुछ है....

अफसीन चोबदार
प्रशिक्षु कार्यालय सहयोगी

मेरे मन में यह सवाल अक्सर उठता था – क्या पैसा ही सब कुछ है?

यह सवाल यूँ ही नहीं आया था। मैंने अपने आसपास कई बार ऐसे दृश्य देखे थे, जिन्होंने मुझे भीतर तक सोचने पर मजबूर कर दिया था।

एक दिन मैं अपनी एक जान–पहचान वाली के घर गई। घर में कुछ मेहमान आने वाले थे, इसलिए तैयारियाँ चल रही थीं। मैं भी वहीं बैठकर सब देख रही थी।

कुछ समय बाद एक सुसज्जित परिवार आया। उनके आते ही घर का माहौल बदल गया – नई प्लेटें निकाली गईं, ताजा नाश्ता परोसा गया, और हर बात में खास ध्यान रखा गया।

थोड़ी देर बाद एक साधारण सा परिवार आया। उनके कपड़ों और व्यवहार से साफ झलक रहा था कि वे आर्थिक रूप से उतने सक्षम नहीं थे। उनके लिए घर में पहले से रखा हुआ नाश्ता निकाल दिया गया–वही पुरानी प्लेटें, वही कम ध्यान, और औपचारिक सी बातचीत।

मैं चुपचाप यह सब देखती रही।

तभी मुझे एक कहावत याद आई – "माथा देखकर तिलक लगाते हैं लोग।"

आज उसका मतलब मुझे बखूबी समझ आ गया था।

मुझे एहसास हुआ कि यहाँ मेहमानों का स्वागत उनके आने से नहीं, बल्कि उनकी हैसियत से तय हो रहा था।

वापस लौटते समय मेरा मन भारी था। रास्ते भर मैं यही सोचती रही –

क्या सच में पैसा इंसान की कीमत तय करता है?

फिर मेरे मन में एक विचार आया –

हम सब अपने व्यवहार से समाज को थोड़ा बेहतर बना सकते हैं।

अगर हम हर व्यक्ति को समान सम्मान दें, तो शायद यह फर्क धीरे–धीरे कम हो सकता है।

इसी सोच के साथ मैंने उसी दिन अपने लिए एक छोटा सा संकल्प लिया –

मैं अपनी जिंदगी में हर किसी के साथ एक जैसा व्यवहार करूँगी।

और अपने बच्चों व आने वाली पीढ़ी को भी यही सिखाने की कोशिश करूँगी कि हर व्यक्ति समान है,

चाहे अमीर हो या गरीब।

मेरी कोशिश यही रहेगी कि मुझसे मिलकर किसी को कभी भी छोटा या कमतर महसूस न हो।

क्योंकि मैंने महसूस किया है –

पैसा सुविधा दे सकता है, लेकिन असली पहचान इंसानियत और व्यवहार से बनती है।

''मेहमान तो दोनों ही थे, फर्क सिर्फ इतना था कि एक का स्वागत मुस्कान से हुआ और दूसरे का औपचारिकता से।

उसी पल महसूस हुआ कि अमीरी–गरीबी अक्सर घरों में नहीं, नजरों में बसी होती है।''

*****

जीवन में वित्तीय प्रबंधन का महत्व

अवनीश कुमार
सुपुत्र प्रेमजी कुमार

"बूंद–बूंद से सागर भरता है।" यह कहावत वित्तीय प्रबंधन के महत्व को अत्यंत सरलता से समझाती है। जीवन में सफलता केवल अधिक धन कमाने से नहीं मिलती, बल्कि उपलब्ध धन का सही ढंग से उपयोग करने की क्षमता ही वास्तविक आर्थिक समृद्धि का आधार होती है। आज के बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश में वित्तीय प्रबंधन प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक अनिवार्य जीवन–कौशल बन चुका है।

वित्तीय प्रबंधन का अर्थ है–अपनी आय, व्यय, बचत और निवेश का सुनियोजित एवं संतुलित प्रबंधन। इसका उद्देश्य केवल धन बचाना नहीं, बल्कि वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य को भी आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाना है। यदि व्यक्ति अपनी आय के अनुसार खर्च करता है, नियमित बचत की आदत विकसित करता है तथा सोच–समझकर निवेश करता है, तो वह जीवन की अनेक आर्थिक चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना कर सकता है।

आज उपभोक्तावाद और दिखावे की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। आकर्षक विज्ञापनों, ऑनलाइन खरीदारी और आसान ऋण सुविधाओं के कारण लोग अक्सर अपनी आवश्यकता से अधिक खर्च कर देते हैं। परिणामस्वरूप वे कर्ज के बोझ तले दब जाते हैं। ऐसी स्थिति से बचने के लिए वित्तीय अनुशासन आवश्यक है। बजट बनाकर खर्च करना, आय का एक निश्चित भाग बचत के लिए अलग रखना तथा अनावश्यक खर्चों से बचना वित्तीय प्रबंधन के महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं।

वित्तीय प्रबंधन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह व्यक्ति को भविष्य के लिए तैयार करता है। जीवन अनिश्चितताओं से भरा है। बीमारी, दुर्घटना, प्राकृतिक आपदा, नौकरी छूटना अथवा अन्य आपातकालीन परिस्थितियाँ कभी भी उत्पन्न हो सकती हैं। यदि व्यक्ति के पास पर्याप्त बचत और उचित वित्तीय योजना हो, तो वह ऐसे कठिन समय में भी बिना घबराए परिस्थितियों का सामना कर सकता है। इसलिए विशेषज्ञ भी आपातकालीन निधि (Emergency Fund) बनाने पर विशेष बल देते हैं।

विद्यार्थियों के लिए भी वित्तीय प्रबंधन का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। यदि बचपन से ही बच्चों में धन का महत्व, बचत की आदत और जिम्मेदारीपूर्वक खर्च करने की समझ विकसित की जाए, तो वे भविष्य में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। विद्यालयों में वित्तीय साक्षरता पर विशेष ध्यान देना समय की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थी बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, निवेश, बीमा और कर (Tax) जैसी मूलभूत वित्तीय अवधारणाओं से परिचित हो सकें।

इसके अतिरिक्त, वित्तीय प्रबंधन केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं है। जब नागरिक आर्थिक रूप से जागरूक होते हैं, नियमित बचत करते हैं, सही निवेश करते हैं और करों का ईमानदारी से भुगतान करते हैं, तब देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होती है। बैंकिंग प्रणाली को सुदृढ़ता मिलती है, उद्योगों को निवेश प्राप्त होता है और रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार वित्तीय प्रबंधन व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आज डिजिटल युग में वित्तीय लेन–देन पहले की अपेक्षा अधिक सरल हो गया है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल वॉलेट, यूपीआई और डिजिटल भुगतान सुविधाओं ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है। लेकिन इनके साथ साइबर सुरक्षा और वित्तीय सतर्कता भी उतनी ही आवश्यक है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षित डिजिटल लेन–देन, ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव तथा अपनी व्यक्तिगत वित्तीय जानकारी की सुरक्षा के प्रति जागरूक रहना चाहिए।

अंततः, वित्तीय प्रबंधन केवल धन का प्रबंधन नहीं, बल्कि जीवन को सुव्यवस्थित, सुरक्षित और सफल बनाने की कला है। यह व्यक्ति में अनुशासन, दूरदर्शिता, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है। आर्थिक रूप से सशक्त व्यक्ति ही अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में प्रभावी योगदान दे सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को आय के साथ–साथ वित्तीय प्रबंधन की कला भी अवश्य सीखनी चाहिए। सही वित्तीय योजना, नियमित बचत और विवेकपूर्ण निवेश ही सुखद, सुरक्षित और समृद्ध जीवन की मजबूत आधारशिला हैं।

*****

मोर

श्रीमती कीर्तिश्रीवास

सुबह सुबह जब मैं सैर को जाऊँ,
मोर देख मैं खुश हो जाऊँ।
आईआईएम परिसर में देखा जब,
रंग–बिरंगे पंख, आँखों को सुकून,
और दिल को मिला संतोष।
मोर मचाए शोर, जब बोले पिहुँ–पिहुँ,
बच्चे–बूढ़े सब हो जाएँ भावविभोर।
बारिश की गंध में पंख फैलाए,
जैसे इंद्रधनुष धरती पर उतर आए।
उड़ता हुआ मोर को देख एक ख्याल आया,
क्या मोर भी इतने ऊपर उड़ पाया।
प्यारा सा मोर देख जब मैंने उठाया मोबाइल,
सोचा, एक सेल्फी ले लूँ, तब उड़ गया वह मोर।
तब उड़ गया वह मोर, तब उड़ गया वह मोर।

मेरा आँगन

संजय कुमार दाश

मेरे आँगन की मिट्टी में
सपनों की खुशबू बसती है।
हर सुबह नई रोशनी लेकर
जीवन की राहें सजती हैं।
पंछियों की मधुर चहचहाहट,
मन को सुकून दे जाती है।
हवा के हल्के स्पर्श से
हरियाली मुस्कुराती है।
छोटे–छोटे उन पलों में
जीवन का सच्चा सुख है,
प्रकृति की गोद में बैठकर
मन हर दुख से मुक्त है।
मेरे आँगन की हर एक चीज
मुझसे कुछ कह जाती है,
सादगी भरे इस जीवन में
सच्ची खुशी मिल जाती है।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

श्रीमती गिरिजा कुमार, धर्मपत्नी
श्री प्रेमजी कुमार (अधिकारी)

''प्रकृति हमारी सबसे बड़ी धरोहर है। यदि प्रकृति सुरक्षित है, तो मानव जीवन सुरक्षित है।'' पर्यावरण वह प्राकृतिक परिवेश है जो हमें वायु, जल, भूमि, वनस्पति, जीव–जंतु तथा जीवन के लिए आवश्यक सभी संसाधन प्रदान करता है। मानव और पर्यावरण का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। स्वस्थ पर्यावरण के बिना स्वस्थ जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि के कारण पर्यावरण का संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण आज केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति का नैतिक और सामाजिक दायित्व बन गया है।

वर्तमान समय में वनों की अंधाधुंध कटाई, वायु एवं जल प्रदूषण, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग, रासायनिक पदार्थों का बढ़ता प्रयोग तथा प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन पर्यावरण को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं। परिणामस्वरूप वैश्विक तापमान में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, चक्रवात तथा जैव विविधता में कमी जैसी समस्याएँ लगातार बढ़ती जा रही हैं। इनका सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य, कृषि, जल संसाधनों और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ रहा है।

पर्यावरण संरक्षण का अर्थ केवल वृक्षारोपण करना नहीं है, बल्कि प्रकृति के प्रत्येक घटक का संरक्षण एवं संवर्धन करना है। हमें जल, वायु और मिट्टी को प्रदूषित होने से बचाना चाहिए तथा प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। ''कम उपयोग करें, पुनः उपयोग करें और पुनर्चक्रण करें'' (Reduce, Reuse and Recycle) का सिद्धांत अपनाकर हम पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इसके साथ ही ऊर्जा की बचत, वर्षा जल संचयन, सौर एवं पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग तथा प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े या जूट के थैलों का प्रयोग भी पर्यावरण संरक्षण के प्रभावी उपाय हैं।

विद्यार्थियों और युवाओं की भूमिका पर्यावरण संरक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि बचपन से ही बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम, स्वच्छता की आदत तथा पर्यावरणीय जिम्मेदारी का भाव विकसित किया जाए, तो वे भविष्य में जागरूक नागरिक बनेंगे। विद्यालयों में वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण कार्यक्रम तथा पर्यावरण जागरूकता रैलियों का आयोजन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। प्रत्येक नागरिक यदि अपने जन्मदिन या किसी विशेष अवसर पर एक पौधा लगाए और उसकी देखभाल का संकल्प ले, तो देश हरित और स्वच्छ बन सकता है।

सरकार द्वारा भी पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक योजनाएँ एवं कानून बनाए गए हैं। वृक्षारोपण, वन संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा तथा स्वच्छता अभियान जैसे प्रयास पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण हैं। किंतु केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। जब तक प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझेगा और अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण–अनुकूल आदतें नहीं अपनाएगा, तब तक स्थायी परिवर्तन संभव नहीं है।

अंततः यह कहना उचित होगा कि पर्यावरण संरक्षण वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की आधारशिला है। हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी केवल हमारी नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की भी धरोहर है। यदि आज हम प्रकृति का संरक्षण करेंगे, तभी भविष्य में स्वच्छ वायु, निर्मल जल, हरित वन और स्वस्थ जीवन का आनंद प्राप्त कर सकेंगे। आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि पर्यावरण की रक्षा करेंगे, अधिक से अधिक वृक्ष लगाएंगे, प्रदूषण को कम करेंगे और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीकर एक स्वच्छ, हरित और समृद्ध भारत के निर्माण में अपना योगदान देंगे।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

*****

जलवायु परिवर्तनः एक वैश्विक चुनौती

हेमंत सेठी,
वित्त एवं लेखा विभाग

जलवायु परिवर्तन आज विश्व की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। जलवायु परिवर्तन का अर्थ है लंबे समय तक पृथ्वी के तापमान, वर्षा और मौसम के सामान्य क्रम में होने वाला परिवर्तन। इसका मुख्य कारण मानव गतिविधियाँ हैं, जैसे जीवाश्म ईंधनों (कोयला, पेट्रोल और डीजल) का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई और औद्योगिक प्रदूषण। इनसे वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ती है, जिससे पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है।

जलवायु परिवर्तन के अनेक दुष्प्रभाव दिखाई दे रहे हैं। ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, बाढ़, सूखा, चक्रवात और हीटवेव जैसी प्राकृतिक आपदाएँ अधिक बार और अधिक तीव्रता से हो रही हैं। इसका प्रभाव कृषि, जल संसाधनों, जैव विविधता और मानव स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। कई पशु–पक्षियों और पौधों की प्रजातियाँ विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही हैं।

इस समस्या का समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए, ऊर्जा की बचत करनी चाहिए, सौर और पवन जैसी नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना चाहिए तथा प्रदूषण को कम करने के लिए सार्वजनिक परिवहन और पर्यावरण–अनुकूल साधनों को अपनाना चाहिए। प्लास्टिक का कम उपयोग और कचरे का उचित प्रबंधन भी महत्वपूर्ण है।

अंततः, जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरण की नहीं, बल्कि मानव जीवन और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य की भी गंभीर चुनौती है। यदि हम अभी से जिम्मेदारी के साथ कदम उठाएँ, तो जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को काफी हद तक कम किया जा सकता है और प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखा जा सकता है। पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है, क्योंकि आज उठाया गया हर छोटा कदम आने वाले कल को अधिक सुरक्षित और बेहतर बना सकता है।

*****

आउटसोर्सिंग: अवसर, सम्मान या शोषण

डॉ. कंचन विश्वकर्मा
उद्यानिकी विभाग

वैश्वीकरण के इस दौर में आउटसोर्सिंग आधुनिक आर्थिक संरचना का एक प्रमुख स्तंभ बन चुकी है। कंपनियाँ प्रतिस्पर्धा में बने रहने, लागत घटाने और दक्षता बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्य बाहरी एजेंसियों को सौंप रही हैं। भारत जैसे युवा–बहुल देश में इस व्यवस्था ने सूचना प्रौद्योगिकी, बीपीओ, ई–कॉमर्स, डिजिटल सेवाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य और डेटा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में व्यापक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए हैं। लाखों युवाओं को इससे आजीविका का साधन मिला है और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने हैं।

आउटसोर्सिंग ने युवा पीढ़ी को वैश्विक कार्य संस्कृति से जोड़ा है। नई तकनीकों का प्रयोग, समयबद्ध कार्यशैली और लक्ष्य–आधारित प्रदर्शन ने उनके व्यक्तित्व को पेशेवर आयाम प्रदान किया है। यह व्यवस्था कई युवाओं के लिए सामाजिक सम्मान और आत्मविश्वास अर्जित करने का माध्यम भी बनी है।

किन्तु इस सकारात्मक परिदृश्य के पीछे एक कठोर और चिंताजनक सच्चाई भी विद्यमान है शोषण, भेदभाव और संवेदनहीनता की प्रवृत्ति। आउटसोर्सिंग का मूल आधार प्रायः लागत–न्यूनकरण होता है। जब कंपनियाँ खर्च कम करने को प्राथमिकता देती हैं, तो इसका सीधा प्रभाव कर्मचारियों की वेतन संरचना और कार्य परिस्थितियों पर पड़ता है। बड़ी संख्या में युवा अल्पकालिक अनुबंधों पर नियुक्त किए जाते हैं, जिसमें स्थायित्व नहीं होता। ये युवा कंपनियों/संस्थानों के लिए तो काम करते हैं लेकिन ये कंपनियों/संस्थानों के नहीं होते हैं इसलिए बाहरी एजेंसी जो चाहे वो नियम उनपर लागू कर दे।

कुछ बड़े कंपनियों/संस्थानों को छोड़कर अधिकांश जगहों पर आउटसोर्सिंग एक शोषण मात्र रह गया है एक प्रोजेक्ट समाप्त होते ही रोजगार भी समाप्त हो सकता है। सबसे गंभीर समस्या है समान कार्य के लिए आसमान वेतन। आउटसोर्स कर्मचारी कई सुविधाओं से वंचित रहते हैं। इससे उनके जीवन में असुरक्षा की भावना गहराती है। युवा, अनुभवहीनता और बेरोजगारी के भय के कारण, इन परिस्थितियों को सहने को विवश हो जाते हैं। ग्रामीण या आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से आने वाले युवाओं के लिए स्थिति और भी जटिल हो सकती है। कम वेतन, कार्यस्थल की राजनीतिऔर महानगरों में बढ़ती जीवन–यापन लागत के बीच संतुलन बनाना कठिन हो जाता है। आर्थिक दबाव, परिवार की अपेक्षाएँ और भविष्य की अनिश्चितता मिलकर मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। अवसाद, चिंता और भावनात्मक थकान आज आउटसोर्सिंग क्षेत्र में कार्यरत युवाओं की एक वास्तविक समस्या बनती जा रही है।

शोषण का ही एक और आयाम है कौशल का सीमित उपयोग। जहाँ उनकी रचनात्मक क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता, क्योंकि हर किसी का उद्देश्य वेतन पाना ही नहीं होता। कई मामलों में श्रम कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन की कमी भी शोषण को बढ़ावा देती है। अनुबंध की जटिल शर्तें, शिकायत निवारण की अपर्याप्त व्यवस्था के कारण कर्मचारी अपने अधिकारों की रक्षा करने में असमर्थ रहते हैं। परिणामस्वरूप, आउटसोर्सिंग व्यवस्था अवसर से अधिक असुरक्षा का पर्याय बन जाती है।

इस परिस्थिति में आवश्यक है कि आउटसोर्सिंग को केवल आर्थिक लाभ की दृष्टि से न देखा जाए, बल्कि संवेदनाओं, मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय के परिप्रेक्ष्य में भी समझा जाए। श्रम कानूनों का पालन तो होता है लेकिन उसमें भी भेदरहित नीतियों को ईमानदारी से लागू करना तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को विस्तार से लागू करना एक आवश्यक पहल हो सकती है। कंपनियों/संस्थानों को यह स्वीकार करना होगा कि कर्मचारी केवल "लागत" नहीं, बल्कि दीर्घकालिक सफलता और उनके कंपनियों/संस्थानों की उन्नति में बराबर के भागीदार हैं और उनकी संवेदनाएँ भी उनके कंपनियों/संस्थानों से जुडी हुई है।

निष्कर्षतः, आउटसोर्सिंग एक दोधारी तलवार है। यह युवा पीढ़ी को अवसर और सम्मान प्रदान कर सकती है, परंतु यदि इसे संतुलित और न्यायसंगत ढंग से संचालित न किया जाए, तो यह शोषण और आसमानता को भी बढ़ा सकती है। आज आवश्यकता है ऐसी नीतियों और संवेदनशील दृष्टिकोण की, जो युवा शक्ति को सुरक्षित, सम्मानजनक और स्थायी भविष्य प्रदान कर सके।

*****

बूंदें हैं अमृत समान

आरूषि चौधरी
सुपुत्री श्री मुकेश चौधरी,
मानव संसाधन कार्यालय

बूंदें हैं अमृत समान, बूंदें ईश्वर का वरदान।
तपती धरती, तपता आसमान।
तपते खेत और खलिहान
बूंदें लाती हरियाली, बूंदें लाती खुशहाली।
बूंदों से हर्षाये खेतिहर, मजदूर और किसान।
देश की उन्नति, प्रगति का सार हैं बूंदें।
मानवजाति का आधार हैं बूंदें।
इनके बिना नहीं कल्पना भविष्य की।
इनके बिना न संभव हो वर्तमान
अब समय है सम्भल जाये हम।
सहेजें वर्षा जल, इसका न करें दुरूपयोग हम।
अगर रूठ गईं जो ये हमसे कल को।
तरसेगें अंत में बूंद–बूंद जल को।
ये जीवनदायिनी हमारी, इनका करें उचित सम्मान।
बूंदें हैं अमृत समान, बूंदें ईश्वर का वरदान।

*****

ऐसे ही नहीं माँ कहलाती है...

निर्मला सिसोदिया,
जूनियर ऑफिस एसोसिएट

शब्दों का खेल वह ऐसे खेल जाती है,
"मैं ठीक हूँ" इतना कहकर सब झेल जाती है।
सुकून–ए–महफिल तो उसके होने से है,
वह न हो तो महफिल भी सूनी पड़ जाती है।
उसका होना हमें दुनिया में लाता है,
दुनिया कैसी है, उसकी आँखों से दिख जाता है।
उसका पहला स्पर्श हमें उम्रभर भाता है,
उसकी जागती आँखों से सपना दिख जाता है।
उसका साथ मुझे बेफिक्र कर जाता है,
उसका विश्वास मुझे खुशियों से भर जाता है।
पास होती है वह तो दिन हँसकर गुजर जाता है,
उसकी हिम्मत के आगे तो दुःख भी मर जाता है।
उसकी खिलखिलाती हँसी दिल जीत जाती है,
उसकी उदास आँखें मायूस कर जाती हैं।
वह खुद को भुलाकर हमारी हो जाती है,
ऐसे ही नहीं वह "माँ" कहलाती है।

*****

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के परिणाम पर : विश्वास और अविश्वास

अनिल कौशल
(अधिकारी, नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटर)

आज के डिजिटल युग में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (AI) सर्वाधिक चर्चा का विषय है। ChatGPT और Gemini जैसे एडवांस AI टूल्स के आने के बाद से, मशीनों ने इंसानों की तरह सोचना, लिखना और काम करना शुरू कर दिया है। आज आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस (AI) एक बहुत ही कार्यसक्षम टूल रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कर चुका है। सर्वविदित है कि, AI चंद सेकंडो में कई तरह की जानकारी दे सकता है। परन्तु इनके जवाबों पर आँख मूंदकर 100 प्रतिशत भरोसा नहीं किया जा सकता। इसके तेज तकनीकी विकास ने पूरी दुनिया में एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। हमे यह समझना होगा कि AI कोई इंसान नहीं है, जो सच या झूठ का फर्क समझता हो, मानवीय संवेदना और भावनात्मक लगाव जैसे मानवीय व्यवहार की समझ हो। यह इन्टरनेट पर उपलब्ध विशाल डाटाबेस के आधार पर सिर्फ शब्दों के पैटर्न पहचानता है, और यह अनुमान लगाता है कि आगामी इनफार्मेशन क्या होना चाहिए। इसके दिए उत्तर और इनफार्मेशन की गुणवत्ता पर पूरी तरह विश्वसनीय नहीं है। हॉलाकि ये टूल स्वयं भी इसका अस्वीकारण देते है।

आइए उदाहरणों के साथ समझते हैं कि AI पर कब भरोसा किया जा सकता है और कब नहीं:

1. जहाँ AI पर भरोसा किया जा सकता है

   निम्नलिखित कार्यो में AI अत्यन्त सटीक जानकारी देता है, क्योंकि इनका डेटा फिक्स होता है या यह रचनात्मक काम होते हैं:

- ○ सामान्य ज्ञान और तथ्य :उदाहरण: अगर आप पूछें, ''पानी का रासायनिक सूत्र (Chemical Formula) क्या है?'' या ''भारत के पहले प्रधानमंत्री कौन थे?'', तो इस तरह के सवालों के जवाब AI सामान्यतः सही और सटीक जवाब देगा।
- **ड्राफ्टिंग और क्रिएटिव कार्य :**
- ○ उदाहरण: ''अपने बॉस को छुट्टी के लिए एक प्रोफेशनल ईमेल लिखें'' या ''किसी 10 पेज के लेख को संक्षेप में या संक्षिप्त विवरण बनाएं।'' इस प्रकार के कार्य में AI बहुत ही कमाल का प्रदर्शन करता है।
- **बेसिक कोडिंग और प्रोग्रामिंग:**
- ○ उदाहरण: अगर आप कंप्यूटर कोडिंग में कोई गलती (Bug) ढूँढना चाहते हैं या किसी प्रोग्रामिंग लैंग्वेज में कोई कोड लिखवाना चाहते हैं, तो AI बहुत आसानी से मदद कर सकता है और इसके उत्तर भी भरोसेमंद होते है।

2. जहाँ AI पर बिल्कुल भरोसा नहीं करना चाहिए

   कभी–कभी AI गलत जानकारी को भी इतने अधिक आत्मविश्वास के साथ पेश करता है, कि वह

बिल्कुल सच लगती है। इस तकनीकी खामी को 'AI Hallucination' (AI का भ्रम) कहा जाता है।

- **मेडिकल और हेल्थ से जुड़ी सलाहः**
  - अगर आप AI से पूछें, ''मेरे पेट के दाहिने हिस्से में दर्द है और बुखार है, मुझे कौन सी दवा लेनी चाहिए? AI आपको कुछ बीमारियों और दवाओं के नाम बता देगा। लेकिन यह अत्यन्त खतरनाक है, क्योंकि AI आपका चेकअप नहीं कर सकता। ना उसको आपके शरीर और उसके अन्य लक्षणों की जानकारी है। ऐसे मामलों में सिर्फ डॉक्टर पर भरोसा करें।
- **कानूनी सलाह और केस स्टडीः**
  - **(सत्य घटना):** अमेरिका में एक वकील ने कोर्ट में अपनी बहस मजबूत करने के लिए ChatGPT से कुछ पुराने केस के उदाहरण मांगे। AI ने बहुत ही शानदार तरीके से कुछ पुराने केस के नाम और जजमेंट लिख कर दे दिए। जब कोर्ट में जांच हुई, तो पता चला कि AI ने वो सारे केस खुद मन से गढ़े थे (Fake Cases), असल में ऐसा कोई केस कभी हुआ ही नहीं था! इसके लिए वकील को कोर्ट में जुर्माना भरना पड़ा।

    इस केस ने पूरी दुनिया का ध्यान इस ओर खींचा था कि AI पर आँख मूंदकर भरोसा करना कितना भारी पड़ सकता है।

    असली घटनाः न्यूयॉर्क का 'चैटजीपीटी (ChatGPT) वकील' केस
  - **केस का नामः** Mata v. Avianca Airlines (मई 2023)
  - **स्थानः** न्यूयॉर्क, अमेरिका (New York, USA)

क्या हुआ था?

- अमेरिका में 'स्टीवन श्वार्ट्ज' (Steven Schwartz) नाम के एक वकील ने कोर्ट में अपनी दलीलें मजबूत करने के लिए रिसर्च करने हेतु ChatGPT का इस्तेमाल किया।
- ChatGPT ने उन्हें 6 पुराने कोर्ट केस के उदाहरण और उनके फैसले (Judgments) लिखकर दिए (जिसमें Varghese v- China Southern Airline नाम का एक केस भी शामिल था)।
- वकील ने सावधानी के तौर पर ChatGPT से पूछा भी कि ''क्या ये केस असली हैं?'', तो AI ने पूरे आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया, ''हाँ, ये केस बिल्कुल असली हैं और लीगल डेटाबेस में मौजूद हैं।''
- वकील ने बिना क्रॉस–चेक किए वह डॉक्यूमेंट कोर्ट में जज के सामने पेश कर दिया।

AI का झूठ (Hallucination) कैसे पकड़ा गया?

- जब विपक्षी वकीलों और जज (Judge Kevin Castel) ने उन पुराने केस को कोर्ट के आधिकारिक रिकॉर्ड में ढूँढने की कोशिश की, तो उन्हें कुछ नहीं मिला।
- बाद में जांच में साबित हुआ किवे सारे केस ChatGPT ने खुद अपने मन से गढ़े (Invent) किए थे। असल जिंदगी में ऐसा कोई कोर्ट केस कभी हुआ ही नहीं था! यह AI Hallucination का एक क्लासिक मामला था।

नतीजाः

- जज ने वकील स्टीवन श्वार्ट्ज पर $5,000 (लगभग 4 लाख रुपये) का जुर्माना लगाया और उन्हें कोर्ट में झूठी जानकारी देने और लापरवाही बरतने के लिए कड़ी फटकार लगाई।

रेफरेंस और लिंक्स (References)

BBC News:

- सर्च करेंः "US lawyer admits using AI for case research BBC"

2. The New York Times%* सर्च करेंः "Here's What Happens When Your Lawyer Uses ChatGPT" (तारीखः 27 मई, 2023)

- Reuters: सर्च करेंः "New York lawyers sanctioned for using fake ChatGPT cases" (तारीखः 23 जून, 2023)

- https:\\www.reuters-com\legal\new-york-lawyers-sanctioned-using-fake-chatgpt-cases-legal-brief-2023-06&22]

यह घटना इस बात का सबसे बड़ा और स्पष्ट प्रमाण है कि AI बहुत आत्मविश्वासी होकर गलत जानकारी दे सकता है, इसलिए कानूनी, मेडिकल या आर्थिक मामलों में इंसान द्वारा की गई जांच हमेशा सबसे जरूरी है।

एयर कनाडा ने चैटबॉट के झूठ के लिए हर्जाना दिया

फरवरी 2024 में, एयर कनाडा को एक यात्री को हर्जाना देने का आदेश दिया गया, क्योंकि उसके वर्चुअल असिस्टेंट ने एक बहुत ही मुश्किल समय में उसे गलत जानकारी दी थी।

नवंबर 2023 में अपनी दादी की मौत के बाद, जेक मोफैट ने शोक–संबंधी किराए (bereavement fares) के बारे में एयर कनाडा के वर्चुअल असिस्टेंट से सलाह ली। चैटबॉट ने उसे बताया कि वह वैंकूवर से टोरंटो के लिए सामान्य कीमत वाला टिकट खरीद सकता है और टिकट खरीदने के 90 दिनों के अंदर शोक–संबंधी छूट के लिए आवेदन कर सकता है। उस सलाह पर अमल करते हुए, मोफैट ने टोरंटो के लिए CA$794. 98 का एक–तरफा टिकट और वैंकूवर वापसी के लिए CA$845.38 का टिकट खरीदा।

लेकिन जब मोफैट ने अपने रिफंड का दावा पेश किया, तो एयरलाइन ने उसे मना कर दिया, यह कहते हुए कि टिकट खरीदने के बाद शोक–संबंधी किराए का दावा नहीं किया जा सकता।

मोफैट ने एयर कनाडा के खिलाफ कनाडा के एक ट्रिब्यूनल में शिकायत की, यह दावा करते हुए कि एयरलाइन ने लापरवाही बरती और अपने वर्चुअल असिस्टेंट के जरिए गलत जानकारी दी। ट्रिब्यूनल के सदस्य क्रिस्टोफर रिवर्स के अनुसार, एयर कनाडा ने यह तर्क दिया कि उसके चैटबॉट द्वारा दी गई जानकारी के लिए उसे जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।

रिवर्स ने इस तर्क को खारिज कर दिया, यह कहते हुए कि एयरलाइन ने ''यह सुनिश्चित करने के लिए उचित सावधानी नहीं बरती कि उसका चैटबॉट सही जानकारी दे,'' इसलिए उन्होंने एयरलाइन को मोफैट को CA$812.02 का भुगतान करने का आदेश दिया, जिसमें हर्जाने के तौर पर CA$650.88 शामिल थे।

उपरोक्त केस आप इस लिंक पर पढ़ सकते है।

https:\\www.cio.com\article\190888\5-famous-analytics-and-ai-disasters.html

- **ताजा खबरें या रीयल–टाइम डेटाः**

- अगर आप शेयर मार्केट में पैसे लगाने के लिए AI से पूछें कि ''आज कौन सा शेयर सबसे ज्यादा मुनाफा देगा?'', तो इसका जवाब नुकसानदायक हो सकता है। शेयर बाजार पल–पल बदलता है, कृपया ये समझे कि AI भविष्य नहीं देख सकता, वह सिर्फ उसके पास उपलब्ध डाटा का विशलेषण करके उत्तर देता है।

- **गणित और लॉजिक :**

- AI एक कैलकुलेटर नहीं है, यह एक 'लैंग्वेज मॉडल' (भाषा को समझने वाला टूल) है। कभी–कभी यह बहुत आसान पहेलियों या घुमावदार गणित के सवालों में भी असामान्य गलतियां कर देता है।

दिन ब दिन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के टूल्स ज्यादा परिष्कृत और उपयोगी होते जा रहे हैं, परिणामतः इंडस्ट्रीज और इसके उपयोगकर्ता इसे अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने, पैसे बचाने और इंसानी फैसलों को और बेहतर बनाने के लिए इस्तेमाल करने को लेकर उत्सुक हैं। AI के बढ़ते उपयोग से इसके परिणामो से होने वाले पक्षपात, निजता, भरोसे और सुरक्षा से सम्बंधित प्रश्न भी उठने लगे हैं।

AI और इसके व्यापक तकनीकी सिस्टम के उपयोग और परिणामो से उत्पन्न कई प्रकार के जोखिम और जवाबदारी को भी परिभाषित करने की आवश्यकता है। AI के जोखिम और उसके जिम्मेदारी के मध्य संबंध, विभिन्न सांस्कृतिक, कानूनी, क्षेत्रीय और सामाजिक संदर्भों में अलग–अलग होता है। अतः AI से प्राप्त किसी परिणाम का असर गंभीर हो, जैसे कि किसी जान और आजादी दांव पर लग जाए। ऐसी स्थिति की समीक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, एवं इसके लिए AI डेवलपर्स और उन्हें लागू करने वालों को इसकी पारदर्शिता और जवाबदेही से जुड़ी प्रक्रियाओं में, स्थिति के अनुसार बदलाव करने पर विचार करना चाहिए।

AI के नुकसान को कम करने के लिए इसके संगठनात्मक प्रक्रियाओं, निजता, कानूनी प्रक्रियाओं, मानवीय एवं भावनात्मक मूल्यों, सुरक्षा से जुड़े जोखिम प्रबंधन को और अधिक जवाबदेह सिस्टम बनाने पर विचार किया जान चाहिए। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के सुरक्षित उपयोग के लिए भी विस्तृत मार्गदर्शिका बनाने की भी आवश्यकता है।

*****

❖ ***राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ट और गहरा संबंध है।***

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

❖ ***हिंदी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असम्भव है।***

– गिरधर शर्मा।

❖ ***भाषा ही राष्ट्र का जीवन है।***

– पुरषोत्तमदास टंडन।

लोक एवं जनजातीय कला: मिट्टी की सौंधी महक और सांस्कृतिक विरासत का जीवंत उत्सव

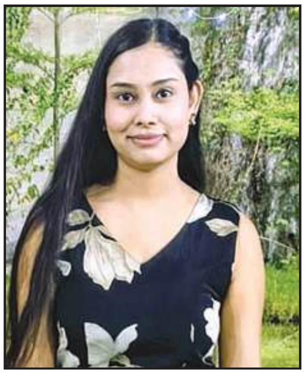

सोनिया चौहान,
सामान्य कर्तव्य सहायक (लेखा)

भारत की आत्मा उसकी विविधता में बसती है, और इस विविधता को सबसे खूबसूरत अभिव्यक्ति मिलती है हमारी 'लोक एवं जनजातीय कलाओं' (Folk and Tribal Arts) में। आधुनिकता की चकाचौंध से दूर, देश के सुदूर गांवों और जंगलों में सदियों से पनप रही यह कलाएं केवल मनोरंजन या सजावट का साधन नहीं हैं। ये हमारे पुरखों की जीवनशैली, उनके विश्वास, प्रकृति के प्रति उनके प्रेम और उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जीवंत दस्तावेज हैं।

कहा जाता है कि शास्त्रीय कला जहाँ नियमों और व्याकरण से बंधी होती है, वहीं लोक और जनजातीय कला सीधे दिल से निकलती है। इसमें कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं होता, बल्कि यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी विरासत में मिलती है।

प्रकृति और जनजीवन का अनूठा संगम

लोक और जनजातीय कला की सबसे बड़ी विशेषता इसका प्रकृति से जुड़ाव है। महाराष्ट्र की वारली कला (Warli Art) को ही लीजिए। इसमें त्रिकोण, वृत्त और रेखाओं जैसी बुनियादी आकृतियों का उपयोग करके दैनिक जीवन, नृत्य और खेती को दर्शाया जाता है।

इसी तरह बिहार की विश्वप्रसिद्ध मधुबनी या मिथिला कला प्राचीन काल से ही महिलाओं के सामाजिक जीवन का हिस्सा रही है। शुरुआत में मिट्टी की दीवारों पर बनाई जाने वाली यह कला अब कपड़ों और कागजों पर उतरकर वैश्विक मंचों पर अपनी धाक जमा चुकी है। इसमें चटकीले प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है, जो फूलों, पत्तियों और मसालों से तैयार किए जाते हैं।

यदि हम पूर्वी भारत का रुख करें, तो ओडिशा और पश्चिम बंगाल की पट्टचित्र कला (Pattachitra) दिखाई देती है। कपड़ों के टुकड़ों (पट) पर पौराणिक कथाओं को उकेरने की यह परंपरा आज भी उतनी ही जीवंत है। वहीं मध्य प्रदेश की गोंद कला (Gond Art) अपनी महीन रेखाओं और बिंदुओं (डॉट्स) के अनूठे संयोजन के लिए जानी जाती है, जहाँ पेड़–पौधों और जानवरों को एक जादुई और काल्पनिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

कला में छुपा 'सस्टेनेबिलिटी' का संदेश

आज पूरी दुनिया जिस पर्यावरण संरक्षण और 'सस्टेनेबिलिटी' (सतत विकास) की बात कर रही है, हमारी जनजातीय कलाएं सदियों से उसका पालन कर रही हैं। इन कलाकृतियों में उपयोग होने वाले रंग और ब्रश पूरी तरह इको–फ्रेंडली होते हैं। चावल का घोल, हल्दी, नील, पलाश के फूल और गेरू जैसी प्राकृतिक सामग्रियों से रंग बनाए जाते हैं। तूलिका (ब्रश) के लिए बांस की कूची या सूती धागों का प्रयोग किया जाता है। यह इस बात का प्रमाण है कि कला और प्रकृति का रिश्ता कितना गहरा और सहयोगात्मक हो सकता है।

दीवारों से वैश्विक दीर्घाओं (Galleries) तक का सफर

एक समय था जब ये कलाएं केवल त्योहारों, शादियों या फसल कटाई के अवसरों पर घरों की दीवारों और आंगनों तक सीमित थीं। लेकिन आज समय बदल चुका है। राजस्थान की फड़ चित्रकारी, आंध्र प्रदेश की कलमकारी, और गुजरात की पिथौरा कला आज बड़े–बड़े शहरों के कला दीर्घाओं, फाइव–स्टार होटलों और अंतरराष्ट्रीय फैशन शो का हिस्सा बन चुकी हैं।

इंटरनेट और सोशल मीडिया के इस दौर में इन पारंपरिक कलाकारों को एक नया मंच मिला है। लोग अब 'मास–प्रोड्यूस्ड' (मशीनी) चीजों के बजाय इन हस्तनिर्मित कलाकृतियों की कद्र कर रहे हैं, क्योंकि इनमें कलाकार की मेहनत और उसकी संस्कृति की खुशबू रची–बसी होती है।

संरक्षण की चुनौती और हमारी जिम्मेदारी

हालाँकि, इस वैश्विक पहचान के बावजूद कई स्थानीय कलाएं आज भी लुप्त होने की कगार पर हैं। नई पीढ़ी के कलाकार आर्थिक तंगी और उचित बाजार न मिलने के कारण इस विरासत से दूर हो रहे हैं। इस अमूल्य धरोहर को बचाने की जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं, बल्कि समाज के रूप में हमारी भी है।

हमें अपने घरों में इन पारंपरिक कलाओं को जगह देनी होगी। जब हम किसी हस्तशिल्प मेले से एक लोक कलाकृति खरीदते हैं, तो हम केवल एक पेंटिंग नहीं खरीदते, बल्कि उस कला को जिंदा रखने वाले एक पूरे परिवार के हुनर और हौसले को सहारा देते हैं।

उपसंहार

लोक और जनजातीय कलाएं भारत का वह अनमोल खजाना हैं, जो हमें याद दिलाता है कि हमारी जड़ें कहाँ हैं। यह कला हमें सिखाती है कि सीमित संसाधनों में भी कैसे खूबसूरती को तलाशा जा सकता है। इस मिट्टी की सौंधी महक को बचाए रखना और इसे आने वाली पीढ़ियों तक सौंपना ही हमारी संस्कृति के प्रति सच्ची सेवा होगी।

*****

- ❖ *राष्ट्रभाषा राष्ट्रीयता का मुख्य अंश है।*

  – श्रीमती सौ.चि. रमणम्मा देव।

- ❖ *बानी हिंदी भाषन की महरानी, चंद्र, सूर, तुलसी से जामें भए सुकवि लासानी।*

  – पं. जगन्नाथ चतुर्वेदी।

- ❖ *जय जय राष्ट्रभाषा जननि। जयति जय जय गुण उजागर राष्ट्रमंगलकरनि।*

  – देवी प्रसाद गुप्ता।

- ❖ *विज्ञान के बहुत से अंगों का मूल हमारे पुरातन साहित्य में निहित है।*

  – सूर्यनारायण व्यास।

फोमो (FOMO) – "कुछ छूट जाने का डर"

योगेश प्यासे
आईपीएस कार्यालय

फोमो, "Fear Of Missing Out" का संक्षिप्त रूप है। यह एक विशेष शब्द है जिसे 2004 में सोशल नेटवर्किंग साइटों पर देखी जाने वाली एक प्रवृत्ति को बताने के लिए गढ़ा गया था। फोमो में मुख्यतः दो बातें शामिल होती हैं – पहली, कुछ छूट जाने की अनुभूति, और दूसरी, इन सामाजिक संबंधों को बनाए रखने की एक बाध्यकारी (compulsive) प्रवृत्ति। दरअसल, फोमो इस विश्वास के प्रति एक भावनात्मक प्रतिक्रिया है कि दूसरे लोग हमसे बेहतर और अधिक संतोषजनक जीवन जी रहे हैं, या यह कि हमारे हाथ से कोई महत्वपूर्ण अवसर निकल रहा है। यह समस्या किशोरों में सबसे अधिक देखी जाती है, क्योंकि वे अपेक्षाकृत ज्यादा अकेलापन, कम आत्म–सम्मान और कम आत्म–करुणा महसूस करते हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि हर समय उपलब्ध रहने का सामाजिक दबाव और लगातार आने वाली सूचनाएं फोमो को और बढ़ा देती हैं।

आज के समय में फोमो एक गंभीर समस्या बन चुकी है। यह अत्यधिक चिंता, अवसाद, अप्रत्याशित तनाव और नींद से जुड़ी समस्याओं को जन्म देती है। कई बार यह किसी व्यक्ति के लिए मानसिक आघात (trauma) का कारण भी बन सकती है। एक निदान योग्य मनोवैज्ञानिक स्थिति होने के साथ–साथ, यह शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है – जैसे मनोदशा में उतार–चढ़ाव, अकेलापन, हीन भावना और मतली जैसी परेशानियाँ।

अब फोमो का इलाज मनोवैज्ञानिक चिकित्साओं के जरिए किया जा रहा है, जिसमें विवेकपूर्ण सोच अपनाना, "सब कुछ पा लेने" की चाह छोड़कर इस बात पर ध्यान देना कि असल में हमें खुशी और संतोष किस चीज से मिलता है, और अपने स्वयं के अनुभवों व खुशियों का आनंद लेना शामिल है।

फोमो अकेली ऐसी स्थिति नहीं है – इसके अलावा भी कई अन्य संबंधित स्थितियाँ मौजूद हैं, जैसेः

रोमो (ROMO) – "Reality of Missing Out" (कोविड–19 महामारी के दौरान गढ़ा गया शब्द, जो यह जानते हुए कि आप वाकई कुछ छूट रहे हैं, होने वाली भावना को दर्शाता है)

फोबो (FOBO) – "Fear Of a Better Option" (बेहतर विकल्प छूट जाने का डर)

फोमोमो (FOMOMO) – "Fear Of the Mystery Of Missing Out" (जब मोबाइल डिवाइस उपयोग में न हो, तब यह न जान पाने की बेचैनी कि सोशल मीडिया पर क्या छूट रहा है)

मोमो (MOMO), फोजी (FOJI), नीमो (NEMO), स्लोमो (SLOMO)

जोमो (JOMO) – "Joy Of Missing Out" (कुछ छूट जाने में भी खुशी महसूस करना–यह फोमो के बिल्कुल विपरीत और एक स्वस्थ दृष्टिकोण माना जाता है)

लेकिन इन सबसे ज्यादा जरूरी यह है कि हम फोमो को एक मनोवैज्ञानिक समस्या बनाने के बजाय इसे अपनी ताकत में बदलें – यानी इसे अपनी इच्छाओं और व्यवहार को सकारात्मक दिशा में संचालित करने दें, न कि सिर्फ दूसरों के पास जो है उसे पाने की चाहत में उलझे रहें। आत्म–जागरूकता (self-awareness) और संतुलित डिजिटल आदतों के माध्यम से, फोमो को नकारात्मक भावना से एक प्रेरक शक्ति में बदला जा सकता है, जो हमें वास्तव में सार्थक लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ने में मदद करे – न कि केवल दूसरों की नकल करने में।

अद्वैत में द्वैत (एक आध्यामित्क यात्रा)

प्रवाह शुक्ल
सहायक (वित्त एवं लेखा विभाग)

यह लेख अपने गुरु देव की प्रेरणा से ही लिख पा रहा हूँ जिन्होंने सच्चा और पवित्र ज्ञान प्रदान किया उनके आशीर्वाद के बिना यह सम्भव नहीं है . जैसे सांसारिक पढ़ाई में गुरु की आवश्यकता है वैसे ही आध्यात्मिक पढ़ाई में भी सद्गुरु की अत्यधिक आवश्यकता है ! यहाँ गुरु से तात्पर्य केवल गुरु के शरीर से ही नहीं परन्तु उस चौतन्य तत्त्व से भी है तो कण–कण में विद्यमान है। . . जय श्री गुरुवे नमः

क्या एक छोटे बच्चे को देखा है आपने? वो कैसे हर वस्तु व्यक्ति, परिस्थिति को स्वीकार कर लेता है? क्यों एक छोटा बच्चा ध् बच्ची इतने कोमल और निष्पाप लगते हैं? कितने प्राकृतिक होते हैं? भूख लगती है तो रो देते हैं और प्रसन्न होते हैं तो हँस देते हैं, चोट लगती है तो रो देते हैं, नींद आती है तो सो जाते हैं। कितना अच्छा लगता है बच्चे को देखकर कि उसको शब्दों में नहीं पिरोया जा सकता है। फिर धीरे–धीरे जब वो बड़ा होने लगता है और माया का प्रभाव पड़ने लगता है तो उसके अंदर विविद प्रकार के विकार जन्म लेने लगते हैं। फिर उसके नाटक चालू होने लगते हैं।

क्या कभी सोचा है आपने कि जो वास्तु आपको दिखाई दे रही है वही दूसरो को भी दिखाई देती है? किसने बताया आपको कि आप जो देख रहे हैं आपसे भिन्न है? सबसे पहली गुरु माँ होती है। वही बच्चे को बताती है कि ये तुम्हारे पिता हैं और ये तुम्हारे भाई हैं। बच्चे को अपना शरीर से तादात्म्य हो जाता है और अब तो अपने आप को शरीर मानने लगता है। वो शरीर एक उस चौतन्य का अंश है जिसने यह प्रकृति बनाई लेकिन माया का प्रभाव इतना गहरा है कि बिना गुरु ज्ञान के पता नहीं चल सकता कि असल में मामला क्या है। फिर बच्चा बड़ा होते होते इतना माया में घिर जाता कि अपना शुद्ध रूप भूल जाता है और परमात्मा से विमुख होकर ये सोचने लगता है कि वही सब कर रहा है और जब कुछ नहीं होता है या किसी भी परिस्थिति में असफल होता है तो उसके मन में भय विराजमान हो जाता है और हर क्षण यही सोचता है कि मैं (वो बच्चा जो बड़ा हो गया) हर वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति को कैसे नियंत्रित करूँ। फिर इसी में उसका जीवन बीतने लगता है। फिर वो बच्चा माया के आधीन विवश होकर वही करता है जो उसका अहंकार करवाता है अर्थात जो उसको सही लगता है। चित्त में जो भी जमा होता है और मन में जो आता है और बुद्धि जैसे भी काम करती है वैसे ही काम करता चला जाता है।

फिर वो माया में इतना रम जाता है कि अपना वास्तविक स्वरूप को विस्मरण कर लेता है या कहें कि वास्तविक स्वरुप भूल जाता है। हालाकिं, वास्तविक स्वरूप तो तब स्मरण रहेगा जब किसी ने बताया हो वो कौन है। इसी भाग–दौड़ भरे जीवन में बहुत से उतार–चढ़ाव भी आते हैं जैसे कि स्वास्थ्य सही न रहना या कोई घटना हो जाना, किसी की मृत्यु हो जाना। ये सब घटनाएं कुछ सोचने पर विवश करती हैं परन्तु माया का प्रभाव (जो मायापति ने बनाई है) इतना प्रबल होता है कि फिर से उसी भाग–दौड़ में व्यक्ति में फंस जाता है और निकल ही पाता।

यदि हम ध्यान से देखें, अनुभव करें जो सूक्ष्म स्तर पर सोचें तो सब कार्य अपने आप हो रहा है। यदि आप ने एक गेंद फेंकी और वो दूसरे व्यक्ति के पास गयी तो आपको लगता है वो मैंने फेकीं लेकिन तनिक सोचिये–समझिये यदि आपके हाथों में रक्त का प्रवाह न होता तो क्या आप वो गेंद फेंक सकते थे? नहीं ना। यदि वायु न होती, गुरुत्वाकर्षण न होता तो क्या गेंद जाती और नीचे आती? क्या अंतरिक्ष में ऐसा होता है? नहीं ना। फिर हम ये कैसे कह सकते हैं कि जो काम हम रहे है वो पूर्णतः हम ही कर रहे हैं? असल में वो काम परमात्मा कर रहे हैं या कह सकते हैं उनकी माया कर रही है। यदि कोई इस संसार से विदा ले लेता है तो कोई कार्य रुक जाता है क्या? नहीं कोई और उसके स्थान पर आ जाता है। बस अंतर यह रह जाता है कि एक जागृत व्यक्ति और एक सोए हुए व्यक्ति के कार्य करने की शैली में अंतर आ जाता है और लाभार्थी को यह पता चलता है कि पहले वाले व्यक्ति और दुसरे व्यक्ति में क्या अंतर है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके जाने के पश्चात् लोग उनका स्मरण करते हैं और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो जीवित रहते हैं तो बाकी लोग उनके मरने की प्रार्थना भगवान् से करते हैं क्योंकि वह व्यक्ति कुछ भी सही नहीं करता और कष्ट देता है।

प्रभु ने इसीलिए यह शरीर बनाया जिसको भूख लगती है और अहंकार बनाया जिससे कम से काम स्वार्थ के कारण ही व्यक्ति अच्छे से काम करे और नाम के लिए भी करे अन्यथा प्रेम के कारण तो बिरले ही कर्म करते हैं। लेकिन कर्म करते–करते ज्ञानी व्यक्ति भी माया में वशीभूत होते हुए फिर अहंकारी हो जाते हैं कि इतना ज्ञान और सत्संग सुनने के बाद भी वापस दलदल में फस जाते हैं।

माया और अज्ञान के कारण अपने शरीर से इतना तादात्म्य हो जाता है कि जब सेवानिवृत्त हो जाते हैं और बुढ़ापा दस्तक देने लगता है फिर भी संसार को छोड़ने का मन नहीं करता। माया में आनंद तो आता ही है। सोचिये यदि हम निराकार रहे और पड़े रहे तो भी अच्छा नहीं लगेगा (हालांकि आनंद स्वरुप को आनंद की क्या आवश्यकता) लेकिन माया से इतना भी तादात्म्य नहीं हो जाना चाहिए कि शरीर छोड़ने पर मानसिक कष्ट हो (शारीरिक कष्ट तो होगा ही क्यूंकि प्रकृति का स्वभाव ही ऐसा है) और चिड़चिड़ाते हुए शरीर छोड़ें। अपितु ऐसा होना चाहिए कि भगवान् (मायापति) को कभी भूलना नहीं चाहिए और उसकी माया का भी सम्मान करना चाहिए और जो भी जीवन में आए उसे स्वीकार करना चाहिए (और करना ही पड़ेगा इससे अच्छा स्वीकार कर लें) और यथाशक्ति परमात्मा से प्रार्थना, नाम–जप, ध्यान, भगवत–स्मरण करते हुए उससे निवारण भी प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। जीवन में सेवा करते हुए और विरक्त/असंग रहते हुए और कण–कण में प्रभु का वास है ऐसा सोचते–समझते, अनुभव, अनुभूति करते हुए जीवन का निर्वाह करना चाहिए जिससे कि हर कार्य भक्ति बन जाए और किसी भी व्यक्ति वस्तु में लिप्त न हो कर सदैव अपने प्रभु/ईष्ट की आज्ञा और सेवा का आनंद ले सकें। यदि यह अनुभूति हो जाए कि सब एक है (अद्वैत) और दो है ही नहीं (द्वैत) तो इसी ज्ञान से प्रेम भी प्रकट हो जाएगा (जो प्रेमी हैं उनको तो अपने आप ज्ञान प्राप्त हो होता जाता है) तो जीवन का परम आनंद उपलब्ध हो सकता है। हो सकता है इसलिए लिखा है क्योंकि मायापति की माया भी बहुत प्रबल है और उसका काट पाना सरल और कठिन दोनों ही है। अब चिंतन–मनन का अवसर पाठक को प्रदान किया जाता है।

*****

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय–हृदय से बातचीत करता है।

– महात्मा गांधी।

जीवन की यात्रा में निर्णयों का प्रभाव

अभिनव बर्वे
सहायक अभियंता (सिविल),परियोजना विभाग

आज के इस आधुनिक युग में, जहाँ व्यक्ति पवन की गति से निर्णय लेने का प्रयास करता है, उसके जीवन में भी कभी–कभी एक ऐसा क्षण आता है जब वह समय के विशाल समुद्र में एक ऐसे मोड़ पर आकर ठहर जाता है, जहाँ आगे बढ़ने के लिए उसे अपने विवेक की नाव से सही दिशा चुननी पड़ती है। जहाँ उसे गहन चिंतन करना पड़ता है कि कौन–सा मार्ग चुना जाए।

यद्यपि उस समय किसी मार्ग के सही या गलत होने की चर्चा नहीं होती, क्योंकि रास्ते कभी गलत नहीं होते – गलत होते हैं तो केवल हमारे निर्णय। व्यक्ति कभी गलत नहीं होता, गलत हो सकता है तो उसका चुनाव।

इस विचार को समझना थोड़ा कठिन लग सकता है, इसलिए इसे एक सरल उदाहरण के माध्यम से समझते हैं।

मान लीजिए आप किसी चौराहे पर खड़े हैं और आपके सामने तीन रास्ते हैं। तीनों रास्तों की मंजिल एक ही है, लेकिन अंतर केवल इतना है कि उनकी यात्रा और परिस्थितियाँ अलग–अलग हैं।

पहला रास्ता सबसे छोटा है, लेकिन उसकी सड़क टूटी हुई है और वहाँ बहुत अधिक भीड़–भाड़ है। दूसरा रास्ता बिना भीड़–भाड़ वाला और अच्छी सड़क से बना हुआ है, लेकिन वहाँ रास्ते में चोर–लुटेरों का डर बना रहता है। तीसरा रास्ता सुरक्षित है, वहाँ किसी प्रकार का भी भय नहीं है, लेकिन वह रास्ता काफी लंबा है और मंजिल तक पहुँचने में अधिक समय लगेगा।

अब निर्णय तो हमें ही लेना होगा कि अपनी परिस्थिति, क्षमता और लक्ष्य के अनुसार कौन–सा मार्ग चुना जाए। किसी भी रास्ते पर चलने के बाद बीच यात्रा में यह सोचकर रुक जाना कि ष्शायद यह रास्ता गलत था, उचित नहीं है।

क्योंकि जीवन में रास्ते हमारी मंजिल तक पहुँचने के साधन मात्र होते हैं। सही या गलत का निर्धारण रास्तों से नहीं, बल्कि हमारे निर्णयों, हमारी सोच और हमारे कर्मों से होता है।

इस रचना पर आधारित चंद पंक्तियां लिखी हैः

मंजिल कभी न मिलेगी सिर्फ चाहने से,
कोशिश तो जी–तोड़ करनी पड़ेगी कुछ पाने के लिए।
मान लिया कि बिगड़ गया जीवन का वो एक पिछला हिस्सा,
जिसे सुधार पाना अब शायद मुमकिन नहीं।।
मगर, आओआगे अब हम मिलकर साथ चले,
आने वाले कल को बेहतर बनाने के लिए।

*****

भारत में चीते की वापसी : विलुप्ति से पुनर्जन्म तक की ऐतिहासिक यात्रा

रुद्रांश सिंह परिहार
सुपुत्र श्री मानस परिहार

सात दशकों से भी अधिक समय तक भारत के विशाल घास के मैदानों और झाड़ीदार वनों में एक गहरा सन्नाटा पसरा रहा। विश्व का सबसे तेज दौड़ने वाला स्थलीय जीव–चीता–जो कभी भारतीय उपमहाद्वीप की धरती पर अपनी अद्भुत गति से दौड़ता था, पूरी तरह लुप्त हो चुका था। किंतु इतिहास ने एक नया मोड़ लिया। विश्व के सबसे साहसिक वन्यजीव संरक्षण अभियानों में से एक के माध्यम से चीते ने भारतीय धरती पर पुनः कदम रखा, जिसने विलुप्ति की दुखद कहानी को पुनर्जन्म और आशा की गाथा में बदल दिया।

ऐतिहासिक उपस्थिति और दुखद विलुप्ति

भारत और चीते का संबंध हजारों वर्षों पुराना है। ''चीता'' शब्द संस्कृत के चित्रक से बना है, जिसका अर्थ है–''चित्तियों वाला''।

चीतों की विलुप्ति का अंतिम और सबसे घातक आघात ब्रिटिश शासन के दौरान लगा। व्यापक शिकार, इनाम घोषित कर चीतों का वध, घास के मैदानों का कृषि भूमि में परिवर्तन तथा बड़े पैमाने पर वनों की कटाई के कारण उनका प्राकृतिक आवास और शिकार दोनों तेजी से समाप्त हो गए। वर्ष 1952 में भारत सरकार ने आधिकारिक रूप से चीते को देश में विलुप्त घोषित कर दिया।

अगले लगभग सत्तर वर्षों तक भारत अपनी सबसे तेज दौड़ने वाली शिकारी प्रजाति से वंचित रहा।

बदलाव की शुरुआत

चीते को भारत में पुनः बसाने का सपना दशकों तक वैज्ञानिकों और वन्यजीव विशेषज्ञों के मन में जीवित रहा, किंतु इसके लिए आवश्यक राजनीतिक इच्छाशक्ति, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और वैज्ञानिक स्तर पर सुदृढ़ क्रियान्वयन का अभाव था।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह सपना साकार हुआ। यह समझते हुए कि चीते की वापसी केवल एक प्रजाति का पुनर्स्थापन नहीं, बल्कि भारत के उपेक्षित घास के मैदानों के पारिस्थितिकी तंत्र के पुनर्जीवन का माध्यम है, भारत सरकार ने प्रोजेक्ट चीता की शुरुआत की। यह विश्व का पहला अंतरमहाद्वीपीय बड़े मांसाहारी वन्यजीव का पुनर्स्थापन (Intercontinental Large Carnivore Translocation) परियोजना है।

सरकार ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए बहु–स्तरीय और वैज्ञानिक तैयारियाँ कीं–

- **वैज्ञानिक आधार तैयार करना:** भारतीय वन्यजीव संस्थान (Wildlife Institute of India - WII) तथा राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) ने विभिन्न संभावित स्थलों का विस्तृत अध्ययन किया। अंततः मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान का चयन उसके विशाल खुले क्षेत्र, पर्याप्त शिकार आधार तथा अनुकूल पारिस्थितिकी के कारण किया गया।

- **अंतरराष्ट्रीय सहयोगः** भारत सरकार ने नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका सहित कई अफ्रीकी देशों के साथ ऐतिहासिक समझौता ज्ञापनों (MoUs) पर हस्ताक्षर किए, ताकि स्वस्थ और जंगली अफ्रीकी चीतों को भारत लाया जा सके। बाद में इस सहयोग का विस्तार बोत्सवाना तक भी किया गया।
- **आधारभूत संरचना एवं सुरक्षाः** करोड़ों रुपये की लागत से विशाल, शिकारी–रोधी अनुकूलन बाड़े (बोमा) बनाए गए, सैटेलाइट रेडियो कॉलर जैसी आधुनिक ट्रैकिंग तकनीकों को अपनाया गया तथा पशु चिकित्सकों और वन अधिकारियों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया।
- **स्थानीय समुदाय की भागीदारीः** मानव–वन्यजीव संघर्ष को कम करने के उद्देश्य से स्थानीय ग्रामीणों को 'चीता मित्र' के रूप में जोड़ा गया, ताकि जन–जागरूकता बढ़े और मानव एवं चीते के बीच सह–अस्तित्व को प्रोत्साहन मिले।

पुनर्स्थापन और नई पीढ़ी का उदय

17 सितंबर 2022 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं नामीबिया से लाए गए आठ चीतों को कूनो राष्ट्रीय उद्यान के क्वारंटीन बाड़ों में छोड़कर इस ऐतिहासिक अभियान का शुभारंभ किया। यह भारत में चीते की आधिकारिक वापसी का ऐतिहासिक क्षण था। कुछ ही महीनों बाद, फरवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका से बारह और चीते भारत लाए गए। इसके बाद परियोजना का और विस्तार हुआ तथा बोत्सवाना से नौ अतिरिक्त चीते लाकर उनकी आनुवंशिक विविधता सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। प्रोजेक्ट चीता की वास्तविक सफलता तब दिखाई देने लगी जब ये चीते अपने नए आवास में सहज रूप से अनुकूलित होने लगे। परियोजना का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य केवल उनका जीवित रहना नहीं, बल्कि भारत में उनका सफल प्रजनन था।

नामीबिया से लाई गई मादा चीता 'ज्वाला' सहित कई मादा चीताओं ने भारतीय भूमि पर शावकों को जन्म दिया। ज्वाला ने पाँच स्वस्थ शावकों को जन्म देकर यह सिद्ध कर दिया कि भारत की जलवायु, प्राकृतिक वातावरण और उपलब्ध शिकार इस प्रजाति के सफल जीवन और प्राकृतिक प्रजनन के लिए पूरी तरह उपयुक्त हैं।

इन शावकों का जन्म इस बात का प्रतीक है कि चीते अब केवल बाहर से लाए गए वन्यजीव नहीं रहे, बल्कि भारत में जन्मी नई पीढ़ी अब इस धरती को अपना स्थायी घर बना चुकी है।

निष्कर्ष

आज प्रोजेक्ट चीता वैश्विक वन्यजीव संरक्षण का एक प्रेरणादायक उदाहरण बन चुका है। आठ चीतों से शुरू हुई यह यात्रा अब उल्लेखनीय सफलता की ओर अग्रसर है।

वर्तमान स्थितिः आज भारत में कुल 57 चीते हैं।

इनमें 29 आयातित वयस्क चीते तथा 37 भारत में जन्मे शावक और उप–वयस्क चीतेशामिल हैं, जिन्होंने भारतीय जंगलों के अतिरिक्त कोई अन्य घर नहीं देखा है। अधिकांश चीते कूनो राष्ट्रीय उद्यान में निवास कर रहे हैं, जबकि बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए परियोजना का विस्तार गांधी सागर अभयारण्य तक भी किया गया है।

आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं–

''चीता अब विलुप्त नहीं है; वह पूरे गौरव के साथ भारत की धरती पर वापस लौट आया है।''

*****

समाज का आइना हैं भारतीय फिल्में

प्रिंस भावे
मीडिया एवं पीआर विभाग,
आईआईएम इन्दौर

फिल्में समाज का आईना होने के साथ–साथ उसे बदलने का एक बड़ा जरिया भी हैं। सिनेमा मात्र पर्दे पर दिखने वाली तस्वीरें नहीं हैं, बल्कि यह समाज की सोच और भावनाओं को प्रदर्शित करता है। भारत में बॉलीवुड ने करोड़ों लोगों के रहन–सहन, भाषा और विचारों को बहुत प्रभावित किया है। तीन घंटे की एक फिल्म कभी मनोरंजन करती है, तो कभी समाज की कमियों को सामने लाकर उन्हें सुधारने की प्रेरणा देती है। भारतीय सिनेमा का इतिहास सौ साल से भी पुराना है। मूक फिल्मों से लेकर आज के डिजिटल और ओटीटीदौर तक, सिनेमा ने हर बड़े बदलाव को पर्दे पर दिखाया है। फिल्मों ने आजादी की लड़ाई, देशभक्ति, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य जैसे जरूरी विषयों पर लोगों को सोचने पर मजबूर किया है। दूसरी तरफ, कुछ फिल्मों ने हिंसा और गलत जीवन शैली को भी बढ़ावा दिया है। इसीलिए यह सवाल हमेशा बना रहता है कि फिल्में समाज को मात्र विश्लेषित करती हैं या उसे कोई नई दिशा भी देती हैं।

स्वतंत्रता के बाद जब देश गरीबी, अशिक्षा और भेदभाव से जूझ रहा था, तब दो बीघा जमीन और मदर इंडिया जैसी फिल्मों ने किसानों के संघर्ष और महिलाओं की शक्ति को पर्दे पर उतारा। प्यासा जैसी फिल्मों ने समाज की कमियों पर सवाल उठाए। सत्तर और अस्सी के दशक में जब देश में बेरोजगारी और आक्रोश बढ़ रहा था, तब जंजीर और दीवार जैसी फिल्मों में एंग्रीयंगमैन का जन्म हुआ। यह किरदार उस समय के युवाओं की निराशा को दिखाता था। इसके बाद नब्बे के दशक में हम आपके हैं कौन और दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे जैसी फिल्मों ने परिवार, प्रेम और भारतीय संस्कृति के महत्व को नए तरीके से सिखाया। इन फिल्मों ने लोगों के पहनावे और शादी–ब्याह के तौर–तरीकों को भी बदल दिया।

इक्कीसवीं सदी में सिनेमा ने शिक्षा व्यवस्था और बच्चों की समस्याओं पर बात करना शुरू किया। तारेजमीन पर ने बच्चों की सीखने की बीमारी को सामने लाया, तो 3 इडियट्स ने रटने वाली पढ़ाई के बजाय कुछ नया सीखने की प्रेरणा दी। इसके साथ ही फिल्मों में महिलाओं की भूमिका भी बदली। क्वीन, पिंक, दंगल और थप्पड़ जैसी फिल्मों ने यह स्पष्ट कर दिया कि महिलाओं का आत्मविश्वास और उनकी सहमति कितनी जरूरी है। आधुनिक सिनेमा ने स्वच्छता के लिए टॉयलेटः एक प्रेमकथा, मासिक धर्म पर पैडमैन और जातिवाद पर आर्टिकल 15 जैसी फिल्में बनाकर समाज की रूढ़ियों को तोड़ा है। देशभक्ति के रंग में रंगील गान, रंगदे बसंती, स्वदेस और शेरशाह जैसी फिल्मों ने युवाओं में देश के प्रति जिम्मेदारी की भावना जगाई है।

आज के डिजिटल और ओटीटी युग में 12वीं फेल और लापता लेडीज जैसी फिल्में बहुत ही सरल तरीके से ईमानदारी, संघर्ष और समानता का बड़ा संदेश दे रही हैं। हालांकि कुछ फिल्मों में ज्यादा हिंसा, अपराध और नशे को बढ़ा–चढ़ाकर दिखाना युवाओं को गलत रास्ते पर ले जाता है। इसलिए दर्शकों को फिल्में देखते समय सही और गलत का अंतर समझना चाहिए। प्रबंधन या मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए भी फिल्में एक अच्छा जरिया हैं। जैसे चक दे! इंडिया से टीम को संभालना और लगान से कम साधनों में जीतना सीखा जा सकता है।

फिल्में और समाज एक–दूसरे से जुड़े हैं। समाज की कहानियों से फिल्में बनती हैं और अच्छी फिल्में समाज को एक बेहतर दिशा देती हैं। समाज और सिनेमा का रिश्ता एक सुंदर चक्र की तरह है–समाज की सच्चाइयों से फिल्में अपनी कहानी चुनती हैं, और अच्छी फिल्में समाज को एक बेहतर तथा नई दिशा देती हैं। जब सिनेमा मनोरंजन के साथ–साथ जिम्मेदारी का यह दायित्व निभाता है, तब वह सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं होता, बल्कि लोगों के दिलों और इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो जाता है। यही सिनेमा की असली शक्ति है और यही उसकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी भी।

*****

परिवर्तन है अनमोल...

श्याम राव
उद्योग अंतराफलक कार्यालय

जब बीज ने मिट्टी से पूछा, ''क्या अँधेरा ही मेरी तकदीर है?''
धरती मुस्काई धीरे से बोली– ''यही तो उजाले की ताबीर है।''
परिवर्तन ही जीवन का संगीत है, हर पल बदलती इसकी प्रीत है।
जो आज खिला है, कल मुरझाएगा, फिर नई सुबह बनकर मुस्काएगा।

पर्वत भी चुपचाप घिसते हैं नदियाँ अपना मार्ग बदलती हैं।
समय की उँगली थामे चलकर, हर मंजिल नई शक्ल में ढलती है।
परिवर्तन कोई तूफान नहीं, जो सब कुछ पल में तोड़ जाए।
यह तो मन की वह धीमी धुन है, जो हर धड़कन को नया स्वर सिखाए।

रात के आँचल से भोर निकलती, सूखी धरती पर वर्षा मचलती।
पतझड़ के बाद बसंत भी आता, हर अंत नया आरंभ कहलाता।
समय कभी एक–सा नहीं रहता, सुख–दुख का पहिया यूँ ही चलता।

कठिनाइयाँ भी संदेश सुनातीं, संघर्षों से मंजिल मिल जाती।
जो पत्तों से बिछड़ गया, वह शाख कभी रोती नहीं।
नई कोंपलों के स्वागत में, प्रकृति उम्मीद खोती नहीं।
परिवर्तन कोई मंजिल नहीं, यह तो जीवन का सतत प्रवाह है।

जो हर पल सीखता, हर पल बढ़ता, वही सच्चे अर्थों में जीवित है।
आओ, परिवर्तन को केवल स्वीकार न करें, उसे अपने चरित्र का आधार बनाएँ।
ऐसा बदलें कि हमारी पहचान नहीं, हमारे संस्कार संसार को दिशा दिखाएँ।

*****

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भविष्य का कार्यस्थल

रिया जैन
मीडिया एवं पीआर विभाग

आज तकनीक से पूर्ण दुनिया में जब भी किसी नवाचार की चर्चा होती है, सबसे पहला विचार ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आता है। यह अब मात्र विज्ञान कथाओं का विषय नहीं रहा, बल्कि हमारे दैनिक जीवन, व्यवसाय और कार्यस्थल का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। जिस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने मशीनों के माध्यम से उत्पादन प्रणाली को बदल दिया था, उसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता निर्णय लेने, समस्या समाधान, और कार्य करने के तरीकों को नई दिशा दे रही है। भविष्य का कार्यस्थल केवल तकनीक संचालित नहीं होगा, बल्कि मानव बुद्धिमत्ता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नैतिक नेतृत्व के संतुलित समन्वय पर आधारित होगा। ऐसे समय में यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल एक तकनीकी परिवर्तन नहीं, बल्कि प्रबंधन, नेतृत्व और संगठनात्मक संस्कृति में भी व्यापक बदलाव का वाहक है।

बदलता कार्य वातावरणः आज कार्यस्थल की परिभाषा पूरी तरह बदल चुकी है। पहले जहाँ कार्यालय का अर्थ एक निश्चित स्थान और निश्चित समय से जुड़ा था, वहीं अब डिजिटल तकनीकों ने कार्य को कहीं से भी और किसी भी समय संभव बना दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों ने दूरस्थ कार्य, स्वचालन और वास्तविक समय में सहयोग को नई गति प्रदान की है। ग्राहक सेवा में संवाद प्रणाली, आँकड़ों के विश्लेषण में उन्नत मॉडल तथा रिपोर्ट लेखन, सामग्री निर्माण और रचनात्मक डिजाइन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप कर्मचारी अब दोहराव वाले कार्यों तक सीमित न रहकर रणनीतिक सोच, नवाचार, निर्णय निर्माण और जटिल समस्याओं के समाधान जैसे उच्च मूल्य वाले कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पा रहे हैं।

अवसरः उत्पादकता, नवाचार और प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने संगठनों की कार्यक्षमता, उत्पादकता और निर्णय लेने की गुणवत्ता तीनों में उल्लेखनीय सुधार किया है। नियमित और समय लेने वाले कार्यों के स्वचालित हो जाने से कर्मचारी अपनी ऊर्जा रचनात्मकता, अनुसंधान और ग्राहक केंद्रित समाधान विकसित करने में लगा सकते हैं। आँकड़ों पर आधारित निर्णय लेने की क्षमता प्रबंधकों को अधिक सटीक, त्वरित और प्रभावी निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। इसके अतिरिक्त ग्राहकों के व्यवहार का विश्लेषण कर उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सेवाएँ प्रदान करना संभव हुआ है, जिससे ग्राहकों की संतुष्टि और व्यवसाय की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता दोनों में वृद्धि होती है।

चुनौतियाँ: कौशल अंतर, नैतिकता और मानवीय संतुलन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के व्यापक उपयोग के साथ कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सबसे बड़ी चुनौती बदलती कौशल आवश्यकताएँ हैं। अनेक पारंपरिक कार्य स्वचालित होने के कारण कर्मचारियों के लिए निरंतर सीखना, नए कौशल विकसित करना और अपने कौशल को अद्यतन रखना पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। इसके साथ ही आँकड़ों की गोपनीयता, निर्णयों में पक्षपात, साइबर सुरक्षा तथा निर्णय प्रक्रिया की

पारदर्शिता जैसे नैतिक प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं। संगठनों की जिम्मेदारी है कि वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग केवल दक्षता बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि निष्पक्षता, जवाबदेही और मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हुए करें।

भारत जैसे युवा, नवाचार प्रधान और तेजी से डिजिटल होते देश के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभूतपूर्व अवसर लेकर आई है। विभिन्न राष्ट्रीय पहलों ने नवाचार, उद्यमिता और डिजिटल परिवर्तन को नई गति प्रदान की है। स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा, विनिर्माण, वित्तीय सेवाओं और सार्वजनिक प्रशासन जैसे क्षेत्रों में इसका उपयोग लगातार बढ़ रहा है। साथ ही भारतीय सेवा क्षेत्र, विनिर्माण उद्योग और नवाचार आधारित उद्यम वैश्विक प्रतिस्पर्धा को मजबूत करने में इसकी सहायता ले रहे हैं। भविष्य के प्रबंधकों को तकनीकी दक्षता के साथ नैतिक नेतृत्व, सहानुभूति, संवाद कौशल और परिवर्तन प्रबंधन जैसी क्षमताओं का भी विकास करना होगा।

सत्य तो यह है कि यह न तो केवल रोजगार के लिए चुनौती है और न ही केवल प्रगति का साधन, बल्कि एक ऐसी परिवर्तनकारी शक्ति है जिसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि हम इसका उपयोग कितनी जिम्मेदारी, दूरदृष्टि और नैतिकता के साथ करते हैं। भविष्य में सबसे सफल कार्यस्थल वही होंगे जहाँ तकनीक की गति और सटीकता का समन्वय मानव की रचनात्मकता, संवेदनशीलता, विवेक और नेतृत्व से होगा। यदि संगठन निरंतर सीखने की संस्कृति, नैतिक उत्तरदायित्व और नवाचार को समान महत्व दें, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता अधिक समावेशी, उत्पादक और मानवीय कार्यस्थलों की नींव रखेगी।

*****

प्रेम

श्रीमती पूजा शुक्ला
(श्री प्रवाह शुक्ल की जीवनसंगिनी)

चेहरे पर सदा मुस्कान रखके प्रयत्न करती हूँ काम करने की
खाली ना जाने देती हूँ कोई आ जाए तो प्रयत्न करती हूँ सम्मान देने की
सबके लिए सोचती हूँ भला क्षमा करने का प्रयत्न करती हूँ
सबसे प्रेम करने का प्रयत्न करती हूँ
प्रेम का वास्तविक अर्थ है क्या
कभी किसी ने समझने का प्रयत्न किया क्या
प्रेम में समा जाता है हर भाव जो भी है भले के लिए
प्रेम नहीं करती बदले में कुछ लेने के लिए
मिल जाता है प्रभु से प्रेम के रूप में जीने के लिए
निम्मित मात्र बन जाता है कोई मेरे लिए
सत्य की राह पर चली हूँ सदा
मिलता वही है तो होता है बदा

टालमटोल (Procrastination): एक बुरी आदत जो सफलता में बाधा बनती है

मोहित रायकवार,
मीडिया एवं पीआर विभाग, आईआईएम इन्दौर

हम सभी ने कभी न कभी अपने जीवन में किसी काम को यह सोचकर टाल दिया है कि ''कल कर लेंगे'' या ''अभी बहुत समय है"। लेकिन अकसर ''कल'' कई बार कभी नहीं आता और काम अंतिम समय तक अधूरा रह जाता है। किसी जरूरी काम को बिना किसी ठोस कारण के बार–बार आगे बढ़ाना ही टालमटोल (Procrastination) कहलाता है।

संत कबीर दास जी ने समय के महत्व को बताते हुए कहा है:

''काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।''

इस दोहे का अर्थ है कि किसी भी आवश्यक कार्य को कल पर नहीं टालना चाहिए, क्योंकि भविष्य का कोई भरोसा नहीं होता। जो काम आज किया जा सकता है, उसे अभी कर लेना चाहिए। यही संदेश हमें टालमटोल की आदत छोड़कर समय का सदुपयोग करने की प्रेरणा देता है।

आज के समय में यह समस्या विद्यार्थियों, नौकरी करने वाले लोगों और यहाँ तक कि व्यवसाय करने वालों में भी देखने को मिलती है। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेम और मनोरंजन के अन्य साधनों ने इस आदत को और बढ़ा दिया है। शुरुआत में यह एक छोटी–सी आदत लगती है, लेकिन धीरे–धीरे यह पढ़ाई, करियर और व्यक्तिगत जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालने लगती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी छात्र को अगले सप्ताह असाइनमेंट जमा करना है, लेकिन वह हर दिन यह सोचकर टाल देता है कि ''अभी तो बहुत समय है'', और अंत में जमा करने से एक दिन पहले पूरी रात जागकर काम करता है, तो यह टालमटोल का उदाहरण है।

टालमटोल के कई कारण हो सकते हैं। काम को कठिन समझना, जैसे जब कोई कार्य बड़ा या मुश्किल लगता है, तो हमारा मन उसे शुरू करने से बचता है। असफल होने का डर भी हमें कोई काम करने से रोकता है, क्योंकि हमें लगता है कि अगर काम बिगड़ गया, तो लोग क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे। इसी प्रकार, तकनीकी दुनिया में हम पूरे समय सोशल मीडिया पर स्क्रॉलिंग करते रहते हैं। आज अधिकांश विद्यार्थी भी पढ़ाई शुरू करते समय मोबाइल उठा लेते हैं। पाँच मिनट के लिए कोई सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर नोटिफिकेशन देखते हैं, या विडियो देखते हैं – और समय कहाँ निकल जाता है पता ही नहीं चलता। इस कारन से हम अपने दिन की योजना भी नहीं बना पाते और आवश्यक और गैर–आवश्यक कामों में अंतर नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप, महत्वपूर्ण काम पीछे छूट जाते हैं।

टालमटोल का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि काम समय पर पूरा नहीं हो पाता। जब अंतिम समय नजदीक आता है, तो व्यक्ति तनाव और घबराहट महसूस करने लगता है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए किसी व्यक्ति

को बैंक में किसी महत्वपूर्ण दस्तावेज को जमा करना है और उसकी अंतिम तिथि 30 जून है। वह हर दिन यह सोचकर काम टालता रहता है कि "अभी तो समय है।" जब अंतिम दिन बैंक पहुँचता है, तब उसे पता चलता है कि समय समाप्त हो चुका है या कोई आवश्यक दस्तावेज अधूरा है। परिणामस्वरूप उसका काम समय पर नहीं हो पाता और उसे आर्थिक या अन्य प्रकार की परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति अपने स्वास्थ्य की नियमित जाँच या डॉक्टर से मिलने को बार–बार टालता रहता है, तो छोटी–सी समस्या भी समय के साथ गंभीर बीमारी का रूप ले सकती है। इससे उपचार में अधिक समय, अधिक खर्च और अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

टालमटोल से आत्मविश्वास भी कम होता है। जब व्यक्ति बार–बार अपने कार्य समय पर पूरे नहीं कर पाता, तो उसे अपनी क्षमता पर संदेह होने लगता है। धीरे–धीरे उसका मनोबल गिरता है और वह नए कार्य शुरू करने से भी हिचकिचाने लगता है।

इसका उपाय यह है कि हम हर कार्य को निर्धारित समय से पूर्व करने का प्रयास करें। जब व्यक्ति समय पर काम करना शुरू कर देता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। वह बिना तनाव के अपने लक्ष्य पूरे कर पाता है। विद्यार्थियों के अंक बेहतर आते हैं क्योंकि उन्हें पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय मिलता है। नौकरी करने वाले लोग समय पर काम पूरा करके अपने अधिकारियों का विश्वास जीतते हैं। इससे उनके करियर में भी आगे बढ़ने के अवसर बढ़ जाते हैं।

समय पर काम पूरा करने से व्यक्ति के पास अपने परिवार के लिए भी समय बचता है। इससे जीवन अधिक संतुलित और खुशहाल बनता है। टालमटोल एक छोटी समस्या लग सकती है, लेकिन इसके परिणाम बहुत बड़े हो सकते हैं। यदि हम समय का सही प्रबंधन करें, छोटे–छोटे लक्ष्य बनाकर काम करें और बिना देरी किए शुरुआत करें, तो इस आदत से आसानी से छुटकारा पाया जा सकता है।

*****

असफलता एक नई शुरुआत है!

रूपेश साहू,
मानव संसाधन कार्यालय

गिर जाना, गिरकर संभलना, यही तो शुरुआत है।
जो टूटा है हौसला तेरा, उसे फिर से मजबूत बनाना है।
ठोकर खाकर संभलना सीखो, एक नया रास्ता खोजना है।
गलतियाँ वे सीख हैं, जो तुम्हें और मजबूत बनाएँगी।
यही अधूरी कोशिशें एक दिन, तुम्हें मंजिल तक पहुँचाएँगी।
बस उम्मीद की एक लौ ही काफी है अँधेरों को हराने के लिए।
ना डर इस अँधेरे से, नया सवेरा आने वाला है।

*****

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए आई) और समय प्रबंधनः विद्यार्थियों की सफलता का नया मंत्र

चंचल अग्रवाल
मीडिया एवं पीआर विभाग, आईआईएम इन्दौर

''आज का असाइनमेंट पूरा हुआ?''
''कल की प्रस्तुति तैयार है?''
''अगले सप्ताह परीक्षा भी है, और इंटर्नशिप की तैयारी भी करनी है...''

शायद ही कोई विद्यार्थी होगा जिसने ऐसे प्रश्नों का सामना न किया हो। आज का विद्यार्थी मात्र कक्षा में ज्ञानार्जन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक साथ कई भूमिकाएँ निभा रहा है। कभी वह शोधकर्ता बन जाता है तो कभी प्रस्तुतकर्ता, कभी प्रतियोगी परीक्षाओं का अभ्यर्थी, तो कभी नए कौशल सीखने वाला युवा। ऐसे में सबसे बड़ी चुनौती केवल अधिक मेहनत करना नहीं, बल्कि सही समय पर सही कार्य करना है।

यह वह दौर है जहाँ 'जनरेशन जी' डिजिटल तकनीक के साथ पली–बढ़ी है। उनके लिए जानकारी तक पहुँच केवल एक क्लिक की दूरी पर है, और एआई आधारित टूल्स उनके दैनिक अध्ययन का हिस्सा बनते जा रहे हैं। वहीं, मिल्लेनिअल्स, जो आज बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधकर्ता और उद्योग विशेषज्ञ की भूमिका निभा रहे हैं, शिक्षा में तकनीक को अपनाने और उसका जिम्मेदार उपयोग सिखाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन दोनों पीढ़ियों के बीच सीखने और सिखाने का यह नया तालमेल शिक्षा को एक नए आयाम की ओर ले जा रहा है।

इसी बदलते शैक्षणिक परिवेश में एआईने शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया है। कुछ वर्षों पहले तक किसी कठिन विषय को समझने, अध्ययन सामग्री खोजने या प्रोजेक्ट तैयार करने में घंटों लग जाते थे। आज वही कार्य एआई की सहायता से कुछ ही मिनटों में संभव हो जाता है। लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि सफलता अब केवल तकनीक पर निर्भर हो गई है? शायद नहीं। तकनीक रास्ता दिखा सकती है, लेकिन मंजिल तक पहुँचने के लिए आज भी समय का सही प्रबंधन, आत्म–अनुशासन और मौलिक सोच सबसे महत्वपूर्ण हैं।

एआई ने शिक्षा को पहले से कहीं अधिक व्यक्तिगत, सरल और सुलभ बनाया है। अब विद्यार्थी अपनी सीखने की गति के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। कठिन अवधारणाओं को सरल भाषा में समझना, अभ्यास प्रश्न तैयार करना, नोट्स का सार निकालना, अध्ययन योजना बनाना और तत्काल शंकाओं का समाधान प्राप्त करना जैसे सभी कार्य एआई आधारित उपकरणों की सहायता से अधिक प्रभावी हो गए हैं। परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों के पास केवल समय ही नहीं बचता, बल्कि वे अपनी ऊर्जा को उन विषयों पर केंद्रित कर पाते हैं जहाँ वास्तव में अधिक प्रयास की आवश्यकता होती है।

लेकिन समय बचा लेना और उसका सही उपयोग करना – इन दोनों में अंतर है, और इसलिए समय प्रबंधन भी आवश्यक कला है। प्रत्येक विद्यार्थी के पास दिन के समान 24 घंटे होते हैं, फिर भी कुछ विद्यार्थी अनेक

उपलब्धियाँ हासिल कर लेते हैं, जबकि कुछ समय के अभाव की शिकायत करते रहते हैं। इसका कारण समय की कमी नहीं, बल्कि योजना का अभाव है। जब विद्यार्थी अपने अध्ययन, असाइनमेंट, परियोजनाओं, परीक्षाओं और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाना सीख लेते हैं, तब उनकी उत्पादकता और आत्मविश्वास दोनों बढ़ते हैं। एआई इस प्रक्रिया को और अधिक व्यवस्थित बना सकता है यह अध्ययन की प्राथमिकताएँ तय करने, समय–सीमाओं की याद दिलाने, प्रगति का विश्लेषण करने और व्यक्तिगत अध्ययन योजना तैयार करने में सहायक सिद्ध होता है।

हालाँकि, हर सुविधा के साथ कुछ सावधानियाँ भी जुड़ी होती हैं। यदि एआई का उपयोग केवल तैयार उत्तर प्राप्त करने या असाइनमेंट पूरा करने के लिए किया जाए, तो यह सीखने की प्रक्रिया को कमजोर कर सकता है। धीरे–धीरे विद्यार्थी स्वयं सोचने, तर्क करने और नए विचार विकसित करने के बजाय तकनीक पर निर्भर होने लगते हैं। यही प्रवृत्ति आगे चलकर साहित्यिक चोरी जैसी शैक्षणिक अनैतिकताओं को भी जन्म दे सकती है। इसलिए एआई का उद्देश्य सोचने की क्षमता को समाप्त करना नहीं, बल्कि उसे और अधिक सशक्त बनाना होना चाहिए।

यह सत्य है कि एआई एक उत्कृष्ट सहायक है, लेकिन यह कभी भी जिज्ञासा, रचनात्मकता और मानवीय विवेक का स्थान नहीं ले सकता। शिक्षा का उद्देश्य केवल उत्तर प्राप्त करना नहीं, बल्कि सही प्रश्न पूछना, समस्याओं का समाधान खोजने की क्षमता विकसित करना और समाज के प्रति उत्तरदायी दृष्टिकोण का निर्माण करना है। इसलिए विद्यार्थियों को एआईका उपयोग अपनी समझ को गहरा करने, नए दृष्टिकोण विकसित करने और समय का बेहतर प्रबंधन करने के लिए करना चाहिए, न कि स्वयं के प्रयासों का विकल्प बनाने के लिए।

भविष्य की शिक्षा केवल तकनीक–केंद्रित नहीं होगी, बल्कि मानव बुद्धिमत्ता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संतुलित सहयोग पर आधारित होगी। जहाँ नयी पीढ़ी नई तकनीकों को सहजता से अपनाने की क्षमता रखती है, वहीं पुरानी पीढ़ी अपने अनुभव, विश्लेषण और व्यावहारिक दृष्टिकोण से इस तकनीक के सार्थक उपयोग का मार्गदर्शन कर रही है। इन दोनों पीढ़ियों का यह समन्वय शिक्षा को अधिक नवाचारी, समावेशी और प्रभावशाली बना रहा है। सफलता केवल यह नहीं कि हम कितनी तेजी से कार्य करते हैं, बल्कि यह भी है कि हम कितनी समझदारी से सीखते हैं, कितना प्रभावी ढंग से समय का उपयोग करते हैं और कितनी ईमानदारी से अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं। यही समन्वय कृत्रिम बुद्धिमत्ता, प्रभावी समय प्रबंधन, मौलिक सोच और पीढ़ियों के अनुभव का संतुलन 21वीं सदी की शिक्षा की सबसे बड़ी शक्ति और विद्यार्थियों की सफलता का नया मंत्र है।

*****

- *हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ बनाती है।*

  –राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

- *राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिन्दी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।*

  –लाला लाजपत राय

भारतीय अर्थव्यवस्था में युद्ध की भूमिका

मानस परिहार
अधिकारी (मानव संसाधन कार्यालय)

एक ऐसा युद्ध जो हजारों मील दूर लड़ा जा रहा हो, क्या वह भारत के आम नागरिक के दैनिक जीवन को प्रभावित कर सकता है? सामान्यतः इसका उत्तर ''नहीं'' प्रतीत होता है, लेकिन वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि किसी भी क्षेत्रीय युद्ध का प्रभाव पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है। ईरान और इजराइल के बीच बढ़ते तनाव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वैश्विक भू–राजनीतिक संघर्ष केवल संबंधित देशों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उनके आर्थिक प्रभाव दूर–दराज के देशों तक भी पहुँचते हैं। ऐसे संघर्ष अंतरराष्ट्रीय व्यापार, ऊर्जा बाजार, वित्तीय स्थिरता और निवेश के वातावरण को प्रभावित करते हैं। भारत, जो विश्व के सबसे बड़े कच्चे तेल आयातकों में से एक है, मध्य–पूर्व में होने वाली किसी भी अस्थिरता से विशेष रूप से प्रभावित होता है।

भारत विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है और उसकी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को निरंतर ऊर्जा की आवश्यकता होती है। औद्योगिक विकास, परिवहन, कृषि तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों के लिए कच्चा तेल एक अत्यंत महत्वपूर्ण संसाधन है। भारत अपनी आवश्यकता का अधिकांश कच्चा तेल मध्य–पूर्व के देशों से आयात करता है। जब इस क्षेत्र में युद्ध या तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है, तो तेल की आपूर्ति बाधित होने की आशंका बढ़ जाती है, जिसके परिणामस्वरूप अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ जाती हैं। इससे भारत का आयात बिल बढ़ता है तथा परिवहन और उत्पादन की लागत में वृद्धि होती है। अंततः इसका सीधा प्रभाव महँगाई के रूप में आम जनता और उद्योगों दोनों पर पड़ता है।

युद्ध और भू–राजनीतिक तनाव का प्रभाव केवल ऊर्जा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता। ऐसे समय में वैश्विक वित्तीय बाजारों में अनिश्चितता बढ़ जाती है। विदेशी निवेशक अपेक्षाकृत सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख करते हैं, जिससे भारत जैसे उभरते देशों में विदेशी निवेश कम हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय रुपये पर दबाव बढ़ता है और उसका मूल्य अमेरिकी डॉलर की तुलना में कमजोर हो सकता है। साथ ही, समुद्री शिपिंग मार्गों और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में आने वाली बाधाओं के कारण लॉजिस्टिक्स की लागत भी बढ़ जाती है, जिससे आयात–निर्यात पर निर्भर उद्योगों की लागत और प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित होती है।

इन चुनौतियों के बीच भारत के लिए सबसे बड़ी सीख आत्मनिर्भरता की है। वर्तमान परिस्थितियाँ भारत को ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार को मजबूत करने, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने तथा आयातित कच्चे तेल पर निर्भरता कम करने के लिए प्रेरित करती हैं। साथ ही, घरेलू ऊर्जा उत्पादन और वैकल्पिक ईंधनों के विकास पर बल देना भी समय की आवश्यकता है। ये कदम भारत की दीर्घकालिक आर्थिक मजबूती तथा ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

निष्कर्षतः ईरान–इजराइल संघर्ष यह दर्शाता है कि अंतरराष्ट्रीय भू–राजनीतिक घटनाओं का उन देशों की अर्थव्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव पड़ सकता है जो सीधे तौर पर उस संघर्ष में शामिल नहीं होते। भारत के

लिए इसका प्रभाव तेल की कीमतों, महँगाई, व्यापार, विदेशी निवेश और समग्र आर्थिक विकास पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसलिए, इन चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए दूरदर्शी आर्थिक नीतियाँ, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का विकास तथा आर्थिक विविधीकरण अत्यंत आवश्यक हैं। यही उपाय भारत को भविष्य में अधिक स्थिर, सशक्त और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था बनाने में सहायक होंगे।

*****

"बेटी"

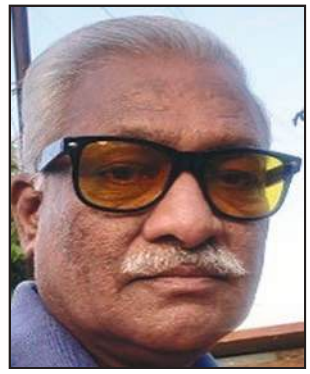

अजय सिंह राठौड़

बेटी आनंद की आहट है
बेटी से सबकी मुस्कराहट है
सबको सपनों की सुगबुगाहट है
बेटी से ही घर की बसाहट है..

बेटी सबकी खुशी है
बेटी सबकी खिलखिलाहट है
बेटी पंछियों की चहचहाट है
बेटी हर मन की गुनगुनाहट है..

बेटी सबका अरमान है
बेटी चरणामृत का आचमन है
बेटी हर मां का बचपन है
बेटी हर घर का दरपन है..

बेटी है तो कल है
बेटी सरिता की कल कल है
बेटी से ही जीवन की हलचल है
बेटी से आनंदित हर पल है..

बेटी खुशबूदार हवा का झोंका है
बेटी जीने का दूजा मौका है
बेटी तहजीब है, सलीका है
बेटी हर पिता की मलिका है..

बेटी दो घरों का संगम है
बेटी सुर ताल में छुपी सरगम है
बेटी दुःख दर्द में मरहम है
बेटी परायी नहीं हमदम है..

बेटी पूजा का पुष्प है,सुगंध है
बेटी काव्य है,निबंध है
बेटी प्यारा सा अनुबंध है
बेटी दो घरों का संबंध है..

बेटी कल्पना का आकार है
बेटी तम का प्रतिकार है
बेटी एक अधिकार है
बेटी अतिथि–सत्कार है..

बेटी भावना का सैलाब है
बेटी दो नदियों का दोआब है
बेटी विद्या है, सबक है, किताब है
बेटी सबाब है..

बेटी गुल है, गुलशन है, गुलिस्तां है
बेटी जज़्बातों की दास्तां है
बेटी बहन है,पत्नि है,मां है
बेटी सबा है, धरा है, आसमां है...

*****

बोधकथा....संघर्ष बदले, जीवन बदले...

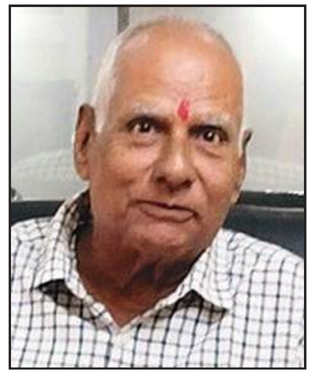

श्री सतराम भाटिया

लोगों का सपना क्या है? सपना केवल जीत का या हारने का नहीं होता। मेरे जीवन में ऐसा भी समय आया जब मुझे कई बार बिना किसी फल की अपेक्षा के बड़े संघर्षों से गुजरना पड़ा। मेरे जीवन में कई उतार–चढ़ाव आए। लेकिन क्या मैंने हर लक्ष्य हासिल कर पाया? नहीं। क्या मैंने हर सपना पूरा किया? नहीं। क्या मैंने हर रिकॉर्ड तोड़ा? नहीं। लेकिन मैंने कोशिश की, मैंने हार नहीं मानी क्योंकि यही सबसे बड़ी जीत होती है। हर अवसर आपकी जिंदगी में उन चीजों से आगे बढ़ने का होता है जो हमें रोकती हैं। जिंदगी केवल इस बात का हिसाब नहीं है कि आपने क्या पाया या क्या खोया। इसका असली उद्देश्य है कि आपने क्या सीखा। मैं नहीं जानता कि मैं सफल हूँ या असफल, लेकिन इतना जानता हूँ कि जब तक मैं कर्म करता रहूँगा तब तक कोई मुझे रोक नहीं सकता। मेरा मानना है की इस सफर में हर चीज का एक समय होता है लक्ष्य हमेशा रहते है लेकिन उनके पीछे भागना नहीं चाहिए। आज अगर मैं कुछ बात समझा पा रहा हूँ तो यह सब अचानक नहीं हुआ। पाँच साल की उम्र से ही शुरू हुआ सफर, हर दिन की मेहनत, सही लोगों का साथ और अपने प्रोसेस पर भरोसा, यही असली जीत है। अपने पेशेंस (धैर्य) पर भरोसा रखिए। कभी कभी सपने जोर से नहीं बोलते वे बस धीरे से कान में फुसफुसाते है उन्हें सुनना आसान नहीं होता है इसीलिए जिंदगी के हर दिन में हमें इतना तैयार रहना चाहिए कि उन धीमी आवाजों को सुन सके। शायद इसी आवाज से मेरे भीतर वह ताकत आई है। मैं इतना उत्साहित और शांत रहता हूँ कि कई बार निराशा भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाती। उन्हें वक्त दें, कल वही सपना पूरा होगा जो आज से पहले बहुत दूर नजर आता था।अपने सपनों पर भरोसा रखें, क्योंकि धीरे–धीरे वही आपकी पहचान बन जाते हैं। असल सफलता तब आती है जब संघर्ष को आप स्वीकार करते हैं और वही संघर्ष आपको मजबूत इंसान बना देता है। आदत बदली... सोच बदली... जीवन बदला... हर इंसान के जीवन में ऐसा समय जरूर आता है, जब उसे महसूस होता है कि यदि अब स्वयं को नहीं बदला, तो बहुत कुछ हाथ से निकल सकता है। मैंने भी पाया कि मेरी कुछ आदतें धीरे–धीरे मुझे कमजोर बना रही थीं। पहले मैं हर काम को टाल देता था। पढ़ाई हो, समय पर उठना हो या किसी काम को पूरा करना हो, मैं हमेशा टालता रहता था। मुझे हमेशा लगता था कि अभी तो समय है, बाद में कर लूँगा। लेकिन यही आदत धीरे–धीरे सबसे बड़ी कमजोरी बन गई। इसका असर मेरी पढ़ाई और आत्म–विश्वास पर भी पड़ने लगा। जब दूसरे बच्चे अपने काम समय पर पूरा कर लेते थे और मैं पीछे रह जाता था, तब भीतर ही भीतर बहुत बुरा लगता था। कई बार मन में निराशा भी आती थी कि शायद मैं उतना अच्छा नहीं हूँ। एक दिन मैंने स्वयं से सवाल किया– ष्क्या सच में मेरी कमी है, या मेरी आदतें मुझे पीछे खींच रही हैं?ष यही सवाल मेरे जीवन का टर्निंग पॉइंट बन गया। उस दिन मैंने तय किया कि मैं रातों–रात सब कुछ नहीं बदलूँगा, लेकिन रोज एक छोटी–सी अच्छी आदत जरूर अपनाऊँगा। सबसे पहले मैंने अपने दिन की शुरुआत बदलनी शुरू की। सुबह थोड़ा जल्दी उठना, लिखने का समय तय करना, छोटी–सी सूची बनाना और सबसे जरूरी काम उसी दिन करना। शुरुआत आसान नहीं थी। कई बार पुरानी आदतें वापस लौट आती थीं, लेकिन मैंने हार नहीं मानी। कुछ ही दिनों बाद अपने अंदर बदलाव महसूस होने लगा। जो काम पहले

बोझ लगते थे, वे अब आसान लगने लगे। पढ़ाई में मन पहले से ज्यादा लगने लगा। सबसे बड़ा फर्क यह पड़ा कि मुझे अपने ऊपर भरोसा होने लगा। पहले मैं खुद को लेकर उलझन में रहता था, लेकिन अब धीरे–धीरे आत्मविश्वास लौटने लगा। इस बदलाव ने मुझे सिखाया कि जीवन अचानक नहीं बदलता, बल्कि छोटे–छोटे फैसलों से बदलता है। आज भी मैं स्वयं को सुधारने की प्रक्रिया में हूँ। मैं यह नहीं मानता कि मैं पूरी तरह बदल गया हूँ, लेकिन इतना जरूर समझ गया हूँ कि अब रुकने की इच्छा नहीं है। यदि इंसान खुद से सच्चा रहे और हर दिन थोड़ा–थोड़ा बेहतर बनने की कोशिश करे, तो बदलाव निश्चित है। अब मैं पहले वाला व्यक्ति नहीं हूँ अगर जिंदगी आपको चुनौतियाँ दे रही है, लोग आप पर भरोसा नहीं कर रहे हैं, तो याद रखिए कभी–कभी वही चीज आपकी सबसे बड़ी ताकत भी बन सकती है। इस बात को पूरी तरह समझ लिया जाए तो जीवन बहुत आसान हो जाता है। दुनिया से लड़ना आसान है, पर स्वयं पर विजय पाना कठिन है। इंसानों की सबसे बड़ी जीत अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना है, क्रोध को रोकना है और अपनी ऊर्जा को सही उद्देश्य में लगाना है। जो ऐसा कर पाता है, वही सच्चे अर्थों में सफल होता है। जो भावनाओं के वश में रहता है, वह उन्हें अपनी परेशानी बना लेता है। जो परिस्थितियों पर मुस्कुराना सीख जाता है, वही जीवन का असली आनंद लेता है। इसलिए दूसरों को बदलने की बजाय स्वयं को बदलना अधिक आवश्यक है। यदि जीवन में समझदारी से निर्णय लिए जाएँ, तो कठिन से कठिन रास्ता भी आसान लगने लगता है।

जीवन को नियंत्रित करने की कोशिश मत करो, बल्कि जीवन को समझने की कोशिश करो। जब समझ बढ़ती है, तो स्वयं पर विश्वास बढ़ता है। साधारण चीजों को भी ध्यान से देखना सीखो। खुशियाँ बाहर नहीं, हमारे मन के भीतर होती हैं। जो व्यक्ति यह समझ लेता है कि उसकी हर इच्छा पूरी होना आवश्यक नहीं है, वही वास्तव में शांत रहता है।

मत कर तलाश किसी और की, ऐ मुसाफिर सफर ये तेरा है।
तू खुद ही खुद का हमसफर बन, किसी और से तुझे क्या शिकवा है।।

*****

हॉकी... हमारा राष्ट्रीय खेल

–शिवाजी खाडके

इस खेल की कुछ अद्भुत विशेषताओं को एक विशिष्ट अंदाज में परिभाषित किया गया है।

खेल का नीला भव्य मैदान, इस पर दोनों टीमों के 22 चुस्त–दुरुस्त खिलाड़ी हैं मुकाबले को तैयार। फिर शुरू होती है 60 मिनट की तेज रफ्तार, कभी आर–कभी पार। सटीक पासेस, सुन्दर ट्रेपिंग, अद्भुत ड्रिबलिंग, फुर्तीला आक्रमण और मुस्तैद रक्षण। हैरतअंगेज पेनल्टी कॉर्नर और करिश्माई ड्रैग फ्लिक निशाना। विभिन्न कोणों से होते दनदनाते दर्शनीय गोल। ऐसे रोमांचक खेल के नजारों को कहा जाता है... हॉकी। वाह हॉकी! सलाम हॉकी! क्या खूब हॉकी!

*****

आधुनिकता के भंवर में हिंदी

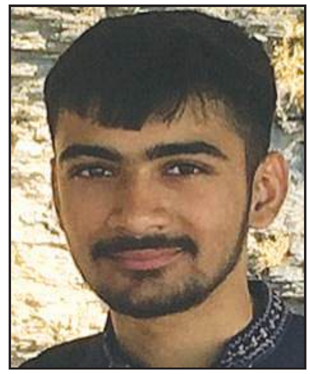

सार्थक खोडे
सुपुत्र श्री पंकज खोडे

हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। दुनिया भर के लगभग 61 करोड़ लोग हिंदी लिख और समझ सकते हैं, जिनमें से करीब 32 करोड़ लोग इसे अपनी मातृभाषा मानते हैं। आज के आधुनिक युग में, जहाँ विदेशी भाषाओं ने भारतीय शिक्षा पद्धति में अपनी पकड़ मजबूत कर ली है, वहीं हिंदी कई स्थानों पर केवल एक वैकल्पिक या अतिरिक्त भाषा बनकर रह गई है। पिछले कुछ वर्षो में भारतीय शिक्षण संस्थानों में अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं (जैसे स्पेनिश, फ्रेंच आदि) का चलन तेजी से बढ़ा है, जिसका मुख्य कारण वैश्विक स्तर पर बढ़ती व्यावसायिक और तकनीकी आवश्यकताएं हैं। यही नहीं, हमारी दैनिक बोलचाल में भी अंग्रेजी शब्दों एवं वाक्यों का उपयोग बहुतायत में होने लगा है, जिससे 'हिंग्लिश' का चलन बढ़ा है।

वर्तमान युग में अंग्रेजी भाषा को समझना और लिख पाना एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है, जिसके बिना व्यावसायिक जीवन में आगे बढ़ना काफी कठिन प्रतीत होता है। इसी आधुनिकता के जाल में उलझकर हिंदी भाषा हमसे दूर होती जा रही है। इस बढ़ती दूरी को कम करने एवं हिंदी के समग्र विकास के लिए विभिन्न संस्थाओं और सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं :

राजभाषा अधिनियमः इसके तहत केंद्र सरकार के आदेशों, प्रस्तावों, नियमों, अधिसूचनाओं और प्रशासनिक रिपोर्टों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करना अनिवार्य किया गया है।

वार्षिक कार्यक्रमः सरकारी संस्थानों में नियमित रूप से वार्षिक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, ताकि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिल सके।

हिंदी अनुभागः केंद्र सरकार के अधीन आने वाले शिक्षण व प्रशासनिक संस्थानों में शहिंदी अनुभागश का गठन अनिवार्य किया गया है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोगः इस आयोग का मुख्य कार्य विज्ञान, तकनीकी, इंजीनि यरिंग और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों के लिए हिंदी में मानक शब्दावली तैयार करना है, ताकि उच्च शिक्षा की पुस्तकें हिंदी में सुलभ कराई जा सकें।

"भाषिणी AI" : केंद्र सरकार द्वारा निर्मित इस एआई (AI) प्लेटफॉर्म का उद्देश्य हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद के माध्यम से भाषाई बाधाओं को दूर करना है।

इसके साथ ही, वर्तमान में कई बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) ने भी हिंदी भाषा के महत्व को ध्यान में रखते हुए अपनी वेबसाइटों, ऐप्स एवं तकनीकी उत्पादों को हिंदी में उपलब्ध कराना शुरू कर दिया है, उदाहरण के रूप में 'वॉयस असिस्टेंट', जो न सिर्फ हिंदी समझ रहे है बल्कि उसी लहजे में उत्तर भी दे रहे है। तकनीकी दुनिया में हो रहे इस बदलाव ने हिंदी की पहुँच को वैश्विक स्तर पर और अधिक व्यापक बना दिया है।

भाषा सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र की संस्कृति की पहचान होती है। यही कारण है कि हिंदी के विकास और सम्मान में हर वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता। परन्तु यह हम सभी कि जिम्मेदारी है की हम इसे सिर्फ एक दिन का उत्सव न बनाकर अपने दैनिक जीवन का गौरव बनाएं।

*****

आयकर का नया कानूनः आम नागरिकों के लिए एक सरल मार्गदर्शिका

कमलेश भाटिया
लेखा अधिकारी

भारत सरकार ने Income & tax Act, 2025 लागू किया है, जिसका उद्देश्य आयकर कानून को सरल, पारदर्शी, डिजिटल एवं नागरिक–अनुकूल बनाना है। वर्षों से लागू आयकर अधिनियम, 1961 को पुनर्गठित करते हुए नए अधिनियम में भाषा को सरल बनाया गया है, अनावश्यक प्रावधानों को हटाया गया है तथा अधिकांश धाराओं (Sections) एवं प्रपत्रों (थ्वतउे) का पुनः क्रमांकन (Renumbering) किया गया है।

यह परिवर्तन मुख्यतः कानून को समझने और उसका अनुपालन (Compliance) आसान बनाने के लिए किया गया है।

नए आयकर प्रावधानों के अंतर्गत अधिकांश वेतनभोगी एवं सामान्य करदाताओं के लिए नई कर व्यवस्था (New Tax Regime) को प्राथमिक विकल्प बनाया गया है। इस व्यवस्था में कर की दरें अपेक्षाकृत कम रखी गई हैं, जिससे अधिकांश करदाताओं को कम कर देना पड़ सकता है। हालांकि, इस व्यवस्था में पूर्व में उपलब्ध कई प्रकार की छूट एवं कटौतियाँ सीमित या समाप्त कर दी गई हैं। इसलिए प्रत्येक करदाता को अपनी आय एवं निवेश के आधार पर उपयुक्त कर व्यवस्था का चयन करना चाहिए।

नए आयकर कानून का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य डिजिटल एवं फेसलेस (Faceless) कर प्रशासन को बढ़ावा देना है। अब आयकर रिटर्न दाखिल करना, रिफंड प्राप्त करना, नोटिस का उत्तर देना तथा अधिकांश कर संबंधी कार्य ऑनलाइन माध्यम से किए जा सकते हैं। इससे पारदर्शिता बढ़ी है, समय की बचत होती है तथा करदाताओं को अनावश्यक कार्यालयी प्रक्रियाओं से राहत मिलती है।

क्या आप जानते हैं?

नए आयकर अधिनियम में अधिकांश Sections के नंबर बदल गए हैं।

कई Forms के नंबर भी बदल दिए गए हैं। इसलिए यदि किसी दस्तावेज, नोटिस या आयकर पोर्टल पर नया Form Number या नया Section Number दिखाई दे, तो भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है।

अधिकांश मामलों में केवल क्रमांक (Numbering) बदला है, प्रावधान का मूल उद्देश्य एवं उपयोग लगभग पूर्ववत है।

पुराने वर्षों (Earlier Years) से संबंधित आयकर मामलों पर आवश्यकतानुसार पुराने प्रावधान लागू रहेंगे, जबकि नए Tax Year के लिए नया अधिनियम प्रभावी होगा।

प्रमुख परिवर्तन – एक नजर में

- Form 16 नया Form 130

- Form 26AS नया Form 168
- Forms 15G/15H नया Form 121
- PY एवं AY अब केवल Tax Year

प्रत्येक नागरिक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी आय से संबंधित सभी दस्तावेज जैसे फॉर्म–16 (नया Form 130), वार्षिक सूचना विवरण (AIS), फॉर्म 26AS (नया Form 168), बैंक ब्याज प्रमाणपत्र, निवेश एवं व्यय के प्रमाण सुरक्षित रखें। Form 26AS का स्वरूप अब केवल TDS तक सीमित नहीं है। करदाता को AIS तथा Tax Credit Statement दोनों का मिलान करके ही आयकर रिटर्न दाखिल करना चाहिए।

आयकर रिटर्न भरने से पहले इन सभी विवरणों का मिलान कर लेने से त्रुटियों की संभावना कम हो जाती है और भविष्य में किसी प्रकार की असुविधा से बचा जा सकता है।

यदि किसी व्यक्ति की आय कर योग्य सीमा से अधिक है, तो उसे निर्धारित समय–सीमा के भीतर आयकर रिटर्न अवश्य दाखिल करना चाहिए। समय पर रिटर्न दाखिल करने से न केवल विलंब शुल्क एवं ब्याज से बचाव होता है, बल्कि ऋण, वीजा, सरकारी योजनाओं एवं अन्य वित्तीय कार्यों में भी आयकर रिटर्न एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में उपयोगी सिद्ध होता है।

करदाताओं को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आयकर कानून के अंतर्गत गलत जानकारी देना, आय छिपाना या गलत दावा करना दंड एवं कानूनी कार्रवाई का कारण बन सकता है। इसलिए सभी वित्तीय लेन–देन का सही रिकॉर्ड रखना तथा सत्य एवं पूर्ण जानकारी के आधार पर आयकर विवरण प्रस्तुत करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

अंततः, नया आयकर कानून केवल कर संग्रह का माध्यम नहीं है, बल्कि एक सरल, पारदर्शी, उत्तरदायी एवं डिजिटल कर प्रणाली की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। समय पर आयकर रिटर्न दाखिल करना, सही जानकारी देना तथा अपने कर अभिलेखों का मिलान करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

यदि प्रत्येक नागरिक समय पर सही जानकारी के साथ अपने कर संबंधी दायित्वों का पालन करे, तो वह न केवल कानूनी जटिलताओं से बच सकता है, बल्कि देश के आर्थिक विकास एवं राष्ट्र निर्माण में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

आपकी जानकारी के लिए

यह लेख केवल आपकी सामान्य जानकारी एवं जागरूकता के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें आयकर के नए प्रावधानों को सरल एवं संक्षिप्त रूप में समझाने का प्रयास किया गया है, ताकि नए आयकर कानून की मूलभूत जानकारी सरल भाषा में प्राप्त कर सके। विस्तृत जानकारी के लिए आयकर विभाग द्वारा जारी आधिकारिक अधिनियम, नियम एवं दिशानिर्देशों का संदर्भ लिया जा सकता है।

याद रखें

''सही जानकारी ● समय पर रिटर्न ● पारदर्शी कर अनुपालन – यही जिम्मेदार नागरिक की पहचान है।''

*****

कार्य–जीवन संतुलन : सफलता और सुख का आधार

चांदनी जैन

कार्य–जीवन संतुलन (Work-Life Balance) का अर्थ है अपने कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच उचित सामंजस्य बनाए रखना। आज की तेज रफ्तार और प्रतिस्पर्धी जीवनशैली में लोग अपने कार्यों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि परिवार, स्वास्थ्य और स्वयं के लिए समय निकालना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में कार्य–जीवन संतुलन का महत्व और भी बढ़ जाता है।

यदि व्यक्ति केवल काम पर ही ध्यान देता है और अपने परिवार, स्वास्थ्य तथा मानसिक शांति की उपेक्षा करता है, तो उसका प्रभाव उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। अत्यधिक कार्यभार तनाव, थकान और कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। दूसरी ओर, यदि व्यक्ति अपने कार्य और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखता है, तो वह अधिक ऊर्जावान, प्रसन्न और उत्पादक रहता है। इससे उसके कार्य की गुणवत्ता भी बेहतर होती है और पारिवारिक संबंध भी मजबूत बने रहते हैं।

कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखने के लिए समय का उचित प्रबंधन आवश्यक है। नियमित दिनचर्या अपनाना, कार्यों को प्राथमिकता देना, पर्याप्त विश्राम करना तथा परिवार और मित्रों के साथ समय बिताना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। साथ ही, योग, व्यायाम और अपनी रुचियों के लिए समय निकालने से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर बना रहता है।

अंततः, कार्य–जीवन संतुलन केवल व्यक्तिगत सुख का ही नहीं, बल्कि दीर्घकालिक सफलता का भी आधार है। जो व्यक्ति अपने कार्य और निजी जीवन के बीच संतुलन स्थापित कर लेता है, वह जीवन की चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से सामना कर सकता है और स्वयं के साथ–साथ समाज के विकास में भी सार्थक योगदान दे सकता है।

*****

❖ *राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें दो राय नहीं।*

– जवाहर लाल नेहरू

❖ *देश की एकता को एक सूत्र में आबद्ध करने की शक्ति केवल हिन्दी में है।*

– श्रीमती इंदिरा गाँधी

❖ *हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।*

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

शहर मुझे आज भी याद है

भूपेन्द्र पांडेय
अधिकारी स्टोर्स एवं परचेज

वो शहर मुझे आज भी याद है। पता नहीं क्यों, लेकिन उसका नाम सुनते ही मन अपने आप उन दिनों में लौट जाता है। वहाँ की गलियाँ, चौराहे, छोटी–छोटी दुकानें और शाम को घर लौटते लोगों की चहल–पहल आज भी आँखों के सामने घूम जाती है। उस समय शायद कभी एहसास ही नहीं था कि एक दिन यही सब यादें बन जाएँगी।

उसी शहर में मेरा बचपन बीता। स्कूल जाना कभी सिर्फ पढ़ाई के लिए नहीं होता था, बल्कि दोस्तों से मिलने का सबसे अच्छा बहाना होता था। सुबह की प्रार्थना, क्लास में शरारतें, टीचर की डाँट, लंच में एक–दूसरे का टिफिन खाना और छुट्टी की घंटी बजते ही मैदान की तरफ भागना–यही तो हमारी दुनिया थी। न मोबाइल थे, न किसी बात की जल्दी। छोटी–छोटी बातों में ही इतनी खुशी मिल जाती थी कि पूरा दिन हँसते–हँसते निकल जाता था।

बारिश के दिनों में भीगते हुए घर लौटना, रास्ते में समोसे या चाट खाना, त्योहारों पर पूरे मोहल्ले का एक साथ जुटना और गर्मियों की छुट्टियों में बिना समय देखे खेलते रहना, आज सोचता हूँ तो लगता है कि वही असली जिंदगी थी। उन दिनों की सादगी में जो अपनापन था, वह आज की भागदौड़ में कहीं खो–सा गया है।

अब जब कभी उस शहर की याद आती है, तो ऐसा लगता है जैसे दिल का कोई हिस्सा आज भी वहीं रह गया हो। शायद बहुत कुछ बदल गया होगा–सड़कें, मकान, लोग और उनकी जिंदगी भी। लेकिन मेरी यादों में वह शहर आज भी वैसा ही है, जैसा मैंने उसे छोड़ा था।

कभी–कभी मन करता है कि फिर से वहाँ जाऊँ। अपने पुराने स्कूल के सामने कुछ देर खड़ा रहूँ, उन गलियों में बिना किसी मंजिल के घूमूँ और बस चुपचाप उन दिनों को याद करूँ, जब जिंदगी बहुत आसान थी। सच कहूँ तो वह शहर सिर्फ एक जगह नहीं था, वह मेरे बचपन, मेरे दोस्तों और मेरी सबसे प्यारी यादों का घर था। शायद इसलिए, वो शहर मुझे आज भी याद है।

*****

डगर–ए–जिंदगी

पंकज चौहान
मानव संसाधन कार्यालय

चलते रहें गर डगर–ए–जिंदगी मुश्किल मिले,
यह सोचकर कि हर रात के बाद दिन मिले।
संभले नहीं गिरकर, तो यह जिंदगी क्या है,
फिर वह मंजिल ही क्या है, जो बिना लड़कर मिले।
बागों–बहारों के फूल अक्सर कुचल दिए गए,
तवज्जो उन्हीं को मिली, जो मेहनत की मिट्टी में खिले।
हौसलों के दीप आँधियों से बुझते नहीं,
मंजिल उसे मिलती नहीं, जो वक्त से जूझते नहीं।
हर सहर एक नया संदेश, नई उम्मीद लाती है,
आशा की किरण ही जीवन को महकाती है।
चलते रहो, विश्वास रखो, समय भी साथ निभाएगा,
आज का संघर्ष ही कल सफल होकर आएगा।

*****

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साये में मानव कौशल का क्षरण

भूपेंद्र कुमार चौहान
कार्यकारी सहायक

एक ऐसा उपकरण जिसने नियम बदल दिए

एक दशक पहले, कोई रिपोर्ट लिखना या प्रेजेंटेशन तैयार करना समय, चिंतन और परिश्रम की माँग करता था। आज एक ही संकेत (प्रॉम्प्ट) से सेकंडों में तैयार मसौदा मिल जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब ईमेल लेखन, सारांश–निर्माण, विचार–सृजन और प्रस्तुतीकरण के लिए स्वाभाविक सहारा बन चुकी है – तीव्र, सक्षम और अथक।

किंतु इस सुविधा का मूल्य चुपचाप चुकाया जाता है। जब कोई यंत्र बार–बार हमारी ओर से सोचता है, तो सोचने की सामर्थ्य स्वयं क्षीण होने लगती है। प्रश्न यह नहीं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोगी है या नहीं – प्रश्न यह है कि क्या हम इसका उपयोग अपनी क्षमताओं को निखारने में कर रहे हैं, या चुपचाप उन्हें किसी यंत्र को सौंपते जा रहे हैं।

सहयोग से निर्भरता तक की यात्रा

यह बदलाव क्रमिक और लगभग अदृश्य होता है। एक विद्यार्थी पहले व्याकरण जँचवाता है, फिर पैराग्राफ पुनर्गठित करवाता है, और अंततः पूरा लेखन ही यंत्र को सौंप देता है। एक प्रबंधक रिपोर्ट का सार पढ़ना शुरू करता है, फिर मूल रिपोर्ट पढ़ना ही त्याग देता है। प्रत्येक कदम तर्कसंगत प्रतीत होता है, पर मिलकर ये कदम सहायक को प्रतिस्थापन में बदल देते हैं – कौशल को सहारा देने से लेकर उसकी आवश्यकता को ही समाप्त कर देने तक।

आलोचनात्मक चिंतन, किसी भी अन्य कौशल की भाँति, संघर्ष से निर्मित होता है – तर्क गढ़ने की असुविधा, उपयुक्त शब्द खोजने का श्रम। यह संघर्ष निरंतर हटा दिया जाए, तो वह मानसिक क्षमता कभी परिपक्व ही नहीं होती।

क्षरण के चार आयाम

रचनात्मकता कुंठित होती है। जब यंत्र ही पहला और एकमात्र विचार–स्रोत बन जाए, मौलिक चिंतन का अभ्यास छूट जाता है।

समस्या–समाधान क्षमता क्षीण होती है। जो निरंतर यंत्र से समाधान माँगता है, वह स्वतंत्र निदान की योग्यता खो बैठता है – और यंत्र के अनुपलब्ध या त्रुटिपूर्ण होने पर असहाय रह जाता है।

लेखन–दक्षता घटती है। लेखन केवल पाठ–निर्माण नहीं, विचारों को तराशने की प्रक्रिया है। जिसका हर ईमेल यंत्र लिखता हो, वह प्रत्यक्ष वार्तालाप या बैठक में तर्क गढ़ने में लड़खड़ा सकता है।

निर्णय–क्षमता डगमगाती है। हर विकल्प के लिए यंत्र–सुझाव पर निर्भरता, अनिश्चितता में साहसिक निर्णय लेने का आत्मविश्वास क्षीण करती है – जो नेतृत्व की मूल कसौटी है।

एक व्यावहारिक दृष्टांत

एक कर्मचारी, जो दो वर्षों से प्रत्येक रिपोर्ट यंत्र से लिखवाता रहा – कार्य सदैव सराहनीय रहा। परंतु एक दिन बैठक में संपर्क बाधित हो जाता है, और तत्काल, बिना सहायता के, सारांश प्रस्तुत करना पड़ता है। वह हिचकिचा जाता है – बुद्धि की न्यूनता से नहीं, अभ्यास के अभाव से। कौशल लुप्त नहीं हुआ था, केवल निष्क्रियता से क्षीण हो गया था – जैसे व्यायाम बिना मांसपेशी शिथिल पड़ जाती है।

सहायक बनाम प्रतिस्थापन

निर्णायक भेद यह नहीं कि यंत्र का प्रयोग हो रहा है, बल्कि यह कि किस भाँति हो रहा है। सहायक के रूप में, यंत्र समझ में सहयोग देता है, स्वरचित मसौदे पर प्रतिक्रिया देता है – चिंतन मनुष्य के अधीन रहता है। प्रतिस्थापन के रूप में, यंत्र ही अंतिम परिणाम गढ़ता है, और मनुष्य का योगदान मात्र संकेत देने तक सिमट जाता है – परिणाम उत्कृष्ट हो सकता है, पर कोई क्षमता विकसित नहीं होती।

दायित्वपूर्ण उपयोग की राह

प्रथम मसौदा स्वयं रचें, तत्पश्चात यंत्र से परिष्करण करवाएँ – सृजन नहीं।

समाधान नहीं, समीक्षा माँगें – अपने तर्क की कसौटी पर यंत्र से प्रतिक्रिया लें।

सप्ताह में कोई कार्य सर्वथा बिना सहायता के करें, केवल कौशल को सजीव रखने हेतु।

यंत्र–परिणाम को अंतिम सत्य न मानें – सत्यापन सदैव आवश्यक है।

निष्कर्षः संवर्धन का साधन, प्रतिस्थापन नहीं

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से बचने का कोई व्यावहारिक तर्क नहीं – चुनौती अनुशासन की है। कौशल, शक्ति की भाँति, अभ्यास से निर्मित और उपेक्षा से नष्ट होते हैं। जो व्यक्ति और संस्थान भविष्य में आगे रहेंगे, वे यंत्र से दूरी बनाने वाले नहीं, बल्कि स्वयं कठिन चिंतन जारी रखने वाले होंगे – और यंत्र को अपने विचारों को तीक्ष्ण बनाने देंगे, विकल्प नहीं।

*****

> ***किसी राष्ट्र की राजभाषा वही भाषा हो सकती है जिसे उसके अधिकाधिक निवासी समझ सके।***
>
> ***– (आचार्य) चतुरसेन शास्त्री***

"मन की बातें"

विनिमय जैन
पुस्तकालय

आजकल लोग मिलते तो हैं,
पर सच में कोई मिलता नहीं,
हर चेहरा हँसता दिखता है,
पर अंदर से कोई खुश दिखता नहीं।
सब अपनी–अपनी दौड़ में हैं,
किसी को रुकने की फुर्सत कहाँ,
कोई पैसों के पीछे भाग रहा,
कोई अपने लोगों से ही दूर यहाँ।
रात को जब सब सो जाते हैं,
तब मन चुपचाप जागता है,
दिन भर जो कुछ कह नहीं पाते,
वो अंदर ही अंदर भागता है।
कभी–कभी बिना वजह भी
दिल थोड़ा भारी हो जाता है,
और छोटी–सी बात पर भी
आँखों में पानी आ जाता है।
मैंने एक दिन सोचा खुद से,
आखिर इतना डर किस बात का,
जिंदगी तो धीरे–धीरे चलती है,
फिर जल्दी किस बात की यहाँ।
अब थोड़ा खुद के लिए जीना है,
थोड़ा मन की भी सुनना है,
हर बार सबको खुश करने से पहले
एक बार खुद को चुनना है।
शायद यही सुकून है असली,
जब इंसान खुद से जुड़ जाता है,
वरना पूरी दुनिया के बीच भी
आदमी अकेला रह जाता है।

अभियुक्त: लेखक

डॉ. अनन्या मिश्र
सीनियर कंसलटेंट, ब्रांडिंग,
कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन्स एवं मीडिया रिलेशन्स, आईआईएम इन्दौर

कुछ वर्ष पहले एक लेखन प्रतियोगिता के परिणाम घोषित हो रहे थे। हर वर्ष के विपरीत उस वर्ष पुरस्कार किसी अन्य प्रतिभागी को मिला। पुरस्कार मिलना या न मिलना किसी भी प्रतियोगिता का स्वाभाविक परिणाम होता है। किंतु परिणाम के बाद निर्णायक मंडल के एक सदस्य ने मुस्कराते हुए एक वाक्य कहा, जो आज भी मेरे मन में वैसे ही अंकित है।

''हम माथा देखकर तिलक लगाते हैं।''

उस दिन मुझे पहली बार यह अनुभव हुआ कि अनेक बार 'लेख' नहीं पढ़े जाते, 'लेखक' पढ़े जाते हैं। शब्दों का मूल्यांकन बाद में होता है, नाम का, लेखक के पद का, और उसके संबंधों का पहले। यदि वही विचार शब्दशः भी किसी अपरिचित व्यक्ति के नाम से प्रस्तुत किए जाएँ, तो संभव है कि उन्हें पढ़ने का धैर्य भी बहुत कम लोग रखें।

स्थिति आज भी कुछ वैसी ही है – अविश्वास की। पहले कहा जाता था, ''इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं, अच्छा तो लिखेंगे ही।'' आज कहा जाता है, ''इतना अच्छा लिखा है, किसी कृत्रिम साधन की सहायता ली होगी।'' दोनों स्थितियों में अन्याय शब्दों के साथ हुआ है।

पहले विचार का मूल्य उसके सत्य से नहीं, लेखक के पद, परिचय और प्रतिष्ठा से निर्धारित किया जाता था। आज परिस्थिति बदल गई है, किंतु प्रवृत्ति नहीं। अब विचार का मूल्य इस संदेह से आँका जाने लगा है कि उसे किसी कृत्रिम साधन ने लिखा होगा।

कुछ वर्ष पूर्व तक ऐसे प्रश्नों की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। आज यदि कोई लेख सहज हो, भाषा स्वाभाविक हो, विचारों में गहराई हो और अभिव्यक्ति में वर्षों की साधना का सौष्ठव दिखाई दे, तो पहली प्रतिक्रिया प्रशंसा नहीं, संशय होती है। यदि कोई चित्र अत्यंत सुंदर हो, तो कहा जाता है कि वह वास्तविक नहीं हो सकता। यदि कोई स्वर असाधारण हो, तो उसमें भी कृत्रिम हस्तक्षेप खोज लिया जाता है। यदि कोई विचार भीतर तक स्पर्श कर जाए, तो सहज ही मान लिया जाता है कि वह किसी यंत्र की देन होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि हम उस समय में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ उत्कृष्टता विस्मय नहीं जगाती, संदेह जगाती है।

मनोविज्ञान इस प्रवृत्ति को सहज मानता है। जब कोई उपलब्धि हमारी सामान्य अपेक्षाओं से ऊपर होती है, तब मन उसे स्वीकार करने से पहले उसके लिए कोई बाहरी कारण खोजता है। परिश्रम की अपेक्षा संयोग को स्वीकार करना सरल होता है। साधना की अपेक्षा सुविधा पर विश्वास करना अधिक सहज होता है। प्रतिभा को वर्षों के अनुशासन का परिणाम मानने की अपेक्षा किसी अदृश्य सहारे की देन मान लेना मन के लिए कम श्रम का कार्य है। संभवतः इसी कारण आज उत्कृष्ट लेखन के पीछे वर्षों के अध्ययन, निरंतर अभ्यास और जीवनानुभव को देखने के स्थान पर लोग किसी कृत्रिम साधन की कल्पना कर लेते हैं। यह तकनीक का नहीं,

मनुष्य की दृष्टि का प्रश्न है।

वास्तव में यह प्रवृत्ति केवल लेखन तक सीमित नहीं है। यह हमारे समय की सांस्कृतिक प्रवृत्ति बनती जा रही है। अब साधना से अधिक उसका प्रदर्शन दिखाई देता है। अनुभव से अधिक उसकी प्रस्तुति का महत्त्व है। पुस्तक पढ़ना उतना आवश्यक नहीं रह गया, जितना उसके साथ चित्र प्रकाशित करना। किसी स्थान पर जाकर उसे आत्मसात् करना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं रह गया, जितना वहाँ अपनी उपस्थिति का प्रमाण देना। विचार को जीवन में उतारने से अधिक उसे सार्वजनिक कर देना आवश्यक समझा जाने लगा है। धीरे धीरे ऐसा समय निर्मित हो रहा है जिसमें जीवन पीछे छूटता जा रहा है और उसका प्रदर्शन आगे बढ़ता जा रहा है। और जब प्रदर्शन साधना से बड़ा हो जाए, तब स्वाभाविक ही है कि विश्वास की जगह संशय जन्म लेने लगे।

सबसे अधिक विस्मय इस बात का होता है कि वर्षों की साधना को आज कुछ ही क्षणों में अस्वीकार कर दिया जाता है। भाषा पर अधिकार किसी एक दिन का उपहार नहीं होता। विचारों की परिपक्वता भी किसी उपकरण की देन नहीं होती। उसके पीछे असंख्य पुस्तकों का अध्ययन होता है, अनगिनत रात्रि जागरण होते हैं, वरिष्ठों और गुरुजनों के सान्निध्य से प्राप्त संस्कार होते हैं, जीवन के संघर्षों से उपजा विवेक होता है और शब्दों के साथ बिताया गया वह लंबा एकांत होता है, जहाँ लेखक सबसे पहले स्वयं से संवाद करना सीखता है। प्रत्येक परिपक्व वाक्य के पीछे अनेक ऐसे अनुभव खड़े होते हैं, जिन्हें कोई देख नहीं पाता।

परंतु आज उस संपूर्ण साधना का निर्णय एक ही वाक्य कर देता हैः ''यह तो किसी कृत्रिम साधन ने लिखा होगा।''

कितनी विचित्र विडंबना है। रचना पढ़ने से पहले ही साधना का निषेध कर दिया जाता है। शब्दों को परखा भी नहीं जाता और सृजनकर्ता को संदेह के कटघरे में खड़ा कर दिया जाता है। तब प्रश्न यह नहीं रह जाता कि लेख किसने लिखा। प्रश्न यह बन जाता है कि क्या हम आज भी साधना को पहचानने की दृष्टि रखते हैं? क्या हम आज ही सत्य को नहीं समझ सके?

भारतीय दर्शन में सत्य का अर्थ केवल सत्य कथन नहीं है। सत्य वह है जो अपने स्वरूप में स्थित हो, जिसे प्रमाण की आवश्यकता न हो और जिसका आधार बाहरी स्वीकृति नहीं, स्वयं उसका अस्तित्व हो। आदि शंकराचार्य के समस्त चिंतन का सार भी यही है कि जो अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित है, वही सत्य है। जो दूसरों की मान्यता पर आश्रित है, वह क्षणभंगुर है।

लेखन भी इसी नियम का अनुसरण करता है। सच्चा साहित्य शब्दों की चतुराई से नहीं जन्म लेता, जीवन की तपश्चर्या से जन्म लेता है। उसमें केवल भाषा नहीं बोलती, लेखक का संपूर्ण जीवन बोलता है। उसका अध्ययन बोलता है, उसका मौन बोलता है, उसकी पराजय बोलती है, उसकी प्रतीक्षा बोलती है, उसका संघर्ष बोलता है और सबसे बढ़कर उसकी साधना बोलती है। यही वह स्वर है जिसे कोई कृत्रिम साधन कभी उत्पन्न नहीं कर सकता, क्योंकि शब्द रचे जा सकते हैं, जीवन नहीं।

विचारणीय प्रश्न यह नहीं है कि कृत्रिम साधन क्या कर सकते हैं। वे आज बहुत कुछ कर रहे हैं, कल उससे भी अधिक करेंगे और मानव जीवन को अनेक प्रकार से समृद्ध भी बनाएँगे। प्रश्न यह है कि क्या मनुष्य स्वयं मनुष्य की साधना पर विश्वास करना छोड़ चुका है? यदि प्रत्येक उत्कृष्ट रचना हमें कृत्रिम प्रतीत होने लगे, तो दोष रचना का नहीं, हमारी दृष्टि का है।

संभव है आने वाले समय में कृत्रिम साधन हमें और भी नए विचार दे और अधिक आकर्षक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करें। परंतु वे जीवन नहीं जी सकते। वे किसी माँ की आँखों में छिपी प्रतीक्षा का भार नहीं जानते। वे किसी

असफलता या निराशा के पश्चात् व्याप्त मौन का अर्थ नहीं समझते। वे किसी साधक के वर्षों के एकांत, असंख्य अस्वीकृतियों और अनगिनत आत्मसंघर्षों से नहीं गुजरते। वे शब्द रच सकते हैं, किंतु अनुभव नहीं। वे वाक्य गढ़ सकते हैं, किंतु संवेदना नहीं। वे भाषा का निर्माण कर सकते हैं, किंतु जीवन का नहीं।

हमें कृत्रिम साधनों से कोई भय नहीं है। भय उस दिन का है, जिस दिन मनुष्य किसी उत्कृष्ट रचना के सम्मुख ठहरकर यह कहेगा, ''इतना सुंदर विचार किसी मनुष्य का हो ही नहीं सकता।'' उस दिन पराजित कोई लेखक नहीं होगा, पराजित मनुष्य की सृजनशक्ति होगी। उस दिन पराजित भाषा नहीं होगी, पराजित विश्वास होगा। और जिस समाज में साधना से अधिक संदेह का सम्मान होने लगे, वहाँ संकट तकनीक का नहीं, संस्कृति का होता है।

शब्दों का अनुकरण किया जा सकता है। भाषा का अभ्यास किया जा सकता है। शैली का आवरण भी धारण किया जा सकता है। किंतु जिस विचार ने जीवन के ताप में तपकर जन्म लिया हो, जिसे अनुभव ने सींचा हो, जिसे संघर्ष ने गढ़ा हो और जिसे साधना ने तेज प्रदान किया हो, उसका निर्माण किसी युक्ति से नहीं होता।

इसलिए किसी रचना के सम्मुख खड़े होकर सबसे पहले यह मत पूछिए कि उसे किसने लिखा। पहले यह देखिए कि उसमें किसी जीवित मनुष्य का हृदय धड़कता है या नहीं। उसमें किसी साधक का तप है या नहीं। उसमें अनुभव की आँच है या नहीं। क्योंकि शब्द केवल वाक्य नहीं बनाते, वे जीवन का साक्ष्य भी देते हैं। यंत्र भाषा रच सकता है, जीवन नहीं। वह वाक्य बना सकता है, वेदना नहीं। वह संरचना दे सकता है, साधना नहीं।

और जिस दिन हम साधना और संरचना का भेद भूल जाएँगे, उस दिन पराजित कोई लेखक नहीं होगा, पराजित मनुष्य होगा।

*****

प्लेनेट–आईः ज्ञान और नेतृत्व का केंद्र

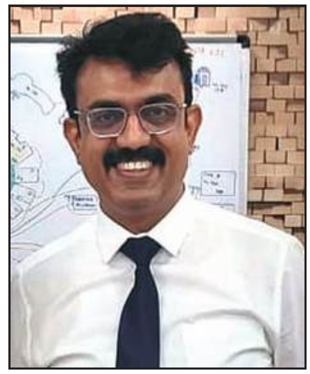

पियूष त्रिवेदी
अधिकारी, सिस्टम
एडमिन, आईटी विभाग

इन्दौर की पावन धरती पर, ज्ञान का फैला उजियारा,
आईआईएम इन्दौर है शिक्षा–जगत का चमकता सितारा।

1996 में जिसकी नींव रखी गई,
प्रबंधन शिक्षा की ज्योति यहाँ प्रखर हुई।

छठा रत्न IIM परिवार का बना,
हर दिशा में इसने कीर्तिमान रचा।

Planet-I नाम से विश्वभर में विख्यात,
ज्ञान, नेतृत्व, नवाचार का है यह साथ।

Triple Crown का गौरव जिसने पाया,
EQUIS, AMBA, AACSB का ताज सजाया।

विश्व पटल पर बढ़ता इसका मान,
हर वर्ष ऊँचा होता इसका स्थान।

उत्कृष्टता के पथ पर अटल यह संस्थान,
हर विद्यार्थी के सपनों को देता नई पहचान।

रैंकिंग में भी जगमगाता यह सितारा,

देश–विदेश में फैला इसका उजियारा।

उपलब्धियों की निरंतर बढ़ती उड़ान,
हर दिन गढ़ता सफलता की नई पहचान।

*****

हिंदी दिवस 2025 का भव्य आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2026

उल्लास

क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

संस्थान में गीता जयंती का आयोजन 2026

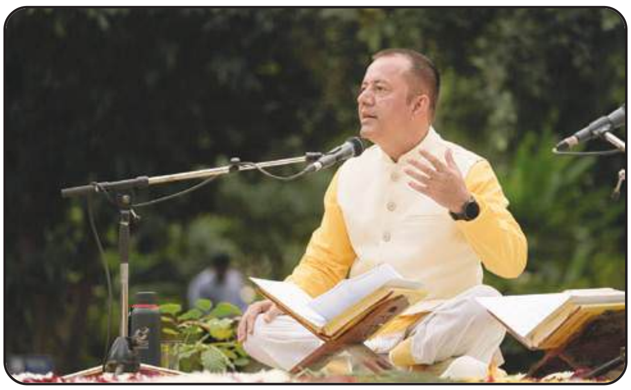

स्वच्छता पखवाड़ा 2025

दीक्षांत समारोह–2026

मीमांसा 2026

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संस्थान का राजभाषाई निरीक्षण

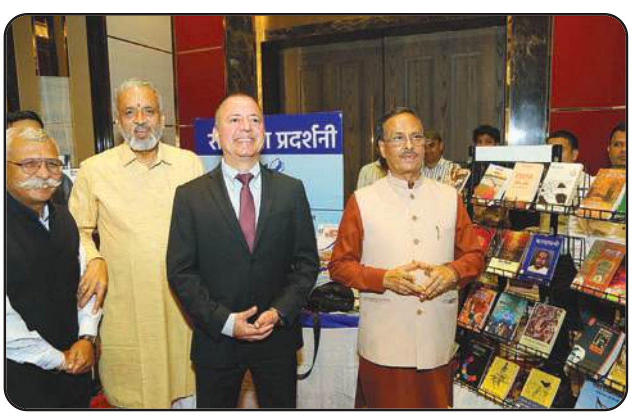

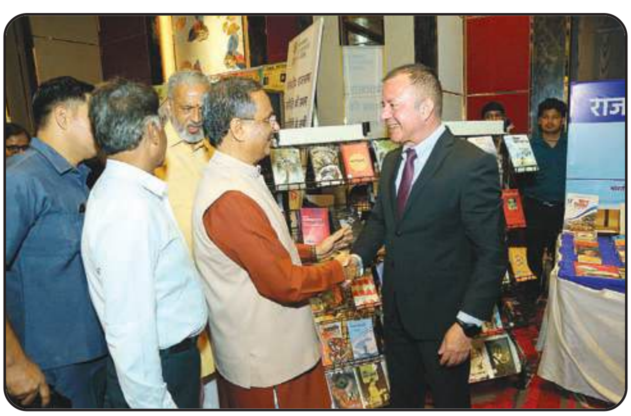

स्थापना दिवस 2025

स्विमैरो तैराकी प्रतियोगिता 2026

13 अगस्त 2026 नराकास इन्दौर (कार्यालय–2) की बैठक

विशेष संयुक्त नराकास इन्दौर (कार्यालय–2) कार्यशाला अप्रैल 2026

22 जनवरी 2026 नराकास इन्दौर (कार्यालय–2) की बैठक

ग्रेजुएशन सेरेमनी 2026

23 दिसंबर 2025 हिंदी कार्यशाला

इंटरनेशनल पार्टनर्स डे 2026

प्रोटोकॉल के तहत जवाहर नवोदय विद्यालय ओजार, बड़वानी का संस्थान दौरा

गाँधी जयंती 2025 का आयोजन

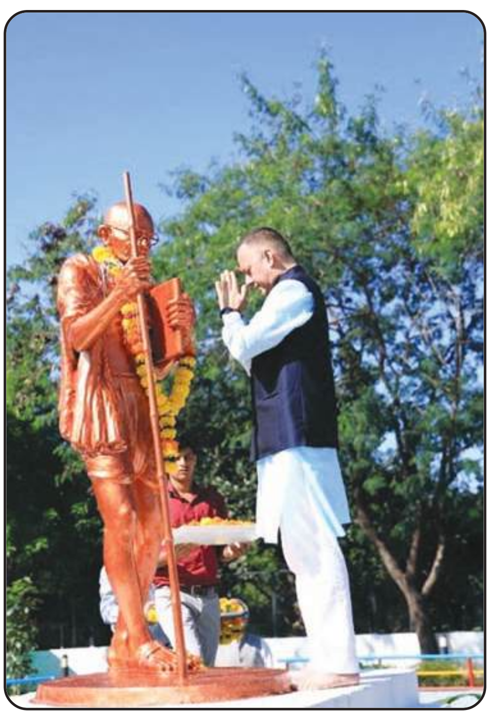

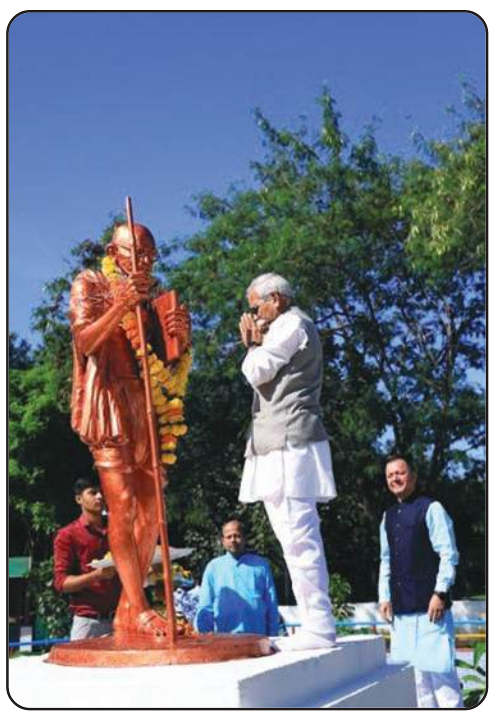

उद्यानिकी विभाग द्वारा सब्जियों का वितरण

एड्यूनिवर्सल वर्ल्ड कन्वेंशन 2025

स्पोर्ट्स एंड बिजनेस कॉन्फ्रैंस 2026

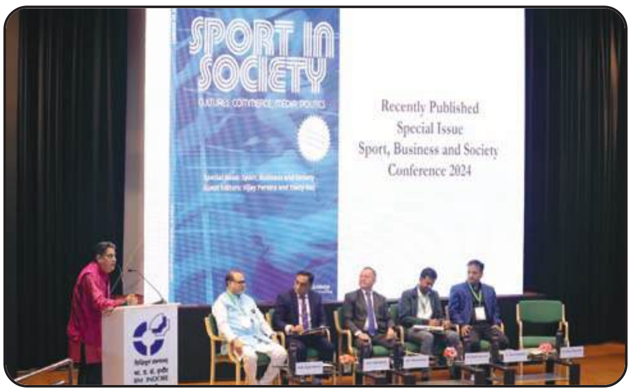

यूथ फॉर इम्पैक्ट 2026

मिथिलाकृति प्रदर्शनी 2026

पुस्तक प्रदर्शनी 2025

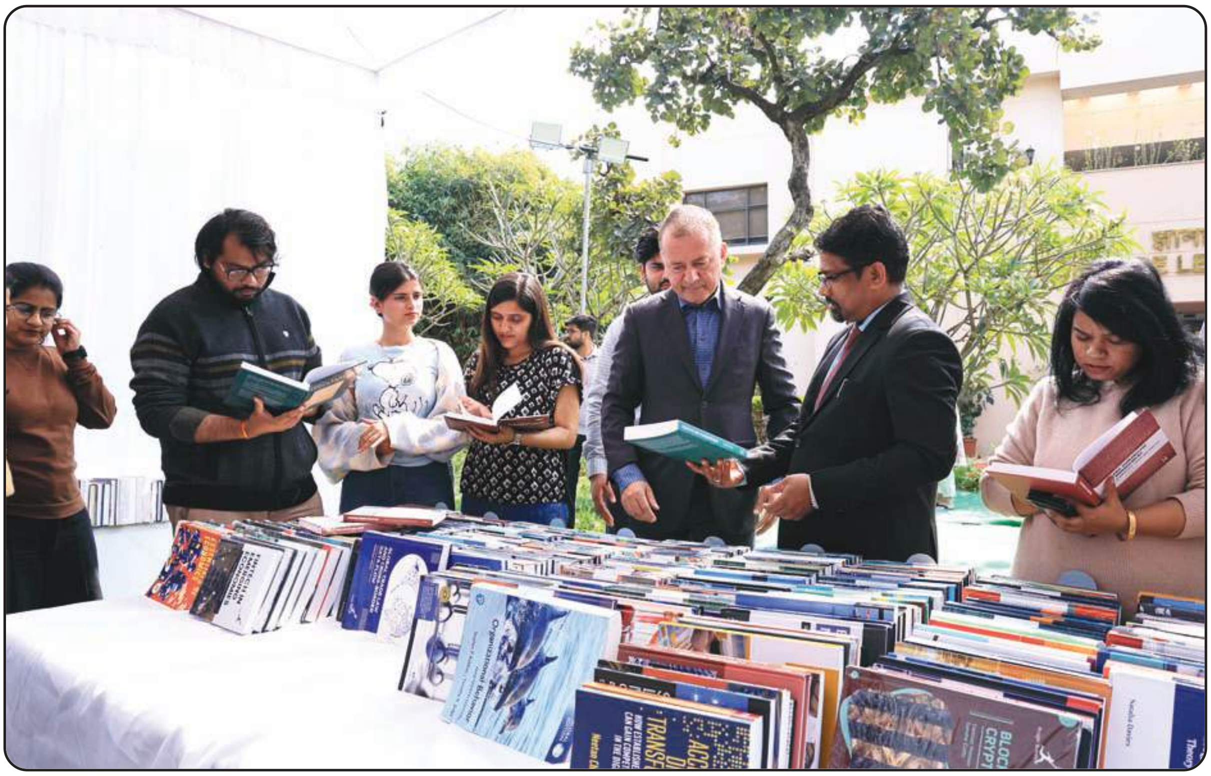

05 जनवरी 2026 राभाकास बैठक

प्रबोधन 2026

बस स्टाप का उद्घाटन 2026

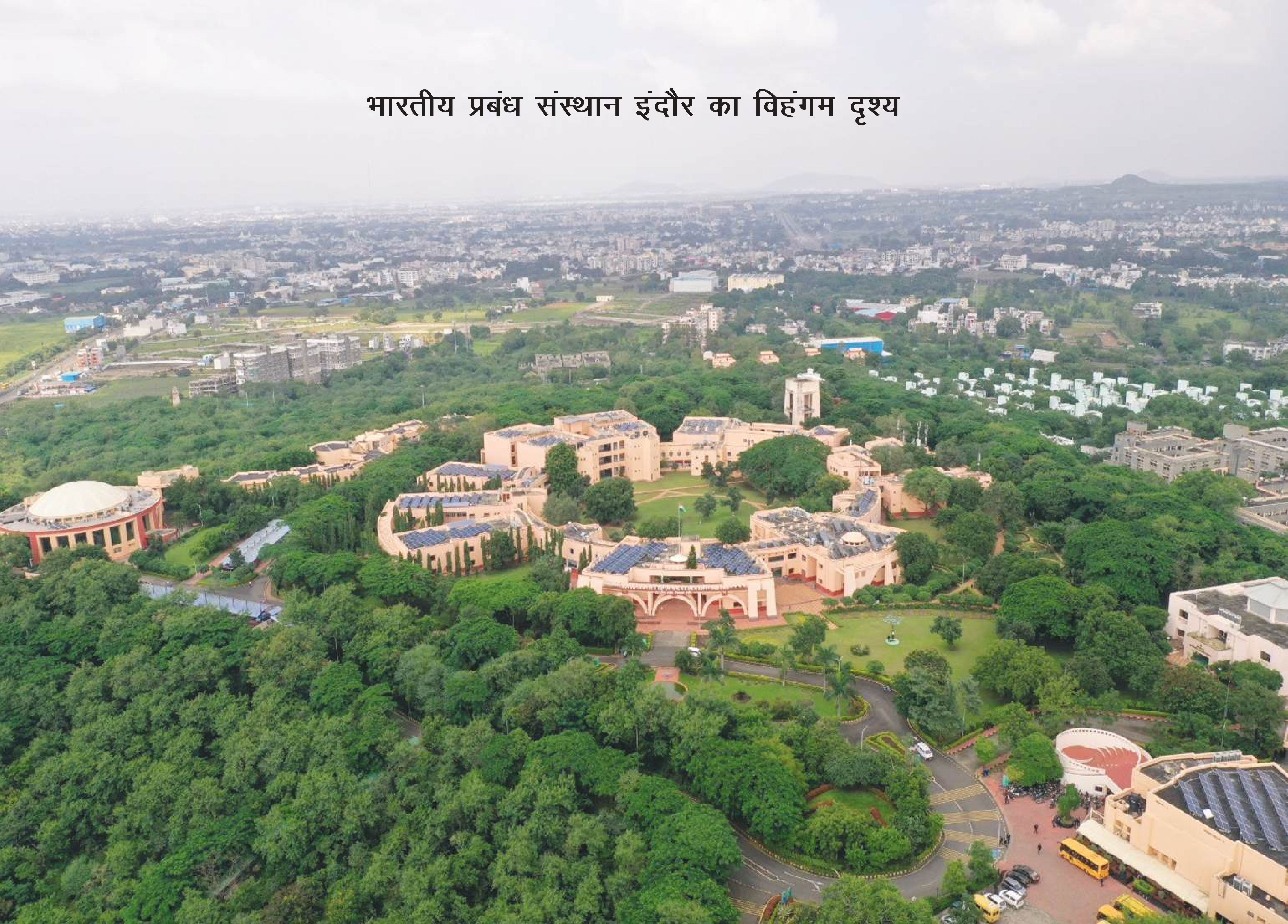

भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर का विहंगम दृश्य

संस्थान में स्वतंत्रता दिवस 2026 का आयोजन

संस्थान में कर्त्तव्य दिवस 2.0 का आयोजन (अगस्त 2026)

सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

भारतीय प्रबंध संस्थान इन्दौर

प्रबंध शिखर, राऊ – पीथमपुर रोड़, इन्दौर – 453556 (म.प्र.) भारत
फोन : +91 731 2439666, फैक्स : +91 731 2439800